भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि. न० P/RTK-४१ पृष्ठिसंख्या १,६६, ०८, २३, ०१२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक २ २८ नवम्बर, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

भारत की एकता और उसकी संस्कृति

(प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी भारत मानसिक दासता से ग्रस्त है। अंग्रेज, अंग्रेजी और अंग्रेजियत का प्रभाव पिछले ४४ वर्षों में निरन्तर बढ़ता गया है, यहां तक कि हमारे प्रबुद्ध से प्रबुद्ध और अनेक क्षेत्रों में अगुआ प्रगतिशील कहलवानेवाले व्यक्ति आज वही भाषा बोलते हैं जो अंग्रेज अपने राजभक्तों से बुलवाता रहा। वे बड़े विश्वास के साथ यह कहते हुए जरा संकोच नहीं करते कि भारत अनेक नस्लो, भाषाओं, राष्ट्रीयताओं, सम्प्रदायों तथा संस्कृतियों का गुच्छा मात्र है, और यह गुच्छा भी अंग्रेजी राज की देन है। अपने आपको "बुद्धिजीवी" कहनेवाला भारतीय यत्र-तत्र सर्वत्र यही राग अलापता रहता है। वह यह कहने में लेशमात्र भी लज्जा का अनुभव नही करता कि अंग्रेज के जाने के बाद देश की एकता पर प्रश्नचिह्न लगने आरम्भ होगए हैं, और यदि अंग्रेजी राजभाषा और सम्पर्क भाषा न रही होती तो देश अब तक कभी का टूट गया होता। हमारे "बुद्धिजीवी" की इस मानसिकता के लिए हमारी प्रचलित शिक्षा तो जिम्मेदार है ही, उससे बढ़कर जिम्मेदार है उसका निहित स्वार्थ, जो देश के जन साधारण के शोषण से ही सधता है तथा फलता फूलता है। इस मानसिकता के लोग ही तो अधिकतर शासन के कर्णधार हैं, फिर क्यो न लगे देश की एकता पर प्रश्न चिह्न और क्यों न उड़े उसकी संस्कृति की खिल्ली ?

जो एक राष्ट्र के रूप मे भारत का अस्तित्व जानते और मानते हैं, जो उसके हृदय की लयताल को पहचानते हैं उन "बुद्धिमान्" महामना युगद्रष्टाओं की वाणी के उद्गार ही हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।

भारत की जनता के हृदयतल मे होनेवाले संश्लेषण की ओर इंगित करते हुए सर्वप्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार से अलंकृत होनेवाले केरल के महाकवि शंकर कुरूप ने कहा था :—

"सुनता हूं अंग्रेजी साम्राज्य के शक्तिशाली हाथ ने ही भारत को राष्ट्र बना डाला। मैं इससे सहमत नहीं हो सकता। वस्तुतः भारत की प्रकृति को, भूगोल विज्ञान को, इतिहास एवं जीवनदर्शन को, जनता और दन्तकथाओं को सम्मिलित कर समग्रता और एकाग्रता के साथ महाभारत की रचना करनेवाले व्यासदेव ने ही अखण्ड भारत के संकल्प को प्राण, रूप एवं कर्मचेतना प्रदान की थी। वाल्मीकि और कालिदास का भी उस संश्लेषण में अन्यादृश हाथ है।"

"क्या एक राष्ट्र के रूप में संगठित भारत का कोई अस्तित्व नही है ? क्या भारत अलग-अलग प्रांतों का एक गुच्छामात्र है ? क्या भारत का अपना एक नाम नहीं है ? क्या केवल कुछ प्रांतीय भाषायें ही हैं ? क्या भारत के हृदय की अपनी विशेष लयताल नहीं ? उसी से अनुप्राणित होनेवाला एक भारतीय साहित्य नही ? आपस मे रक्त सम्बन्ध, हृदय स्पन्द मे समान लय और विकास के इतिहास मे समप्रवृत्तियां रखनेवाली हमारी भाषाओं और साहित्यो के एक "महातन्त्र" को वास्तविक रूप में परिणत करने योग्य शिलादृढ सांस्कृतिक आधार भूमि नही है ? क्यो ये प्रश्न अपने से नही पूछे जाते ? क्यों इनका वास्तविक समाधान नही ढूंढा जाता ? नवीन भारत की जनता की रागात्मक एकता का सम्पादन अथवा शैथिल्य का निराकरण अधिकांशतः इसी प्रश्न के उत्तर पर अवलम्बित है। हमारे राष्ट्र का अवचेतन यह है, हमारे दर्शन, भौतिक सत्यान्वेषण तथा जन-जीवन के प्रभात एवं संध्या की रागात्मक एकता वही है।"

रूस की घटनाओं का सहारा लेकर जो लोग देश को बांटने के स्वप्न लेते हैं और राष्ट्र की एकता मे विश्वास रखनेवाले लोग भी विचलित होकर शैथिल्य का शिकार होने लगे हैं, वे न तो रूस का इतिहास जानते हैं न भारत का। भारत कभी साम्राज्यवादी देश नहीं रहा, रूस नही टूट रहा रूस का साम्राज्यवाद टूट रहा है। भारत की संस्कृति से साम्राज्यवाद मेल नही खाता, इसीलिये महाराज रामचन्द्र ने लंका जीतकर रावण के भाई विभीषण को सौंप दी। भारत ने बंगला देश बंगालियों को सौंप दिया, यहां तक कि पाक-भारत युद्ध में जीते हुए कुछ इलाके भी पाकिस्तान को लौटा दिए। भारत और न ही उन्हें भारतीय संस्कृति क्या है इसकी पहचान है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते समय बंगला के महान् साहित्यकार बन्द्योपाध्याय ने "भारतीय संस्कृति" का स्वरूप स्पष्ट किया था—

"आसमुद्र हिमाचल परिव्याप्त भारतवर्ष के विभिन्न अंचलों की विभिन्न भाषायें हैं, विभिन्न आचार, विभिन्न आहार, विभिन्न परिच्छद, विभिन्न जलवायु मण्डल हैं। यह सत्य होते हुए भी इन विभिन्नताओं के बीच अखिल भारतीय इकाई में सारे भारत का हृदय गुंथा हुआ है। यही है "भारतीय संस्कृति"। जब-जब अवसर आया है, भारतीय जनमानस की चेतना में बसी इस चिरस्थायी "भारतीय संस्कृति" ने अपने निजी अखंड रूप में प्रकट होकर अखिल भारतीय अखण्डता को प्रमाणित किया है।

"जन साधारण तो आज भी इस रामायण महाभारत काल से उन दो महाकाव्यों के बन्धन में आबद्ध होकर, उत्तर में हिमाचल के शीर्ष देश से दक्षिण में कन्याकुमारिका के प्रांत बिन्दु तक तथा पश्चिम में गुजरात से पूर्व में मणिपुर तक विस्तृत भौगोलिक मृत्तिका पर एक गहरी एकता के बन्धन में आबद्ध होकर ध्रुवबोध को अनजाने ही अपने संस्कारों में पवित्र होमाग्नि की भांति स्थापित कर जीवन बिता रहे हैं। अंग-बंग-कलिंग के समुद्र सरिताओं के तट पर, पंजाब, बम्बई, गुजरात के प्रांतों में, एक ही जीवन अपनी रक्तधारा मे तथा हृदय के स्पन्दन में, एक निश्शब्द, मन्त्रोच्चारण करता चला आ रहा है।"

ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोह में "भारतीय संस्कृति" के उपासक डॉ० कुप्पल्लि वेंकटप्प पुटप्प ने घोषणा की —

'राज्य की दृष्टि से मैं कर्नाटक का हूं, भाषा की दृष्टि कन्नडिग हूं, परन्तु संस्कृति की राष्ट्र की दृष्टि से मैं भारतीय हूं। अविरोध भाव से भारतीयत्व की सेवा करने में ही कर्नाटकत्व अपने अस्तित्व की रक्षा कर पाता है। भारतीय मां है, कर्नाटक उसकी पुत्री है।"

असम के डॉ० वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य ने ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते हुए कहा था :—

"भले ही भारतीय साहित्य ने अनेक भाषाओं में अभिव्यक्ति पाई, मूलत: वह है एक ही। एक ऐसी इकाई जो जीवन के साथ आमूल जुड़ी हुई है, अविनश्वर है। एक स्वर निश्चित रूप से ऐसा है जो भारतीय भाषा-साहित्यों में सब कहीं व्याप्त है। वह स्वर है मानवीयता का, करुणाशीलता का, परस्पर सहिष्णुता का, और सार्विक समन्वय भाव का।"

उड़ीसा के महान् साहित्य समीक्षक श्री सच्चिदानन्द राउतराय ने ज्ञानपीठ पुरस्कार समर्पण के अवसर पर सम्बोधित किया था :—

"हमारे संविधान में निर्दिष्ट प्रत्येक भाषा का अपना विशिष्ट साहित्य है परन्तु प्रत्येक साहित्य में व्यक्त विचार, भाव और संवेदनायें समान हैं। समान मानवीय नियति की भावना तथा हमारी महान् सांस्कृतिक विरासत की जागरूकता इन समस्त साहित्यों में प्रवाहित होती है।"

महाराष्ट्र के महान् कवि और नाटककार श्री विष्णु वामन शिवाडकर ने १९८९ में ज्ञानपीठ पुरस्कार स्वीकार करते हुए अपने भाषण में भारत की सम्पर्क भाषा हिंदी तथा अंग्रेजी की स्थिति पर अपने विचार खुलकर दिये थे। उन्होंने कहा था :—

'मुझे अपनी मातृभाषा का दुरभिमान नहीं है, किन्तु अभिमान अवश्य है। राष्ट्रीय एकात्मता पर आघात करनेवाले भाषाभिमान को अवश्य ही निन्दनीय मानना चाहिये। राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधनेवाली सम्पर्क भाषा आवश्यक है जो हिन्दी है और हिन्दी ही हो सकती है।

अंग्रेजों का शासन गया, किन्तु अंग्रेजी का प्रभुत्व और अधिक अनुपात में फैल रहा है . हमारे मन में छाई हुई दासता अभी पूरी तरह निःशेष नहीं हुई है। जनता की समझ में न आनेवाली विदेशी भाषा में हमारे जनतन्त्र का चलना एक ऐसी अद्भुत घटना है जो सुसंस्कृत संसार में कहीं भी नहीं है।"

श्री शिवाडकर जी ने ठीक ही कहा है कि किसी भी सुसंस्कृत देश में विदेशी भाषा में (जिसे एक प्रतिशत लोग भी नहीं समझते हैं) राजकाज चलना एक अद्भुत घटना है। भारत ही एक निराला देश है जिसमें संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा का एक अक्षर जाने बिना भी शासन का बड़े से बड़ा पद प्राप्त किया जा सकता है, जबकि साधारण लिपिक भी विदेशी भाषा अंग्रेजी की परीक्षा पास किए बिना नियुक्त नहीं किया जा सकता। १९६३ में अंग्रेजी को तो अतिरिक्त भाषा के रूप में तब तक चलाने का निर्णय लिया गया था जब तक केवल मात्र तमिलनाडु भी हिंदी के लिए अपनी सहमति नहीं दे देता। इसका अर्थ तो केवल इतना ही था कि ऐसे प्रदेश में हिंदी के साथ साथ अंग्रेजी रूपांतर भी भेज दिया जाए। परन्तु अंग्रेजी के वर्चस्व के द्वारा शासन पर एकाधिकार जमाए हुये निहित स्वार्थों ने यही व्याख्या की और हिंदी के साथ सभी भारतीय भाषाओं को अपदस्थ कर दिया। यही नहीं बल्कि देश की भाषाओं में आपसी वैमनस्य पैदा कर दिया ताकि अंग्रेजी सदा-सदा के लिए देश के शासन और शिक्षा-संस्थाओं पर छाई रहे और उन्हें यह कहने का अवसर मिलता रहे कि अंग्रेजी ने ही देश के विभिन्न प्रांतों को मिला रखा है।

देश में प्रजातन्त्र की स्थापना के लिए आवश्यक है कि शिक्षा और शासन की भाषा भारत की ही जनभाषाएं अपने-अपने क्षेत्र में बने और सम्पर्क भाषा तथा केन्द्र की राजभाषा हिन्दी रहे। भारतीय भाषाओं को निकट लाने के लिए और सौमनस्यता उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि सब प्रदेशों में देश की सभी भाषाओं के अध्यापन का प्रबन्ध हो तथा सभी प्रदेशों के सचिवालयों में सभी भारतीय भाषाओं की अच्छी जानकारी रखनेवाले कुछ व्यक्तियों की उनके लिए सुरक्षित किए गए स्थानों पर नियुक्ति हो ताकि जिस किसी भाषा में भी किसी प्रदेश से कोई पत्र आए तो उसी भाषा में उसका उत्तर दिया जा सके। भारत के जिस प्रांत की भाषा कोई विद्यार्थी मातृभाषा के साथ-साथ दूसरी भाषा के रूप में पढ़े, उस भाषा को बोलने और व्यवहार में लाने के लिए छुट्टियों में वहां जाकर और परिवारों में रहकर अभ्यास करें। इस प्रकार सभी भाषाभाषी हजारों लाखों विद्यार्थी हर वर्ष एक-दूसरे के प्रदेश में जाएंगे तथा सभी भाषाओं के व्यवहार का अभ्यास करेंगे। इतनी बड़ी संख्या में विद्यार्थियों का आवागमन देश की सभी भाषाओं को तथा उनके बोलनेवालों को इतना गूंथ देगा कि उनके हृदयों को कोई फाड़ नहीं सकेगा।

भारत के पास न संसाधनों की कमी है, न प्रतिभा की। जिस दिन समस्त देशवासियों के मन गुंथ जाएंगे, उस दिन भावनात्मक एकता के थोथे नारों की जरूरत नहीं रहेगी और ना जरूरत रहेगी राष्ट्रीय एकता परिषद् के लचर-पचर ढांचे की, जिसमें भांति-भांति की बोली बोलनेवाले बैठे हों जो कभी किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुंच सकते। विदेशी भाषा, विदेशी तकनीक तथा विदेशी पूंजी को अपने देश में उतना ही स्थान देंगे, जितना अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए तथा अपने देश के विकास के लिए अतिआवश्यक हो। आवश्यकताएं कम करना और आत्मनिर्भरता हमारे लक्ष्य होने चाहिए। इसके लिए स्वदेशी भावना जन-जन के हृदय में पुनः जगानी पड़ेगी और अपने देश की परिस्थितियों को देखकर, ऐसी नीतियां बनानी होंगी जिनसे प्रत्येक भारतीय को सादा ही सही, गरिमा का जीवन जीने का अवसर मिल सके। सबको काम मिले और काम के बदले न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लायक साधन और वेतन मिले, महिलाओं और बालकों को भी गरिमा का जीवन जीने का अवसर मिले इसके लिए शराब, स्मैक आदि नशों से बचाकर गांधी जी के कथनानुसार ऐसे प्रबन्ध करने होंगे जिससे सब नागरिकों को ताजगी देनेवाले निर्दोष पेय और उतने ही निर्दोष मनोरंजन प्राप्त हो सकें।

भारत एक महान् देश है और इसकी संस्कृति भी महान् है जो मानवीय मूल्यों उदार चरित और संयम पर आधारित है। भारत के पास प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं और प्रतिभा भी। फिर भारत को दूसरों से लेना कम चाहिए और देना अधिक। संयम और आत्मगौरव उसके लिए आवश्यक है और वे हमको अपनी संस्कृति से प्राप्त हो सकते हैं। आज प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन के कारण पर्यावरण इतना प्रदूषित होता जारहा है कि स्वयं पृथ्वी लोक का अस्तित्व खतरे में है। विध्वंसकारी अस्त्रों की होड़ ने उस खतरे को और बढ़ा दिया है। संयम और न्यायबुद्धि के द्वारा जब तक धरती और इसके वासियों का शोषण और दोहन समाप्त नहीं होगा, तब तक यह खतरा बढ़ता ही जाएगा। भारत के मनीषियों ने शोषण मुक्त समाज की रचना करने का मार्ग दर्शाया था। उसी मार्ग का अवलम्बन विश्व में स्थायित्व और शांति प्रदान कर सकेगा।

—:०:—

चुनाव समाचार

आर्यसमाज गान्धरा जिला रोहतक

प्रधान—स्वामी धर्मानन्द | मंत्री—तेजपाल
कोषाध्यक्ष—ओमकुमार | पुस्तकालयाध्यक्ष—घनश्याम

आर्यसमाज डाहर जिला पानीपत

प्रधान—रामसिंह आर्य | मंत्री—राजवीरसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—अजमेरसिंह आर्य

आर्यसमाज मालसी जिला पानीपत

प्रधान—श्यामलाल आर्य | उपप्रधान—मंगतराम
मंत्री—राजेन्द्रसिंह | उपमंत्री—मा० मूर्तिसिंह
प्रचारमंत्री—सूरजमल | कोषाध्यक्ष—प्रेमसिंह
पुस्तकाध्यक्ष—तेजपाल

आर्यसमाज मोर माजरा जिला करनाल

प्रधान—प्रतापसिंह आर्य | उपप्रधान—विजयसिंह
मन्त्री—सुरजीतसिंह | उपमंत्री—ईश्वरसिंह
प्रचारमंत्री—सतवीरसिंह | कोषाध्यक्ष—पवनसिंह
पुस्तकालयाध्यक्ष—दलीपसिंह

डाक्टर जयपालसिंह—एक उभरता सवाल!

मैडिकल कालेज का लगभग दो वर्ष के थोडे से अन्तराल मे अपनी प्रशासनिक कार्यकुशलता एवम् दिन रात की मेहनत व ईमानदारी से कायाकल्प कर देने वाले तथा मरीजो की भलाई व सेवा मे समर्पित डा० जे० पी० सिंह को हरियाणा सरकार ने जिस तरह से निदेशक के पद से हटाया है, वह अपने आप मे एक घिनौनी घटना है तथा है सरकार की लोकतान्त्रिक प्रणाली पर एक प्रश्नचिन्ह ? समझ नही आता कि जब जनता ने सबसे बड़ी ताकत रूपी अपना मत अपने प्रतिनिधियो को देकर उन्हे अपना सर्वस्व मान लिया हो, तब भी अगर किसी प्रतिनिधि के दिमाग को चौधराहट दिखाने का कीडा चाट रहा हो तो उससे ज्यादा ओछापन क्या हो सकता है ? चौधराहट या राजशक्ति दिखाने की जरूरत ही कहा रह जाती है ? चाहिये तो यह कि लोगो ने सेवा का सुनहरा अवसर दिया है, उसका भरपूर लाभ उठाते हुए पूरी तरह से जनता की सेवा मे समर्पित हो जाएं। परन्तु यहा उलटा हो रहा है। सेवा करना तो दूर रहा, अगर कोई अन्य कर रहा हो तो उसे भी नही करने दे रहे। बडी विडम्बना है सरकार को जो राज-शक्ति लोगो ने दी है, उसका उपयोग उन्हीं के खिलाफ हो रहा है।

मैडकिल कालेज हरियाणा में मैडिकल शिक्षा व उच्च चिकित्सा का एकमात्र केन्द्र है। प्रदेश की आम जनता को इसकी सेवाओं का लाभ मिलना ही चाहिये। डा० सिंह के आने से पहले आम लोग मैडिकल कालेज को यमराज के दरबार के तुल्य मानते थे और कहते थे "मैडिकल मे जाने के बाद कोई वापस घर थोडा ही आता है। मैडिकल मे मरीज को तो कोई पूछता ही नही, कसाई खाना है, इत्यादि-इत्यादि"। परन्तु आज यही संस्था डा० सिह की वजह से उपरोक्त भावना को बदलकर लोगो की आशाओ का केन्द्र बन चुकी है। यही कारण है कि जनता आज जे पी. सिंह के लिए तडप रही है। लोकतन्त्र मे सरकार को चाहिये ही नही बल्कि उसका कर्त्तव्य भी है कि वह लोगों की भावना की कदर करे। कुछ अखबारो मे छपा है कि सरकार ने यह कार्यवाही डा० सिंह को जलील करने के उद्देश्य से की है। परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है। डा०सिंह का लोगो मे सम्मान और ज्यादा बढा है। वास्तव मे जलील तो जनता हो रही है। लोगों द्वारा चुनी सरकार उन्ही के हितो पर चोट कर रही है। जनता अपने किये पर पछता रही है।

आम लोगो के दिलो पर राज करने वाले डा० जे. पी. सिंह मैडिकल कालेज के लोगो मे विवादास्पद व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्हें हटाया जाने की खबर सुनकर कई लोगों की बाँछें खिल गई थी। इतनी खुशी का कारण पूछने पर उन्होने बताया, "धन्धा चौपट पडा था। चाकू छुरो की धार पर भी जंग लग चुका है। मरीजों को फंसाने की कला भी भूलते जा रहे थे। खुश्की आई हुई थी। सरकार ने हमारी सुन ली। अब पाँचो उगलियाँ घी मे होंगी।" फिर एक अन्य ने कहा कि यह तो भूल जाओ कि सरकार ने हमारे धन्धे के लिए डा० सिंह को हटाया है। सरकार के कुछ प्रतिनिधि भी तो मैडिकल के बजट तथा डाक्टरों व अन्यो की लूट के बडे हिस्से पर हाथ साफ करते थे, जो कि डा० सिंह की वजह से बन्द हो चुका था। बस उसी मुह लगे खून की ललक मे उन नेताओ ने जोर देकर सरकार से ऐसा करवाया है। कारण कुछ भी हो, जो कुछ भी हुआ है, मैडिकल कालेज के अहित मे ही गया है।

वैसे तो जो व्यक्ति किसी की नेक व सही बात का समर्थक नहीं होता, उसे किसी की बुराई व आलोचना करने का भी कोई हक नहीं होता। परन्तु फिर भी कुछ बातें डा० सिंह के बारे मे सुनने मे आई हैं, उनकी चर्चा भी जरूरी है। आलोचको की शिकायतें हैं कि डा० सिंह एक तरफ तो सिद्धान्त की बात करते हैं और दूसरी तरफ मनमानी करके अपने चमचो को हर अनुचित लाभ पहुचाते हैं। व्यवहार मे कठोरता, विद्यार्थियो के दाखले व परीक्षा मे वैरी व अनुचित मापदण्ड, कुछ वर्गों के कुछ लोगो में भय व आतंक पैदा करना, नोकरी व दाखले आदि में हरियाणा व इस संस्था के लोगों की बजाय बाहर के लोगो को प्राथमिकता देना, सहयोगी व सहायकों के तौर पर केवल यू०पी० के भईयन को ही महत्त्व देना, मजूल के पक्के परन्तु अक्ल के अन्धे व अव्यावहारिक लोगो को अपने दरबारी सलाहकार बनाना, मैडिकल को डाक्टरो से खाली कर देने के कगार पर पहुचा देना तथा नये डाक्टरों की भर्ती न करना, यहाँ पढ रहे विद्यार्थियो को एक स्वस्थ मानसिकता से पनपने का वातावरण न देकर उन्हे दब्बू, घटिया, स्वार्थी व डरपोक बनाने की मैडिकल की पुरानी प्रथा को बढावा देना, इत्यादि। उपरोक्त बातो मे कितनी सच्चाई है यह कहना तो मुश्किल है। परन्तु फिर भी अगर डा० सिंह की मरीजो के प्रति नेक नीयत को ध्यान मे रखकर देखा जाये तो कुछ शिकायतें तो अनदेखी की जा सकती हैं। कुछेक शिकायतो के कुछ विशेष कारण रहे है। शुरू मे डाक्टर सिंह चमचो को घास डालने वाले नजर नही आते थे। पर उनके यहा आते ही उन्हें एक वर्ग विशेष का नाम देकर दूसरे वर्ग के कुछ लोगो द्वारा उनकी हर सही बात का विरोध करके उनकी यह मजबूरी बनाई गई। इस विरोध के कारण ही कुछ स्वार्थी चमचो को उनके करीब आने का मौका मिला तथा उनसे अनुचित लाभ लेने मे सफल रहे। वैसे तो डा० सिंह स्वयं भी जानते हैं कि स्वार्थी चमचे लालच के टुकडे मिलते रहने तक ही उनके साथ हैं, पर अनुचित विरोध को दबाने के लिए अनुचित ढंग अपनाना उनकी मजबूरी बन गई थी। कई बार यह मजबूरी उनके व्यवहार मे भी झलकने लगती थी, जो उनके लिए बिल्कुल अशोभनीय थी। चमचों को खुश रखने के लिए कभी कभी कुछ वरिष्ठ प्रोफेसरो के साथ भी अभद्र व्यवहार तक कर देते थे जो अवांछित होने के साथ-साथ असहनीय भी होता था। ऐसी उनसे अपेक्षा नही थी। बडो को कभी भी अपने से छोटों के साथ बदले की भावना नही रखनी चाहिये। उन्हे तो छोटों के साथ एक आदर्श व्यवहार ही करना चाहिये ताकि वे यह अमूल्य धरोहर विरासत मे पाने का गर्व करने का अवसर पा सकें तथा वे भी इसे अगली पीढी को विरासत मे दे सकें।

मैडिकल मे विद्यार्थियो के लिए एक स्वस्थ वातावरण, जो एक मूलभूत आवश्यकता थी, देने के लिए भी डा० सिंह द्वारा कोई प्रयास नही किया गया बल्कि उन्हे उनके प्रतिनिधियो को दबाने व कहर ढाने की ही धमकियाँ दी गई जोकि एक अच्छी परम्परा नही थी। डा० सिंह के सहयोगी व सहायकों का भी इस दिशा मे नकारात्मक रोल ही रहा है। वैसे एक ही इन्सान से सभी अच्छी ही अच्छी बातो की अपेक्षा की जाए, यह भी उचित नही है। जनता के प्रति डा० सिंह मे जो सेवाभाव है, वह अनुकरणीय है तथा मैडिकल कालेज को लोगो के दिलो मे जो सम्मान दिलाया है, उसके लिए सभी डाक्टर उनके आभारी हैं।

डा० जे. पी. सिंह मानव सेवा के साथ-साथ प्रकृति के भी बडे पुजारी हैं। मैडिकल कालेज की वीरान, उबड-खाबड रेतीली, नमी भूमि को लहलहाते पेडो, हरी भरी घास व रग-बिरंगे फूलों के सुगन्धित व सुन्दर आँचल से दुल्हन की तरह सजा दिया है। डा० सिंह को हटाये जाने का जितना गम आज इस दुल्हन सी सजी भूमि को है, उसको शायद कोई नही जानता।

सरकार से हमारी प्रार्थना है कि जनहित को प्राथमिकता देते हुए तथा इसे व्यक्तिगत अहंकार का विषय न बनाते हुए, डा० सिंह को तुरन्त निदेशक बनाकर लोगो की भावनाओ की कदर करे। ❀

(हरयाणा डॉक्टर्ज वाइस' मे साभार)

१४५ परिवारों के ५०० से अधिक ईसाई वैदिक "हिन्दू" धर्म में

आर्यकुमार सभा मुडागाव "रायगढ़" के वार्षिक महोत्सव पर दीपावली के पावन पर्व पर ५,६ नवम्बर को आसपास के ५०० से अधिक ईसाई वैदिक-धर्म मे प्रविष्ट हुए। शुद्ध हुए लोगो को श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती "प्रधान" उत्कल आर्यप्रतिनिधि सभा ने नवीन वस्त्र प्रदान किये एव उन्हे आशीर्वाद दिया। श्री स्वामी जी का आशीर्वाद एव प्रेरणा इस क्षेत्र को निरन्तर मिल रही है।

इस अवसर पर आर्यवीर दल के शिविर का सचालन आयोजन भी था। इसका सचालन श्री अरुणकुमार एव श्री जनकराम जी ने किया। दोनो दिन श्री स्वामी परमानन्द जी का मधुर उपदेश होता रहा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे आर्यकुमार सभा के प्रधान श्री कपिलदेव जी, मन्त्री श्री बसन्तकुमार जी एवं उनके सहयोगियो ने अनथक परिश्रम किया।

—विशिकेसन शास्त्री
उत्कल आर्यप्रतिनिधि सभा

गायत्री

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष, वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

गतांक से आगे—

इतना ध्यान अवश्य रहे कि जाप अर्थ-विचारपूर्वक होना चाहिये। योगदर्शन के शब्दों मे "तज्जपस्तदर्थभावनम्" अर्थात् जो जाप उसके अर्थ के अनुसार भावनाये बनाये। यदि अर्थ का पता नही होगा, तो उसके अनुसार भावनाये बनगी ही नही। अर्थ का पता होगा, उस पर विचार होगा, तभी भावनाये बनेगी। अर्थ को जाने बिना विचार सम्भव नही और ऐसा किये बिना किया जाने वाला जाप तोता-रटन्त ही बनकर रह जाता है। मन भी तब तक नही लगेगा, जब तक अर्थ ज्ञात नहीं होगा और उस अर्थ का मन्त्र जाप के साथ स्मरण व विचार नही होगा। मन्त्र के साथ-साथ अर्थ का चलना अनिवार्य है। यह प्रकार कुछ काल तक ही अपनाना पड़ता है। कुछ दिनों के बाद ऐसी स्थिति बन जाती है कि उपासना के लिये बैठकर ज्यों ही मन्त्र का जाप प्रारम्भ किया, त्यो ही अर्थ भी ध्यान में आने लगा। कुछ और समय बीतने पर इतना अभ्यास हो जाता है कि मन्त्रार्थ पूर्णतया हृदयङ्गम् हो जाता है तथा मन्त्र के शब्दों में से ही अर्थ प्रगट होता प्रतीत होने लगता है अथवा यह कहना चाहिये कि मन्त्र के शब्द ही अर्थ रूप दिखाई देने लगते हैं। इस। आगे की स्थिति तन्मयता की होती है, जिसे ध्याता, ध्यान और ध्येय का एक हो जाना कहते हैं, यही समाधि की अवस्था है। प्रारम्भ में अवश्य अड़चन आती है। अड़चन है ध्यान के समय मन का इधर-उधर भागना, मनमें विविध विचारों का आते रहना—सामान्यतया ऐसा होता ही है। मनमें जो विचार घर किये हुए हैं, साधक जिनका अभ्यस्त होता है, वह तो एक के बाद एक आने ही ठहरे। रिक्त आसन पर प्रत्येक आकर बैठना चाहता है किन्तु जब आसन रिक्त न हो, जब स्थान पहले से ही भरा हुआ हो तो वहा किसी के आने का प्रश्न ही नही। जब तक हृदयासन रिक्त रहेगा, यही दशा रहेगी। परन्तु ज्यो-ज्यों जगत् पिता और जगत्पति की ओर प्रवृत्ति होती जायेगी, त्यों-त्यो उन विचारों का आना कम होता जायेगा।

मन को स्थिर करने के लिए प्राणायाम अमोघ अस्त्र है। जब मन भागे तभी प्राणायाम का प्रयोग किया जाना चाहिये। ध्यान के लिये प्रारम्भ में ही प्राणायाम का किया जाना आवश्यक है किन्तु मध्य में भी जब मन इधर-उधर भागने लगे, तभी प्राणायाम किया जाना चाहिये। प्राणायाम का अच्छा अभ्यास है तो प्राणायाम करते ही मन स्थिर हो जायेगा। ध्यान-उपासना बिना प्राणायाम के भी को जा सकती है किन्तु उससे समाधि तक पहुंचने को आशा नही करनी चाहिए।

ध्यान की प्रवृत्ति को दृढ बनाने, पुराने सांसारिक विषयों के विचारों के निराकरण और परमात्मा की प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा जगाने के लिये उपनिषदादि अध्यात्मग्रन्थों का अध्ययन और चिंतन भी अत्यन्त आवश्यक और परम सहायक है। जितना चिन्तन होगा, उतनी ही ध्यान में एकाग्रता बढ़ेगी और उतनी ही शीघ्र समाधि में सफलता होगी। किसी-किसी साधक को जीवनभर सफलता नहीं मिलती। परन्तु इससे उकता कर और निराश होकर ध्यान का अभ्यास ही छोड़ बैठना भूल है। मन न लगे, न सही—रुचि तो है, प्रवृत्ति तो बन रही है। यही प्रवृत्ति कारण होती है, जब किसी को अल्पायु में ही ध्यान की रुचि, वैराग्य और समाधि की प्राप्ति होती है। इस कारण से अभ्यास और प्रयत्न छोड देना ठीक नहीं। यही तो जीवन नहीं है, कलेवर ही तो बदलना होता है। यही अभ्यास और यही प्रवृत्ति अगले जन्म में आध्यात्मिक सफलता के आधार और भूमिका बनेगे। एतदर्थ नैराश्य को निकट नहीं आने देना चाहिए। अपितु निरन्तर लगे रहना चाहिए।

ध्यान के लिए व्याहृति युक्त गायत्री का ही जाप होना चाहिये। तीन वेदों में गायत्री मन्त्र चार स्थलों पर आया है। केवल यजुर्वेद के ३६वें अध्याय में ही इसके साथ तीन व्याहृतियां लगी हुई हैं। जाप में इसका विशेष महत्व है और गायत्री के अर्थों में भी इन व्याहृतियों से विशेषता आ जाती है। गायत्री छन्द तो "तत्सवितुर्वरेण्यम्" से प्रारम्भ होता है किन्तु व्याहृति सहित पूरा मन्त्र इस प्रकार है—

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। यजुर्वेद ३६/३

अर्थ—(ओ३म्) सृष्टि का उत्पन्न, संचालन और प्रलय करने वाला परमात्मा समस्त प्राणी-अप्राणी जगत् का (भूः) जीवन आधार है (भुवः) दुख विनाशक और (स्वः) आनन्द स्वरूप है। हम (तत्) उस (सवितु देवस्य) सर्वोत्पादक देव का (वरेण्यम्) वरण करने योग्य (भर्गः) तेज स्वरूप (धीमहि) धारण करें। (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे, प्रेरणा करने वाला है।

गायत्री उपासना का लाभ

गायत्री-उपासना का वास्तविक लाभ है परमपिता परमात्मा में श्रद्धा की उत्पत्ति और उसकी प्राप्ति के लिए उत्कटता का उत्पन्न हो जाना है। इससे साधक सांसारिक विषय-भोगों के बन्धनों से मुक्त होकर इन्हें केवल शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये भोगता है—स्वाद और सजावट के लिए नहीं। मानव जीवन का चरम लक्ष्य और जीवन की परम गति मोक्ष प्राप्ति ही है और साधक गायत्री उपासना से नित्य निरन्तर उसी ओर प्रगति करता है।

एक समय वह भी आता है, जब वह साक्षात् करता है अर्थात् उस परम देव की निकटता तन्मयता में प्राप्त करता है। बस, यही समाधि है, जहां साधक "स्व" को भूलकर तथा यह विस्मृत हो जाने से कि वह ध्यान कर रहा है, अपने लक्ष्य अर्थात् उस परमपिता के तेजोमय (भर्ग) स्वरूप में अवस्थित हो जाता है।

गायत्री जाप से पाप विमोचन

गायत्री जाप से पाप विमोचन तो होता है किन्तु पाप के फलों का विमोचन नहीं होता। अभिप्राय यह है कि जीवन की आवश्यकताओं के लिए आवश्यक सांसारिक साधनों का उपयोग करने वाले को पापकर्म की प्रवृत्ति रहती नहीं। उसकी प्रवृत्ति तो उस सर्वोत्पादक देव के तेजस्वरूप में ही होती है और जिसकी प्रवृत्ति परमात्मा के तेजस्वरूप में, उसकी प्राप्ति में हो जाती है, उससे फिर पाप-कर्म नहीं होता तथा जब पाप-कर्म नही होता तो फिर आगे पापों के फल भोगने का प्रश्न ही उपस्थित नही होता। इस प्रकार पाप विमोचन हो जाने से पापों के फलों से भी छुटकारा हो जाता है। परन्त उस परमदेव को साक्षात् करने तथा उससे पहले मनसा-वाचा-कर्मणा जब से वह गायत्री साधना में लग चुका है, उससे पहले जो पाप-कर्म वह कर चुका है अथवा जो कोई पूर्व जन्म का भोग शेष है, वह तो अवश्य ही भोगना पड़ेगा, उससे कदापि छुटकारा नही हो सकता।

गायत्री-जाप ही क्यों ?

गायत्री-जाप की अनिवार्यता नहीं है। हां, आवश्यकता है। जाप केवल प्रणव अर्थात् "ओ३म्" का भी किया जा सकता है किन्तु प्रारम्भ में केवल "ओ३म्" के जाप में मन लगना गायत्री जाप की अपेक्षा कठिन है। इसका कारण है "ओ३म्" की अपेक्षा गायत्री की भाषा की अधिकता। फिर ओ३म् का विनियोग गायत्री-जाप में है ही।

एक ओर केवल ओ३म् और दूसरी ओर ओ३म् के साथ गायत्री भी। वैसे भी स्थूल और सूक्ष्म का भेद—गायत्री स्थूल और सूक्ष्म। जैसे प्रारम्भ में बालक को स्थूल अक्षर पढ़ाये जाते हैं, बाद में वह समाचार-पत्रों के सूक्ष्माकार अक्षर भी पढ़ने लगता है। इसी प्रकार प्ररम्भ में गायत्री मन्त्र का जाप साधक के लिए सरल होने से अधिक उपयोगी है और गायत्री के जाप का कहो, गायत्री-उपासना का कहो अथवा गायत्री मन्त्र के द्वारा परमात्मा के ध्यान करने का कहो—यही महत्व है। वास्तविकता तो यह है कि गायत्री जाप की भी अन्तिम परिणति "ओ३म्" में ही है।

ओ३म् के १९ अर्थों में एक अर्थ "द्युति" भी है। गायत्री का "भर्गः" ओ३म् का "द्युतिः" ही है। यही कारण है कि योगदर्शन में प्रणव का वर्णन है। प्रणव अर्थात् ओ३म्। परन्तु ऐसे साधक अपवाद ही होते हैं, जो सीधे ओ३म् के जाप में सफलता प्राप्त कर लें अत एव कम से कम प्रारम्भ में तो गायत्री का जाप ही उपयुक्त है।

अंग्रेजी के प्रयोग पर प्रतिबंध और हमारा कर्त्तव्य

समाचारपत्रों में छपी सूचना के अनुसार उत्तरप्रदेश सरकार के वित्त एवं सिचाई विभाग के मन्त्री श्री आर० गुप्ता ने कड़े आदेश दिए हैं कि सभी सरकारी कार्य केवल हिन्दी में किया जाए और अंग्रेजी का प्रयोग न किया जाए। उन्होंने मुख्य सचिव को कहा है कि अभी भी अनेक कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रयोग होरहा है जिसे रोका जाना चाहिए। तदनुसार सभी सचिवों, विभागाध्यक्षों, कार्यालय प्रमुखों, आयुक्तों और जिला अधिकारियों तथा सार्वजनिक उपक्रमों के अध्यक्षों आदि को पुनः आदेश दे दिए गए हैं कि वे भविष्य में केवल हिन्दी का प्रयोग करें। यदि अंग्रेजी का प्रयोग किया गया तो उनके विरुद्ध विभागीय कार्यवाही की जायेगी।

कुछ समय पूर्व ऐसे ही कड़े आदेश हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री ने भी जारी किये थे। समय-समय पर अन्य हिन्दीभाषी राज्यों के भी ऐसे ही आदेश निकलते रहे हैं। फिर भी इन आदेशों का उल्लंघन होता रहता है। अतः अनुरोध है कि जब-जब भी आदेशों के उल्लंघन के उदाहरण दृष्टि में आयें तो सर्वंधित कार्यालयों के अध्यक्षों को पत्र लिखे जायें। यदि फिर भी सुधार न हो तो संबंधित राज्य के मुख्य-मन्त्री को पत्र भिजवाये जायें ताकि दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा सके।

केन्द्रीय सरकार की भी यह नीति है कि उसके हिन्दीभाषी क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों में प्रायः सभी कार्य हिन्दी में हों। ऐसी स्थिति में हम सबका कर्त्तव्य यह है कि राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार हिन्दी में ही करें। यह भी आवश्यक है कि हम सब अपने व्यावसायिक और अन्य निजी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करें। उद्योग और व्यापारिक प्रतिष्ठान अपने चेक हिन्दी में लिखें, प्राप्ति-पत्र (रसीदें) हिन्दी में छपवायें, प्रचार सामग्री हिन्दी में बनवायें और लेखा आदि हिन्दी में ही रखें। इस प्रकार जनता और सरकार के परस्पर के सहयोग से हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा। सभी स्वाधीन देश अपनी-अपनी भाषा में अपना सरकारी और निजी कार्य करते हैं तब भारत ही अपवाद क्यों ?

—जगन्नाथ
संयोजक, राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
एक्स. वाई.-६८, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-२३

—:०:—

आवश्यक बैठक

वेदप्रचार मण्डल जिला जींद की एक आवश्यक बैठक आर्य-समाज जींद शहर में रविवार १-१२-९१ को प्रातः १० : ३० बजे होगी।

प्रो० ओमकुमार आर्य
सहसंयोजक

ईश्वर मुझे शक्ति दे! "आर्यसमाज का चौकीदार बन सकूं"

श्री वीरेन्द्र जी ने 'आर्य मर्यादा' १७/२० अक्तूबर, १९९१ में चौकीदार बनने की चर्चा की है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि मुझे आर्यसमाज का चौकीदार बनने की क्षमता प्रदान करे। यदि आर्यसमाज के चौकीदार सजग होते, तो पंजाब प्रांत जो आर्यसमाज का शक्तिशाली केन्द्र रहा था, उसकी यह दुर्गति न होती। श्री योगेन्द्र पाल सेठ पजाब के वरिष्ठ आर्य नेता अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक १५ अक्तूबर, १९९१ मे लिखते हैं कि "सन् १९७३ में पंजाब में १७५ आर्य-समाजे थी, आज लगभग ५० रह गई हैं। इसी प्रकार सभा के साथ ६०, शिक्षण सस्थाए थी वे २५-३० रह गई हैं।" सजग चौकीदार होते तो श्री वीरेन्द्र जी गुरुकुल कांगडी हरिद्वार की डेढ करोड की भूमि बेचकर रुपया जालन्धर न ले जाते, गुरुकुल कांगडी हरिद्वार का आयुर्वेद कालेज कृषि कालेज दुरावस्था के कारण सरकार के हाथों में न जाते, गुरुकुल परिसर में पी०ए०सी० का डेरा न डलता। भूमि के विक्रय से प्राप्त धनराशि से गुरुकुल हरिद्वार की स्थिति को उच्चतम कोटि का बनाते। बहिन दमयन्ती कपूर की प्रार्थना पर कन्या गुरुकुल देहरादून भवन के जीर्णोद्धार के लिए राशि सहर्ष दे देते। उनको यह नहीं कहते कि विद्या सभा के प्रधान अब ये हैं (सूर्यदेव) इनसे रुपया मांगो। बहिन दमयन्ती कपूर कोई याचक नहीं है, उनका पूर्ण अधिकार है।

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार जिसे अब श्री वीरेन्द्र जी तथाकथित कहते हैं, इस सभा का मैं लगभग डेढ वर्ष से प्रधान बना हूं। इससे पूर्व १९८५ तक इनका ही शासन था। श्री वीरेन्द्र जी इसी सभा के १९८६ से १९८९ तक प्रधान रहे। इसी अवधि के मध्य आर्य-समाज दीवान हाल, दिल्ली में इसी विद्या सभा की एक बैठक हुई जिसमें यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि भविष्य में गुरुकुल कांगड़ी की जमीने नहीं बेची जायेंगी, परन्तु इन्होंने फैसले की स्याही भी न सूखने दी और गुकुल कांगडी फार्मेसी की करोडों की भूमि कुल ३५ लाख में बेच दी। जिस पर हमनें स्थगन आदेश प्राप्त किया। डेढ़ करोड़ रुपये में से ५ लाख रुपये पुण्य भूमि पर खच करके मियां मिट्ठू बन रहे हैं। अब मैंने सुना है कि पुण्य भूमि को पर्यटक आकर्षण केन्द्र बनाना चाहते हैं। पर्यटकों का आकर्षण कैसे होता है यह सभी भली-भांति जानते हैं। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? श्री वीरेन्द्र जी के शासनकाल में बेची गई भूमि पर पंचसितारा होटल चल चल रहे हैं, उनमें क्या कुछ नही होता, सर्वविदित है।

शैक्षणिक मनोरजन केन्द्र को अश्लीलता की दृष्टि से देखते हैं। मेरी समझ में नही आता 'अप्पू घर' बनाने की योजना इंका के एक नेता के साथ श्री वीरेन्द्र जी का भी थी आप उसमें असफल होगये तो आलोचना करने लगे। श्री वीरेन्द्र जी ने लेख में लिखा है—यह पढकर उन्हें (सूर्यदेव) नीद नही आयेगी। मैंने तो पढा है कि सन्त पुरुषों की वाणी पढकर या सुनकर आनन्द की प्राप्ति होती है। सन्त कबीर दास जी लिखते हैं—

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपहू शीतल होय॥

विद्वान् पाठक ही इस गूढ तत्त्व को समझ सकते हैं। जमीन बेचेंगे श्री वीरेन्द्र जी और नींद मुझे नही आयेगी।

श्री वीरेन्द्र जी का जीवन सघर्षमय रहा है। वरिष्ठ पत्रकार हैं। आर्यसमाज के जुझारू, खाडकू नेता हैं। आपने आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी रामेश्वरानन्द जी महाराज जिन्होंने पजाब हिन्दी रक्षा आदोलन में जान की बाजी लगा दी, उनका डटकर चुनाव में मुकाबला किया, यह बात दूसरी है कि आप विजयी न होसके। पं० मुरारीलाल शर्मा, श्री रघुवीरसिह शास्त्री, श्री पृथ्वीसिह आजाद, श्री योगेन्द्रपाल सेठ, श्री ऋषिपाल एडवोकेट वर्तमान में आपकी सभा के मन्त्री श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट ने अनेकों व्यक्तियों से लोहा लिया। आप अपने किसी 'दामाद' अथवा पुत्र को तो आर्यसमाज के कार्य के लिए आकर्षित नही कर सके, किन्तु एक कार्य चाहें तो कर सकते हैं। महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार सन्यास ग्रहण कर ले तो आपकी योग्यता व कर्मठता का आयसमाज को लाभ मिल सकता है। किन्तु मुझे आशा नहीं है, क्योंकि आप तो अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से कुछ अंश निकालने के पक्षधर हैं। इसके अतिरिक्त आपने बड़े जोरदार शब्दों में इसी अंक में लिखा है कि हम गुरुकुल कांगडी हरिद्वार स्थित और भी भूमि बेचेंगे। इसके लिए मेरा सुझाव है कि भूमि बेचने का धन्धा ही करना है तो धूम-धाम से भूमि विक्रेता का साइन बोर्ड लगाकर कीजिये। साथ ही विनम्र निवेदन करना चाहता हूं कि इस राशि की जानकारी सभी साथियों को अवश्य दे दे, कहीं आपकी अनुपस्थित में आर्यसमाज को इस राशि से हाथ न धोना पड़े।

आर्यसमाज के कुछ हितैषियों ने मुझसे कहा है कि आप 'आर्य सन्देश' साप्ताहिक में श्री वीरेन्द्र जी की बातों का उल्लेख व चर्चा न करें, इससे पत्र की गरिमा को ठेस पहुँचती है। आर्यसमाज के समाचार पत्र समाज प्रचार व प्रसार के लिए हैं। श्री वीरेन्द्र जी लिखते हैं तो उनका तो यह व्यवसाय है। आपके लिए दल-दल में पड़ना श्रेयस्कर नहीं है।

—सूर्यदेव

बच्चों के लिए रोगोपचार

ले० स्वामी सरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली सभा) १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

तुतलापन

मुनी फिटकरी की डली, मुख में रखकर सोये।
एक महीने तक रखे, तुतलापन नहीं होवे॥

(२)

लेकर गिरी बदाम की, काली मिर्च मिलाय।
पानी के संग पीसकर, चटनी देओ चटाय॥

(३)

पीपल सेंधा नमक लो, अकरकरा और सोंठ।
इन सबको चूरण करो, मधु साथ लो घोट॥
एक एक माशा की गोली, लीजे आप बनाय।
मुख में रखकर चूसिये, तुतलापन मिट जाय॥
सत्यानाशी पेड़ का, ताजा दुग्ध निकाल।
रहो जीभ पर लगाते, तुतलाये नहीं बाल॥

सूखा रोग

हरी गिलोय के अर्क में, रंग दो वस्त्र तमाम।
बच्चे को पहनाइये, हो जाये आराम॥

सूखा रोग पर

ककरौंधा को पीसकर, टिकिया लेओ बनाय।
एक तोलाभर बीच में, गुड़ को रखो छिपाय॥
गुड़ को रखो छिपाय, बांध तालू पर दीजे।
पन्द्रह दिन तक सुबह शाम ताजा ही लीजे॥
ईश कृपा से शीघ्र ही, रोग होयगा नष्ट।
हृष्ट पुष्ट हो जायेगा, मिट जाये सब कष्ट॥

हरे पीले दस्त

घिसकर मां के दुग्ध में, जायफल देओ चटाय।
शीत ऋतु में यह दवा, दे सब रोग भगाय॥

हिचकियां

नागर मोथा मुरहटी, सोंठ व हीरा हींग।
गेरु मिला समभाग लो, साथ काकड़ा सींग॥
करके चूरण महीन, शहद के साथ चटाओ।
हिचकी खांसी श्वास, रोग सब दूर भगाओ॥

सायणाचार्य का मन्त्रार्थ बुद्धि विरुद्ध

(स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, गुरुकुल कालवा)

वैशेषिक दर्शन के कर्त्ता प्रसिद्ध महर्षि कणाद कहते हैं—

बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे ॥ वैशेषिक ६।१।१॥

"वेदों की वाक्य रचना बुद्धिपूर्वक है।" अतः अधोलिखित मन्त्र का सायणाचार्य कृत अर्थ बुद्धिविरुद्ध होने से वेद विरुद्ध है। वह मन्त्र इस प्रकार है—

निश्चर्मण ऋभवो गामपिंशत
संवत्सेनासृजता मातरं पुनः।
सौधन्वनासः स्वपस्यया नरो
जिव्री युवाना पितरा कृणोतन ॥ ऋग्वेद १।११०।८॥

सायणाचार्य इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार करते हैं—

पुरा कस्यचिदृषेर्धेनुर्मृता। स ऋषिस्तस्या धेनोर्वत्सं दृष्ट्वा ऋभून् तुष्टाव। ऋभवस्तत्सदृशीमन्यां धेनुं कृत्वा तदीयेन चर्मणा तेन वत्सेन समयोजयन्, इत्ययमर्थः पूर्वार्धेन प्रतिपाद्यते।

अर्थात् पहले काल में किसी ऋषि की गौ मर गई। उस ऋषि ने उस गौ के बछड़े को देखकर ऋभुओं की स्तुति की। ऋभुओं ने उस जैसी और गौ बनाकर उस गौ के चमड़े से ढककर उस बछड़े के साथ जोड़ दिया, यह अर्थ मन्त्र के पूर्वार्द्ध द्वारा प्रतिपादित किया जाता है।

कोई सायणाचार्य से पूछे, महाराज! जिन ऋभुओं (मेधावी विद्वानों) में नूतन गौ बनाने की शक्ति थी, उन्होंने बछड़े को क्यों न उस नई गौ के साथ जोड़ दिया। मरी गौ का चमड़ा उधेड़ने की क्या आवश्यकता थी? ऐसे बुद्धि विरुद्ध अर्थ को श्री सायण ही लिख सकते हैं।

उपरिलिखित मन्त्र का शुद्ध अर्थ—

हे (ऋभवः) मेधावी विद्वानो! तुम (गाम्) वाणी को (चर्मणः) चर्म से (निर्+अपिंशत) रूपरहित करो और (मातरम्) मां को (पुनः) फिर (वत्सेन) बछड़े के (सम्+असृजत) साथ मिलाओ। हे (सौधन्वनासः) धनुर्विद्या में अत्यन्त कुशल (नरः) नेताओ! तुम (स्वपस्यया) अपनी क्रिया कुशलता में (जिव्री) बूढ़े (पितरा) माता-पिता को (युवाना) जवान (अकृणोतन) करो।

इस मन्त्र के पहले चरण में ऋभुओं (मेधावी विद्वानों) का एक कार्य ऐसा बताया गया है, जो महत्त्वपूर्ण है। वह है "निश्चर्मणो गामपिंशत" वाणी को चर्मरहित करो, अर्थात् बाल की खाल निकालो। कई अकृतविद्य लोग यहां "गौ को चमड़े से रहित करो" अर्थ करते हैं। किन्तु वह अर्थ ठीक नहीं, क्योंकि दूसरे पाद में "सवत्सेनाजृत मातरं पुनः" पाठ पढ़ा गया है, जिसका अर्थ है—"मां को फिर बछड़े के साथ मिलाओ"। अब आप सोचिये, जिसकी खाल उतार दी गई, उसके साथ बछड़े के मिलाने का क्या अर्थ? वैदिक आचार्यों के मत में शब्दों का वास्तविक अर्थ 'वाणी का वत्स' है। इस दृष्टि से मन्त्र के पूर्वार्द्ध का अर्थ हुआ—'ज्ञानी विद्वान् लोग बात (बाल) की खाल उतारते हैं, उसके मर्म तक पहुंचते हैं और उसके वास्तविक अर्थ की संगति लगाते हैं।'

यदि यह हठ हो कि 'गौः' शब्द का अर्थ गाय ही है, तब पहले पाद 'निश्चर्मण ऋभवो गामपिंशत' का अर्थ होगा—'चमड़े से गौ को नितरां रूप युक्त करो' अर्थात् उसको खूब हृष्ट-पुष्ट करो। तब दूसरे पाद का अर्थ होगा—'उसको बछड़े से मिलाओ' अर्थात् उसको सन्तानयुक्त करो। तात्पर्य यह है कि 'ऋभु' प्रजनन शास्त्री का नाम है। वह बांझ को भी संतानयुक्त कर सकता है। ऐसे ज्ञानी अपनी क्रिया कुशलता से अपने जीर्ण, वृद्ध माता-पिताओं को फिर से जवान बना सकते हैं। ऋभुओं के सम्बन्ध में इस निर्देश को यदि सामने रखा जाय तो ऋभुसूक्तों के समझने में सुविधा होगी।

महर्षि यास्ककृत 'निघण्टु' (३।१५) में ऋभुपद मेधावि-नामों में पढ़ा है। निरुक्त ११।१५ में इस शब्द के सम्बन्ध में निम्नलिखित लेख मिलता है—

उरु भान्तीति वा, ऋतेन भान्तीति वा, ऋतेन भवन्तीति वा। आदित्यरश्मयोऽप्यृभव उच्यन्ते।

अर्थ—बहुत प्रकाशित होते हैं अथवा ऋत से प्रकाशित होते हैं, ऋत से, ऋत के द्वारा, ऋत के साथ होते हैं। सूर्य के किरण भी ऋभु कहलाते हैं।

अर्थात् ज्ञान-विज्ञान, योग तप, लोकसेवा आदि आध्यात्मिक, मानसिक और बौद्धिक प्रकाश से प्रकाशमान महात्मा जहां 'ऋभु' हैं, वहां सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, तारे आदि प्रकाशपिण्ड भी 'ऋभु' संज्ञक हो सकते हैं। सृष्टि नियम जिनका प्रकाश करता हो, जिनकी सत्ता अबाध सत्य पर आश्रित हो, ऐसे सब चेतन-अचेतन पदार्थ ऋभु कहलाने के अधिकारी हैं। निरुक्तकार का सूर्य-रश्मियों को 'ऋभु' कहना उदाहरणमात्र है। वेद में ऋभुओं के जो कार्य बताये हैं, उनमें अध्यापन एवं शिल्प मुख्य प्रतीत होते हैं। ब्राह्मणग्रन्थों में ऋभुओं के सम्बन्ध में एक वाक्य आता है, वह बहुत महत्त्वयुक्त और विचारने योग्य है। वह है—"ऋभवो वा इन्द्रस्य प्रियं धाम" (ता० १४।२।५) 'ऋभु' इन्द्र का प्यारा ठिकाना है। 'ऋभु' सम्बन्धी वैदिक सूक्तों को पढ़ते समय इन निर्देशों को सदा सामने रखना चाहिए। निघण्टु, निरुक्त और ब्राह्मणग्रन्थों के इन निर्देशों के आधार पर भाष्यकारों ने बहुविद्या-प्रकाशक विद्वान्, महान्, मेधावी, आयुः-प्रकाशक, सभ्यता-प्रकाशक, धनञ्जय, सूत्रात्मा वायु, किरणें आदि अर्थ स्वीकार किये हैं।

गुरुकुल डिकाडला (पानीपत) को बर्बाद करने का षड्यंत्र विफल

ब्र० ओमस्वरूपार्य और गुरुकुल डिकाडला को बदनाम करनेवालों को सारे क्षेत्र ने धिक्कारा। १० नवम्बर की बैठक में संस्था का आय-व्यय विवरण प्रस्तुत किया। आज तक के हिसाब में कहीं भी एक पैसे की हेराफेरी नहीं मिली। गुमनाम इश्तिहार निकालनेवालों में से एक भी सामने नहीं आया। सर्वसम्मति से सभी ने इस बेहूदे प्रयास की निन्दा की और ब्र० ओमस्वरूपार्य में पूरा विश्वास और निष्ठा व्यक्त की। सभी ने इस बात की प्रशंसा की कि पिछले दस वर्षों में संस्था ने ब्रह्मचारी जी के संचालन में लगभग ५० लाख रुपये की चल-अचल सम्पत्ति अर्जित की है और बहुत अच्छी प्रगति हुई है। इस समय आर्षपाठ विधि से लगभग ६० छात्र अध्ययनरत हैं, इनमें हरयाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र और नेपाल के छात्र हैं। गोशाला में भी लगभग ७०-८० गायें हैं और अपना ट्रेक्टर है। यह सब आपके सहयोग और ब्रह्मचारी जी के अथक परिश्रम का ही परिणाम है।

प्रिंसिपल शिवकुमार त्यागी
महामन्त्री : गुरुकुल डिकाडला (पानीपत)

दस करोड़ बच्चों को स्कूल शिक्षा भी नहीं

मनीला १९ नवम्बर (रायटर)। दुनिया में १० करोड़ से अधिक बच्चों को स्कूली शिक्षा भी नसीब नहीं होती। यूनेस्को के महानिदेशक फेडरिको मेयर ने आज यह जानकारी दी। वे यहां 'दक्षिण पूर्व एशिया में शिक्षा' विषय पर एक क्षेत्रीय सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि दक्षिण एशिया और अफ्रीका मे स्कूली शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रयास इस क्षेत्र की गरीबी, विदेशी ऋण के बोझ और उपद्रव के कारण नाकाम हो जाते हैं। कई विकासशील देशों में ५० प्रतिशत से अधिक लोग निरक्षर हैं। यह समस्या सिर्फ विकासशील देशों की ही नही है। यह समस्या औद्योगीकृत देशों मे भी है। लेकिन इसका स्वभाव अलग है। दुनिया में प्राथमिक स्कूलों में दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या १९७० में ४३ करोड़ ३० लाख थी। १९८० में यह संख्या बढ़कर ५९ करोड़ ७० लाख हो गई।

हरयाणा पालिटेक्नीक संस्थानों हेतु ८१ करोड़

सफीदों, १९ नवम्बर (वि.)। आगामी आठवीं पचवर्षीय योजना १९९२-९७ हेतु विश्व बैंक ने हरयाणा सरकार को नये पालिटेक्नीक सस्थानों की स्थापना एवं आधुनिकीकरण के लिये ८१ करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता स्वीकृत की है।

यह जानकारी देते हुए हरयाणा के तकनीकी शिक्षामन्त्री छतरपाल ने बताया कि राज्य सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि प्रत्येक जिला मुख्यालय पर कम से कम एक पालिटेक्नीक संस्थान स्थापित किया जायेगा। उन्होंने बताया कि देश का पहला अपनी किस्म का महिला पालिटेक्नीक संस्थान फरीदाबाद में आगामी सत्र से शुरु हो जायेगा। उन्होंने बताया कि आगामी सत्र से रक्षा विज्ञान विषय पर डिप्लोमा/डिग्री कोर्स भी शुरु किया जा रहा है।

हर मिनट सैन्यीकरण पर ५ करोड़ रुपए खर्च

वाशिंगटन, ११ नवम्बर (एजेंसी)। पूरे विश्व में सैन्यीकरण पर एक मिनट में २० लाख डालर यानी पांच करोड़ २० लाख रुपए फूंक दिये जाते हैं।

हाल में किये गये अध्ययन में यह कहा गया है। इसके मुताबिक, सैन्यीकरण पर किया गया यह खर्चा कम आय वाले विकासशील देशों की कुल आमदनी के बराबर है। इन देशों में दुनिया के आधे लोग बसते हैं। यह अध्ययन भूख और विकास पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ने किया है।

दुनिया के सैन्य व्यय मे कुछ गिरावट १९८४ में आई। पहल विकासशील देशों ने की और विकसित देशों ने भी इस कटौती की प्रक्रिया को अपनाया। विकासशील देशों ने मजबूरी में ऐसा किया था क्योंकि उस वक्त वे आर्थिक सकट के दौर से गुजर रहे थे। उन पर भारी कर्जा था और इस कर्ज का बड़ा हिस्सा शस्त्र-आयात पर खर्च हुआ था।

अध्ययन के अनुसार, विकासशील देशों के सैन्य व्यय में आई गिरावट के कुछ अन्य कारण भी थे। इन देशों मे लोकतंत्र का विस्तार और शस्त्रों के बजाय लोगों का जीवन स्तर सुधारने पर बल देने की नीति।

सन् १९८८ में अमेरिका और सोवियत संघ सैन्यीकरण पर सबसे ज्यादा खर्च कर रहे थे, कुल व्यय का ७० प्रतिशत और यही दोनों देश अन्य देशों के लिए हथियारों के प्रमुख स्रोत थे।

भारत सबसे आगे

वाशिंगटन, (भाषा)। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार चीन अथवा किसी अन्य देश की तुलना में जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्र में भारत सबसे आगे है और यह रफ्तार सन् २१५० तक जारी रहेगी।

विश्व की जनसंख्या के बारे में लगाये गये एक अनुमान में बैंक ने कहा है कि १९८५ में भारत की जनसंख्या ७६ करोड़ ५१ लाख ४७ हजार थी। वर्ष २१५० में भारत की जनसंख्या एक अरब ७५ करोड़ ६७ लाख १८ हजार तक पहुंचने का अनुमान है जबकि चीन की जनसंख्या एक अरब ६८ करोड़ ९२ हजार तक पहुंच जायेगी।

वर्ष २०५० से २०७५ के बीच भारत विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश हो जायेगा।

शुभ सूचना

आपको जानकर हर्ष होगा कि दयानन्दमठ, रोहतक में स्वामी स्वतन्त्रानन्द धर्मार्थ औषधालय का उद्घाटन दिनांक ८ दिसम्बर, ९१ रविवार को रोहतक के उपायुक्त महोदय द्वारा किया जावेगा।

सभी सज्जनों से प्रार्थना है कि समारोह में पहुंचकर शोभा बढ़ायें।

श्री डा० सोमवीर आयुर्वेदाचार्य M.A.M.S. Gold medalist, आयुर्वेद पुनर्वसु औषधालय के प्रधान चिकित्सक नियुक्त किये गये हैं।

सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज फ्री किया जायेगा। लाभ उठायें।

—महाशय भरतसिंह मन्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक

सती होना घोर अपराध

सती होना घोर अपराध है, पाप है, कायरता है!
तो सती होना एक प्रथा है क्या?

जो श्मशानघाट में जाकर जलती है वो तो सती है!
पर जो रसोई में जलाई जाती है वो है क्या?

कोई नाम तो दहेज में मरने वाली को भी दे दो!
ये अन्याय नहीं तो और है क्या?

सती होने के बाद सुराग ढूंढते हैं,
दहेज के कीड़ों की शिकार हो जाये तब निशां देखते हैं!
जलने से पहले उन पर क्या बीती यही सोचा है क्या?

बेटी जलने का दुःख मना रहे हैं,
पर साथ ही साथ बहू जलाने का षड्यन्त्र रचा रहे हैं!
बेटी के दुःख से भी तुम्हें होश नहीं आया क्या?

अब जाग नारी तेरे बन्धन तू ही काट सकती है,
कुछ जाग चुकी कुछ को तू भी जगा सकती है!
अब भी तू क्रूर पति को परमेश्वर समझती है क्या?

—सुशीला अध्यापिका
डी० एस० पब्लिक स्कूल, च० दादरी

शोक समाचार

श्री सूरजसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालू, जिला कैथल का गतदिनों ८२ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने अपने ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना की थी। आप आर्यसमाज के सभी कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। वे हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आंदोलन तथा शराबबन्दी आंदोलन में भी सम्मिलित हुए थे। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति दे और परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि नं० P.RTK-४६ दूरभाष ७,६६ ०८, ५३. ०६२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १६ अंक ३ ७ दिसम्बर, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद में सर्वश्रेष्ठ यज्ञ-कर्म

(स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, गुरुकुल कालवा)

यजुर्वेद प्रथम अध्याय के प्रथम मन्त्र में उत्तम कामों की सिद्धि के लिये मनुष्यों को ईश्वर की प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये, इस बात का प्रकाश किया है। मन्त्र इस प्रकार है—

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥ यजु० १।१॥

अर्थ—हे मनुष्यो ! यह (सविता) सब जगत् का उत्पादक, सकल ऐश्वर्य-सम्पन्न जगदीश्वर (देवः) सब सुखों का दाता, सब विद्याओं का प्रकाशक भगवान् (वायव स्थ) जो हमारे (वः) और तुम्हारे प्राण, अन्तःकरण और इन्द्रियां हैं एवं सब क्रियाओं की प्राप्ति के हेतु स्पर्श गुणवाले भौतिक प्राणादि हैं उनको (श्रेष्ठतमाय) अत्यन्त श्रेष्ठ यज्ञ (कर्मणे) जो सबके उपकार के लिये कर्त्तव्य कर्म हैं उससे (प्रार्पयतु) अच्छे प्रकार संयुक्त करे। हम लोग (इषे) अन्न उत्तम इच्छा तथा विज्ञान की प्राप्ति के लिये सविता देव रूप (त्वा) तुझ विज्ञान स्वरूप परमेश्वर को तथा (उर्जे) पराक्रम एव उत्तम रस को प्राप्ति के लिये (भागम्) सेवनीय, धन और ज्ञान के पात्र (त्वा) अनन्त पराक्रम तथा आनन्द से भरपूर सदा आपकी शरण चाहते हैं हे मनुष्यों। ऐसे होकर तुम (आप्यायध्वम्) उन्नति को प्राप्त करो और हम उन्नति प्राप्त कर रहे हैं। हे परमेश्वर ! आप कृपा करके हमें (इन्द्राय) परमैश्वर्य की प्राप्ति के लिये और (श्रेष्ठतमाय) अत्यन्त श्रेष्ठ यज्ञ (कर्मणे) कर्म करने के लिये इन (प्रजावतीः) बहुत प्रजावाली (अनमीवाः) व्याधि रहित (अयक्ष्माः) यक्ष्मा रोगराज से रहित (अघ्न्याः) बढ़ाने योग्य, अहिंसनीय गौ, इन्द्रियां पृथिवी आदि और जो पशु हैं, उनसे सदैव (प्रार्पयतु) संयुक्त कीजिये। हे परमात्मन् ! आपकी कृपा से हमारे मध्य में कोई (अघशंसः) पाप का प्रशंसक, पापी और (स्तेन) चोर (मा+ईशत) कभी उत्पन्न न हो अथवा समर्थ न हो और इस (यजमानस्य) जीव के एव परमेश्वर और सर्वोपकारक धर्म के उपासक विद्वान् (पशून्) गौ, घोड़े, हाथी आदि लक्ष्मी व प्रजा की (पाहि) सदा रक्षा कीजिये। क्योंकि (वः) उन गौओं और इन पशुओं को (अघशंसः) पापी (स्तेन) चोर (मा+ईशत) हनन करने में समर्थ न हो। जिससे (अस्मिन्) इस (गोपतौ) पृथिवी आदि की रक्षा के इच्छुक धार्मिक मनुष्य एव गोस्वामी के पास (बह्वीः) बहुत-सी गौवें (ध्रुवाः) स्थिर सुखकारक (स्यात) होवें।

भावार्थ—मनुष्य सदा धर्मयुक्त पुरुषार्थ के आश्रय से, ऋग्वेद के अध्ययन से, गुण और गुणी को जानकर सब पदार्थों के प्रयोग से पुरुषार्थसिद्धि के लिये अत्युत्तम क्रियाओं से संयुक्त रहें। जिससे—ईश्वर की कृपा से सबके सुख और ऐश्वर्य की वृद्धि होवे और शुभकर्मों से प्रजा की रक्षा और शिक्षा सदा करें। जिससे कोई रोग-रूप विघ्न और चोर प्रबल न हो सके और प्रजा सब सुखों को प्राप्त हो। जिसने यह विचित्र सृष्टि रची है उस जगदीश्वर का आप सदैव धन्यवाद करें। ऐसा करने से आपकी परमदयालु ईश्वर कृपा करके सदा रक्षा करेगा, ऐसा समझो।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने "गो करुणानिधि" में इस मन्त्र के एक अंश की व्याख्या इस प्रकार की है—

"यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि–'अघ्न्या यजमानस्य पशून् पाहि' हे पुरुष ! तू इन पशुओं को कभी मत मार और यजमान अर्थात् सबके सुख देनेवाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे और इसीलिये ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं और इनकी रक्षा में अन्न भी महगा नहीं होता क्योंकि दूध आदि के अधिक होने से दरिद्री को भी खान-पान में मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है, मल के न्यून होने से दुर्गन्ध भी न्यून होता है, दुर्गन्ध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टि जल की शुद्धि भी विशेष होती है। उससे रोगों की न्यूनता होने से सबको सुख बढ़ता है। इससे यह ठीक है कि गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है। क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है।"

धेनु अन्न बल वैभव द्वारा सबको सुख पहुँचाता है।
उसी प्रजापति की पूजा कर प्राणी सद्गति पाता है॥
वही अन्नदाता, वही बलदाता पिता कहाता।
गोरक्षा-यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म कर नर उसके ढिग जाता॥

इस प्रकार मन्त्र का भाव बतलाया गया है।

भगवान् जैसा [illegible]

तर्ज—औलाद वालो फूलो फलो .. ..

भगवान् जैसा कोई नहीं
सारे जहान में सबसे बड़ा है।
सब जग का आधार वही दातार वही कर्तार वही है,
मात पिता बन्धु व सखा सारे जग का भर्तार वही है,
दुखिया अनाथों का वही आसरा है॥१
इधर-उधर से बचाके नजर दुनियां में अगर कोई पाप करेगा,
देख रहा कण-कण में प्रभु कोई उसकी नजर से बच न सकेगा,
जिसे वो न जाने ऐसा दुनियां में क्या है॥२
जब सब रिश्तेदार छोड़कर प्यार अगर मुंह मोड़ चुके हों,
तुझ पर संकटकाल में बिगड़े हाल समझकर छोड़ चुके हों,
कड़े वक्त में भी केवल प्रभु आसरा है॥३
छल से रहित व्यवहार व सच्चा प्यार तुझे मंजूर नहीं है,
बहुत निकट भगवान् अरे नादान प्रभु कुछ दूर नहीं है,
"पथिक" जो बुलाए वो भी उसे ढूंढता हो॥४

प्रेषक . नन्दकिशोर आर्य (राजस्थान)

कहां गया वह स्वभाषा प्रेम

राजनीतिक दल/आलोक मेहता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महासचिव प्रो॰ राजेन्द्रसिंह ने पिछले दिनों भोपाल में अंग्रेजी माध्यमवाले स्कूलों की तीखी आलोचना करते हुए कहा कि विदेशी भाषा से जुड़े व्यक्ति राष्ट्रीय धारा में शामिल नहीं हो सकते। प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी की शिक्षा संविधान के विरुद्ध है, क्योंकि संविधान में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए। राष्ट्रभाषा और भारतीय संस्कृति के प्रति संघ और उसके नेताओं का मोह नया नहीं है, लेकिन सवाल यह उठता है कि संघ की दीक्षा पाए जो लोग अब भारतीय जनता पार्टी के कर्ताधर्ता हैं या उसकी सरकारों में प्रमुख पदों पर है, क्या वे अंग्रेजी हटाने तथा हिन्दी को समुचित स्थान दिला पाने में कोई सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं? उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में संघ से निकले 'निष्ठावान्' नेता ही सरकार चला रहे हैं। केन्द्र सरकार को टेका लगाने में भी संघ की पृष्ठभूमिवाले भाजपाई नेता अग्रणी हैं। फिर भी शिक्षा और प्रशासनिक कामकाज में अंग्रेजी हटाने के लिए कोई कारगर कदम भाजपाई नेताओं ने नहीं उठाया। इसके विपरीत पिछले पार्टी अधिवेशन में उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि अंग्रेजी को सम्पर्क भाषा के रूप में बनाए रखने की नीति ही अपनाई जाएगी।

भाजपा के इसी रुख के कारण उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में प्रशासनिक कामकाज और केन्द्र के साथ पत्राचार में अंग्रेजी का वर्चस्व बराबर दिखाई देता है। मुलायमसिंह यादव की राजनैतिक अखाड़ेबाजी और अन्य कमियों की चाहे जितनी आलोचना की जाए, अंग्रेजी को हटाकर हिंदी तथा भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने के लिए किये गये उनके प्रभावशाली प्रयासों की सराहे बिना नहीं रहा जा सकता। अपने मुख्यमन्त्रित्वकाल में मुलायमसिंह यादव ने अंग्रेजी में सरकारी पत्राचार पर रोक लगाकर दक्षिण भारत को भेजे जानेवाले पत्रों को सम्बन्धित राज्य की भाषा में अनुवाद नत्थी कर भेजने की व्यवस्था करदी थी। उन्होंने हिन्दीभाषी राज्यों में प्रशासनिक कामकाज पूरी तरह हिंदी में करने तथा भारतीय भाषाओं की समुचित शिक्षा के तालमेल के लिए दिल्ली में एक उच्चस्तरीय बैठक का सुझाव दिया था। तब मध्यप्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्रियों ने इस विचार का समर्थन किया, लेकिन पार्टी नेतृत्व के इशारे पर दिल्ली की बैठक टाल दी गई। इस तरह अपनी भाषा और संस्कृति के नाम पर वोट बटोरनेवाली पार्टी दक्षिण में अपने पैर जमाने के सपने बुनने के लिए अपने मूलभूत आदर्शों से पीछे हट गई।

दक्षिण भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के उत्तर भारत में पठन-पाठन के प्रयास से वहां की जनता की नाराजगी का भय भाजपाई नेताओं को लगना सचमुच आश्चर्यजनक है। यह बात कौन नहीं जानता कि तमिलनाडु, आंध्र या कर्नाटक में अंग्रेजी की अपेक्षा तमिल, तेलुगु अथवा कन्नड़ के प्रति लगाव रखने और उसका उपयोग करनेवालों की संख्या ही अधिक है। आंध्र, कर्नाटक और केरल में हिंदी सिखाने और समझनेवालों की संख्या भी अच्छीखासी है। इन क्षेत्रों में हिंदी के प्रति स्नेह रखनेवाले लोगों की शुद्ध हिंदी उत्तर भारत के हिंदीभाषियों से अधिक शुद्ध और मीठी होती है। तमिलनाडु में हिंदी के प्रति जो भी राजनैतिक दुराग्रह हो, संस्कृत से गहरा लगाव बराबर देखने को मिलता है। दक्षिण भारत में हिंदी फिल्मों का आकर्षण उत्तर से कम नहीं है। ऐसी स्थिति में दक्षिण की भाषाओं का सम्मान करते हुए हिंदी को भी समुचित स्थान देने के लिए कोई भी राजनैतिक दल पहल करे, तो उसे दुत्कारे जाने का खतरा नहीं होना चाहिए।

धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीय धारा की बात करनेवाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता अपने भाजपाई शिष्यों को हिंदी और भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने के लिए छोटी-मोटी राजनैतिक कुर्बानी देने की सलाह क्यों नहीं दे सकते? ईसाई मिशनरियों के स्कूलों के विस्तार और विदेशी भाषा के साथ पनपनेवाली संस्कृति को रोकने के लिए भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को अपनी नीति और दृष्टिकोण पुनर्परिभाषित करने होंगे। वनांचल और पूर्वोत्तर क्षेत्र में भारतीय संस्कृति और भाषा को महत्त्व दिलाने के लिए अभियान चलाते समय भाजपा को हिंदी राज्यों में अपनी भाषा को सही स्थान दिलाकर दिखाना होगा। हिमाचल प्रदेश में शांताकुमार जैसे मुख्यमन्त्री हिंदी के लेखक कहलाकर गौरवान्वित होना चाहते हैं तो क्या उन्हें अपनी पार्टी को भाषा नीति में लगे जाले साफ करने के लिए प्रयास नहीं करने चाहिये?

इसमें कोई शक नहीं कि पोंगापन्थी हिंदीवादी होकर हिंदी को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। न ही अन्य भारतीय भाषाओं की अनदेखी कर अंग्रेजी से पीछा छुड़ाया जा सकता है। अंग्रेजी का अपमान किए बिना अपने देश की भाषाओं को समृद्ध करने के लिए राष्ट्रीयस्तर पर प्रयास करने होंगे। भारतीय जनता पार्टी के नेता मन्दिर, धर्म और संस्कृति के नाम पर सत्ता हथियाने की हरसम्भव कोशिश करते हैं, लेकिन अपना चुनाव घोषणा-पत्र भी पहले हिन्दी में तैयार नहीं करते। घोषणा-पत्र अंग्रेजी में तैयार होता है और फिर कई दिनों तक उसके अनुवाद के लिए प्रतीक्षा की जाती है। पार्टी अधिवेशनों में भी मूल प्रस्ताव अंग्रेजी में तैयार होते हैं, हिंदी या किसी भारतीय भाषा में नहीं।

इसलिए राष्ट्रीय धारा की बात करने के साथ-साथ प्रो॰ राजेन्द्र सिंह अपने पुराने साथी लालकृष्ण आडवानी पर सही भाषा नीति अपनाने के लिए दबाव क्यों नहीं डालते? उत्तर भारत के विभिन्न राज्यों में भारतीय भाषाओं की शिक्षा के लिए अच्छा तालमेल कायम हो जाए, तो हर छात्र अपनी मातृभाषा के साथ एक अन्य भारतीय भाषा और अंग्रेजी का ज्ञान भी प्राप्त कर सकता है।

भाषा के मामले में हमारी ढुलमुल नीति का ही एक परिणाम है कि हिन्दीभाषी राज्यों के औसत छात्रों की हिन्दी बहुत कमजोर होती है। सामान्य युवक स्नातक शिक्षा के बाद भी अंग्रेजी छोड़, सही ढंग से हिन्दी में भी आवेदन-पत्र नहीं लिख पाते। दक्षिण की स्थिति इससे बेहतर है। वहां अंग्रेजी और अपनी मातृभाषा पर पूरा अधिकार रहता है। इसी कारण अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षाओं में दक्षिण के युवकों को अधिक स्थान मिल जाते हैं।

भाजपा एक तरफ उत्तर भारत में शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पा रही है, दूसरी तरफ दक्षिण में अपने पैर जमाने के लिए अब अंग्रेजी का खुलकर विरोध नहीं कर रही है। अतः बौद्धिक ईमानदारी इसी में है कि राष्ट्रीय धारा के नारे को आगे बढ़ाने से पहले वह अपनी भाषानीति को राष्ट्रवादी तथा तेजस्वी बनाए।

(दैनिक नवभारत से साभार)

आवश्यकता

स्वामी स्वतन्त्रानन्द धर्मार्थ औषधालय के लिए एक डिस्पेन्सर (उपवैद्य) की जरूरत है। इच्छुक व्यक्ति प्रार्थना-पत्र तुरन्त भेजें तथा दिनांक १०-१२-९१ को २ बजे साक्षात्कार हेतु आवश्यक अनुभव प्रमाण-पत्रों सहित पहुंचें। वेतन योग्यतानुसार।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी
व्यवस्थापक दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज माडल टाऊन (हिसार) का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

प्रधान—सर्वश्री फूलचन्द आर्य, उपप्रधान—डा॰ शिवधनसिंह आर्य, मन्त्री—रणजीतसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—राजकुमार बंसल, पुस्तकाध्यक्ष—मनीराम आर्य।

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

(श्री सूबेदार लखीराम, ग्राम खेड़का, डा. दुल्हेड़ा, जि० रोहतक द्वारा)

		रुपये
१	सूबेदार लखीराम	१०३
२	प्रधान दिलबाग	१०१
३	उपेन्द्र अहलावत	१०१
४	बलवन्तसिंह	१०१
५	दलीपसिंह	५०
६	रघबीर	५०
७	प. भरतसिंह	५०
८	डा भरतसिंह	५०
६	अभेराम	५१
१०	महाशय इन्द्राज	५१
११	सूरजमल	५०
१२	बरखे	५०
१३	नरसिंह	२१
१४	राममेहर	२१
१५	प. जिलेसिंह	२१
१६	बलवान्	२१
१७	महासिंह	११
१८	नन्दे	१०
१६	शारसिंह	१०
२०	फतेहसिंह	१०
२१	आजाद	१०
२२	रामकिशन	१०
२३	जयसिंह	१०
२४	राज	१०
२५	हजारी	१०
२६	घडुका	१०
२७	अत्तरसिंह	५
२८	भगवाना	५
२६	धारे	५
३०	सुखलाल	५
३१	रतनसिंह	५
३२	दयानन्द	५
३३	मायाराम	५
३४	प. सूबे	५
३५	रामकिशन	५१
३६	नरायण	५०
३७	दरयावसिंह	५०
३८	जयचन्द	२५
३६	धमवीर	२१
४०	गगाराम	१०
४१	जाडो	१०
४२	डा० करण	१०
४३	सतबीर	१०
४४	चरणसिंह	५
४५	मुखत्यारसिंह	१०
४६	पदमसिंह	२५
४७	रणसिंह	५
४८	भरतसिंह	५०
४६	विद्यानन्द	१०१
१	शोभा	५
२	कलिया	५
३	धर्मपाल	५
४	सुरेश	५
५	राजू	५
६	सूरजभान	५
७	कंवलसिंह	५
८	शिवलाल	५
६	मेद	५
१०	शेरसिंह	५
११	तुलसीराम	५
१२	राममेहर	५
१३	रामधारी	५
१४	सतबीर	५
१५	भीमे	५
१६	रूपे	५
१७	लीले	५
१८	सूरजमल	५
१६	आजादसिंह	५
२०	करतारे	५
२१	राजबीर	५
२२	बनवारी	५
२३	होशियारसिंह	५
२४	सूबेदार कुवार	५
२५	भमेल	५
२६	श्यामलाल	५
२७	राजसिंह	५
२८	जनना प्यारे	५
२६	चन्द्रभान	५
३०	धमबीर	५
३१	चौ. धर्मपालसिंह मलिक, ६७ हाऊसिंग कालोनी, सोनीपत	५१

गुरुकुल झज्जर, रोहतक

१	पूज्यपाद श्री स्वामी ओमानन्द	१००
२	श्री आचार्य विजयपाल	१००
३	,, मा० कुन्दनसिंह	१००
४	,, फतहसिंह भण्डारी	५०
५	,, ज्ञानवीर	५०
६	,, सत्यपाल	५०
७	,, रामगोपाल	५०
८	,, नारायण मुखर्जी	५०
६	,, विरजानन्द	१००
१०	,, रवीन्द्रनाथ पांडेय	१००
११	,, स्वामी सेवानन्द	१००
१२	,, विश्वामित्र	५०
१३	,, अनिलकुमार	५०
१४	,, दिनेशकुमार	२०
१५	,, वैद्य बलराम	२५
१६	,, जुगलाल वानप्रस्थी	२५
१७	,, आनन्द मित्र	५०
१८	,, वेदप्रकाश	५०
१६	,, चन्द्रपाल शास्त्री	५०
२०	,, मा कवरसिंह	२०
२१	,, महावीर वानप्रस्थी	५०
२२	,, सुमेरसिंह ड्राईवर	५०
२३	,, ओमप्रकाश शास्त्री	१३
२४	,, ब्र० मनुदेव	५०
२५	,, योगेन्द्र वि.	२०
२६	, अजमेर	२५
२७	,, जयप्रकाश	२५
२८	,, अशोककुमार लुहारी	२०
२६	,, सतीश	२०
३०	,, सुरेन्द्र सि.	२०
३१	,, सत्यदेव	२०

(शेष पृष्ठ ६ पर)

दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम

(ले०—डा० धर्मचन्द्र विद्यालङ्कार, सनातन धर्म कालेज, पलवल)

मानव बड़ा ही विचित्र प्राणी है। न उसके प्रेम का पता चलता है, न घृणा का। किस वस्तु से वह प्यार करता है और किससे घृणा, आज तक यह हमारे लिये पहेली बनी हुई है। भारत में तो हमने यह देखा है कि जीवन में लोगों के कथन और आचरण में बहुत ही विसंगति है। कहेंगे कुछ और करेंगे कुछ। कहेंगे यह कि यह संसार माया है, मोहिनी है, धन-लक्ष्मी बड़ी बुरी चीज है। इसके बन्धन से बचो, लेकिन व्यवहार में वैयक्तिक सम्पत्ति से अत्यधिक अनुराग रखते हैं। ऊपर से कहने को यह कहेंगे कि यह जीवन असार है, क्षण-भगुर है, इसका भरोसा कैसा? लेकिन फिर भी जीवन से बेहद लगाव रहता है, कोई भी मरना नहीं चाहता, सब जीना चाहते हैं। बात पुण्य-कर्मों की करेंगे और उसके फलों को पाना चाहते हैं लेकिन कार्य हम पाप के करते हैं। बोय पेड़ बबूल के आम कहां से खाये? या जैसा करेगा वैसा भरेगा—कहने को कहते रहेंगे लेकिन जो भी अच्छा लगे उचित-अनुचित उसी को करते हैं। सिद्धांत रूप में कहते हैं कि मन बड़ा ही चंचल है इसे वश में करना चाहिये, लेकिन स्वयं मन के वश में होकर आचरण करते हैं।

समाज में कहेंगे कि सभी को समदृष्टि से देखो, किसी को छोटा-बड़ा मत आंको, लेकिन व्यवहार में जात-पात का भेदभाव पाया जाता है। कहने को कहेंगे कि भगवान् कण-कण में व्यापक है लेकिन पाप करते समय कभी उसकी परवाह ही नहीं करते, दूसरे यदि भगवान् सर्वव्यापक ही है तो मूर्ति और मन्दिर में क्यों, उसकी आराधना पूजा करने जाते हैं? कहने को लोग कहते हैं कि सब कुछ भगवान् का है, लेकिन एक-एक पैसा और एक इंच जमीन पर लड़ मरते हैं। कहने के लिए कहा जाता है कि राजा (नेता) के लिए सब लोग एक जैसे होते हैं, लेकिन व्यवहार में जब देखते हैं तो कुछ और ही बात मिलती है। एक अच्छा और योग्य व्यक्ति रह जाता है और अयोग्य व्यक्ति का चयन करा दिया जाता है, फिर भी बात ऊपर से सबके समान होने की कही जाती है।

ऐसा एक नहीं कितने ही और उदाहरण हैं। जब इस सबको देखते हैं तो ऐसा लगता है कि यह दुनिया निरे ढोंग पर जीवित है। जीवन में सिवाय दिखावे के और कुछ है ही नहीं। इसी विसंगति से आज की हमारी सारी मानसिक, पारिवारिक और शारीरिक तथा राष्ट्रीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। इसी आडम्बरवाही दोहरे आचरण के चलते आज कोई भी व्यक्ति सन्तुष्ट नहीं दिखाई देता। महाकवि जयशंकर प्रसाद जी ने इसी को लक्ष्य करके लिखा था—

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों हो पूरी मन की,
एक दूसरे से न मिल सके
यही विडम्बना है जीवन की।
(कामायनी)

अतएव आज तो हम एक प्रकार की विडम्बना का जीवन जी रहे हैं जो हमारे लिए अभिशाप बन गया है। इसी के चलते आज किसी भी क्षेत्र में सुख और शांति नहीं है। हर जगह असंतोष और क्षोभ है। व्यक्तिवाद और अवसरवाद का बोलबाला है। स्वार्थों का संग्राम हो रहा है। मारकाट और आपाधापी मची हुई है। लेकिन कहनी आदर्श की बात हैं और करना कुछ और ही है। चिन्तन और कर्म की यह दूरी मानव को घोर अशांति के मार्ग पर ले जारही है। आखिर इस विसंगति अथवा आडम्बर का मूलकारण क्या है? इसकी तह तक हमें पहुंचने की जरूरत है, क्योंकि इसके बिना यह समस्या सुलझेगी नहीं।

हमारे विचार से इस दोहरेपन का कारण सर्वप्रथम तो हमारी सिद्धांतों में निष्ठा की कमी है। हम जो कहते हैं वह केवल हमारी जबान पर है—हमारे मन और हृदय तथा आत्मा तक उसकी पहुंच नहीं है अर्थात् हम जो कहते हैं वह हमने अंतःकरण से नहीं माना है। उसमें हमारी कोई आस्था नहीं है। यदि उसमें हमारी आस्था होती और उसे हम हृदय से स्वीकार करते तो अवश्य ही आचरण में उतारते।

उपनिषत्कार का कथन है—यत् मनसा मनुते तद् वाचा वदति यद्वाचा वदति तत् कर्मण्याभिसम्पद्यते। अर्थात् जो मनमें सोचा जाता है वही वाणी से उच्चरित होता है और जो वाणी से कहा जाता है वही हाथों द्वारा किया जाता है। वास्तव में तो मानवमात्र का यही स्वभाव होना चाहिये। वैदिकधर्म और संस्कृति का तो सिद्धांत ही यही है कि 'यदन्तरं तद् बाह्यं, यद्बाह्यं तदन्तरम्' अर्थात् आदमी जैसा बाहर से है वैसा ही वह अन्दर से भी हो और जैसा वास्तव में अन्दर से है वैसा ही बाहर भी झलके। लेकिन आज तो यह केवल कहनेभर की ही बात रह गई है। आज लोग हैं कुछ और दिखाई कुछ और पड़ते हैं। अब तो तन के उजले और मनके काले लोग अधिकतर हैं। अतएव इस आचरणगत असंगति का एक कारण हमारी सिद्धांतों में अनास्था अथवा सिद्धांतहीनता है।

दूसरा मुख्यकारण हमारा असन्तोष है। आज हमारे पास जो कुछ भी है वह चाहे जितना ज्यादा क्यों न हो, हम उससे सन्तुष्ट नहीं हैं। हम चाहे जितने बड़े पद पर हैं उससे हमें सन्तुष्टि नहीं है। जब सन्तुष्टि नहीं है तो उसके प्रति समर्पण भी नहीं है। इसीलिए कुशलता से कार्य भी नहीं कर पाते। इच्छा रखना या प्रगति की कामना करना कोई बुरा नहीं है, लेकिन जो कार्य हमें अब मिला है उसे तो हम समर्पित होकर करें। लेकिन ऐसा कहां है। आज कोई भी अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं है। सबमें धन की अन्धी होड़ लगी हुई है। अब व्यवसाय का सम्बन्ध न तन से है, न मन से, केवल धन से है। जिस व्यवसाय से जितनी अधिक आय हो, वही सर्वोत्तम है। चाहे वह अनैतिक हो, उसमें आत्मा का हनन होता हो, कोई परवाह नहीं। क्योंकि मनमें सन्तोष नहीं है। तभी तो कबीर जी ने कहा था—

"तन की भूख तनक है तीन पाव या सेर,
मनकी भूख अनन्त है भद्रा जाय सुमेर।"

आज हम तन की जरूरतों से नहीं मनकी इच्छाओं से परिचालित हैं। मन हमारा उपभोक्ता-संस्कृति के भड़काऊ विज्ञापनों के साथ कुलाच भरता है। अब जैसे चीजें हमारे लिए नहीं मानो हम उनके लिए बने हैं। तब उनके प्रति हमारे मनमें ललक और कसक नहीं होगी तो क्या होगा? जो प्राप्त है उसके प्रति तब असन्तोष स्वाभाविक है। स्वधर्म और स्वकर्म के प्रति असमर्पण भी तभी जन्मता है और उसी से जन्म लेती है यह आचरण की विसंगति जो कि हमारी आज की सारी समस्याओं की मूल है। इस आचरण की असंगति से ही हमारी सारी समस्याएं उठ रही हैं वे चाहे वैयक्तिक, मानसिक हों या सामाजिक अथवा राष्ट्रीय। अतएव समदर्शी समाचारी बनो। हर स्थिति में एक-सा चिन्तन, एक-सा कथन और वही कर्म-सम्पादन तभी मानव जीवन सुखी और समरस बन सकता है और कोई उपाय उसके सिवाय नहीं है। अन्यथा तो न इधर के रहोगे न उधर के। लोक-परलोक अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों की हानि होगी। आजकल यही तो हो रहा है—दुविधा में दोनों गये "माया मिली न राम।"

पावन गंगातट पर वेदप्रचार की धूम

श्री सत्य सनातन वैदिकधर्म प्रचार में संलग्न विश्व वेद परिवार संघ का प्रथम वार्षिकोत्सव ब्रह्मकुटी ब्रजघाट में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर १९-२० व २१ नवम्बर को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री स्वामी आत्मानन्द जी दण्डी के वेदानुकूल प्रेरणाप्रद प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त श्री रमेशचन्द्र निश्चिन्त जी के प्रभावोत्पादक, शिक्षाप्रद भजनोपदेश तथा श्री आचार्य धीरेन्द्र जी व श्री पं. ब्रह्मप्रकाश जी के वैदिक सिद्धांतों पर प्रशंसनीय प्रवचन हुए। इस समस्त कार्यक्रम की श्रोताओं ने मुक्तकंठ में सराहना की।

कार्यवाहक प्रधान
स्वामी वेदानन्द वैदिक

भारतवर्ष का गौरव

आज मेरे देश की क्या हालत है, नौजवां।
इतनी गहरी निद्रा में सो रहा है, तू कहां।
कभी सोने की चिड़िया कहते थे, सब जहां।
आज मिट्टी में मिल रहो है, भारत माता यहां।
इतनी गहरी निद्रा ...

राम कृष्ण जैसे आदर्श महापुरुष जन्मे थे यहां।
भीष्म, दयानन्द जैसे ब्रह्मचारी मिलते थे यहां।
राणा, शिवा ने अपना शौर्य दिखाया था यहां।
याद कर उस वक्त को फिर आयेगा कहां।
इतनो गहरी निद्रा

न्याय और अन्याय पर कौन तुला था कहां।
गीता का उपदेश भी आज पुकारता है यहां।
'सत्यमेव जयते' का नारा लगता था यहां।
फिर आज तेरा साहस गया है कहां।
इतनी गहरी निद्रा...

विदेशी शोभा को नष्ट करने लगे हैं यहां।
पजाब कश्मीर को नही इतनी ताकत है कहां।
सिनेमा, फैशन छोड़कर खून बहाना है कहां।
मातृभूमि की प्राणों से रक्षा करनी है यहां।
इतनो गहरी निद्रा—...

ऋषि दयानन्द ने स्वतन्त्र भारत को प्रेरणा दी यहां।
भगतसिंह, राजगुरु ने अंग्रेजों को ललकारा यहा।
आजादी नही मिलती तो ईसाई, मुसलमान होते यहा।
जवानी को खोकर आजादी क्यों लुटवा रहा है यहां।
इतनी गहरी निद्रा ...

महेन्द्रकुमार शास्त्री, एम० ए० संस्कृत
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

अभूतपूर्व हुआ आर्यसमाज का हीरक जयंती समारोह

अलवर, २९ नवम्बर (जनसत्ता)। सैकड़ों साधु सन्तों और कई मन्त्रियों के सांनिध्य में यहा आर्यसमाज का तोन दिन का हीरक जयती समारोह हुआ। इसके तहत तेईस नवम्बर को अभूतपूर्व शोभायात्रा निकालो गई। इसमें आर्यसमाज के सैकडो सन्यासियो, हजारों आर्यवीरो, वीरांगनाओं व छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

यह विशाल व उत्साहभरी शोभायात्रा सवेरे ११ बजे स्थानीय वैदिक विद्या मन्दिर (आर्य कन्या स्कूल) से शुरु हुई। इसमे सबसे आगे दो घोड़ों पर आर्य सन्यासी 'ओम्' अंकित भगवा ध्वज लिए सवार थे। उसके बाद देश के विभिन्न भागों से आए आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान्, महात्मा और स्वतन्त्रता सेनानियों का समूह पैदल चल रहा था। शोभायात्रा में आर्य वीरदल के सैकड़ो युवा करतब दिखाते चल रहे थे।

सीमन्तोन्नयन संस्कार

दिनांक २१-११-९१ रविवार एवं पूर्णमासी को पं. रतनसिंह आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने गांव बादली में महाशय मूलचन्द जी आर्य के घर पर उनके बेटे महेन्द्रसिंह तथा महेन्द्रसिंह की पत्नी को यज्ञ पर यजमान बनाकर यज्ञोपवीत दिए और सीमन्तोन्नयन संस्कार कराया और ऋषि दयानन्द द्वारा लिखी हुई संस्कार-विधि के अनुसार संस्कारों के बारे में अच्छी तरह समझाया। यज्ञ पर ६०-७० स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। आर्य जी के भजनों तथा उपदेश का सब पर बड़ा प्रभाव पड़ा। हम मन्त्री जी से प्रार्थना करते हैं और पूरी आशा करते हैं कि भविष्य में भी आर्य जी हमें इसी तरह लाभान्वित करते रहेंगे। सभा के लिए १०१ रु० दान दिया।

—श्री धीरपाल
मन्त्री आर्यसमाज बादली, रोहतक

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईदित्तामल, भिवानी स्टैंड रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजंसीज, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुड़ो बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं०, १ एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजंसीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु अपील

आशा है आपको दैनिक समाचार-पत्रों, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा ज्ञात होगया है कि गढ़वाल तथा उत्तरकाशी में आये भयंकर भूकम्प से लाखों नर-नारी बेघर होगये हैं। हजारों नर-नारी मौत के मुंह में चले गये हैं और अब सर्दी के दिनों में आकाश के नीचे अपना संकटपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अनेक प्रकार के रोग फैल रहे हैं। ऐसी भयंकर तथा दयनीय स्थिति में हम सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि अपने नगर तथा ग्राम से इन भूकम्प पीड़ित भाइयों के लिए धन तथा गर्म वस्त्र आदि संग्रह करके अपनी सुविधा के अनुसार सभा के मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक, उप-कार्यालय गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद या महर्षि दयानन्द वेदिकधाम पेहवा मार्ग कुरुक्षेत्र के पते पर भेजकर प्राप्ति की रसीद प्राप्त कर लेवें।

सभा की ओर से संग्रहीत धनराशि तथा वस्त्र आदि यथास्थान हरयाणा की जनता की ओर से सामूहिक रूप में भेजी जावेगी और दानदाताओं के नाम सभा के साप्ताहिक पत्र 'सर्वहितकारी' में प्रकाशित किये जावेंगे।

आशा है हरयाणा के आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षण संस्थायें उदारतापूर्वक धन तथा वस्त्र आदि संग्रह करके यथाशीघ्र सभा को भेजकर संगठन का परिचय देवेंगे।

निवेदक :—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	सूबेसिंह	रामानन्द
परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

सम्पादक के नाम पत्र

'सर्वहितकारी' में यह समाचार पढ़कर मन गद्गद् होगया कि मां आर्यसमाज को एक विद्वान् स्वामी वेदरक्षानन्द संन्यासी मिला है। जिन्होंने नाम भी ऐसा धारण किया है जो आर्यों की भावनाओं को छूता है। आर्यसमाज वेदप्रचारक संघ से अब स्कूल कमेटी व शिक्षा व्यापार संघ बन गया है। स्कूल साधन नहीं आर्यसमाज का सर्वस्व बन गये हैं। इस समय आर्यसमाज का गढ़ हरयाणा रहा है। हरयाणा को ही आप जगा दें, हिला दें, बचा दें तो सब कुछ बच जावेगा। हरयाणा के लिए एक विद्वान् तपोनिष्ठ कर्मठ साधु चाहिए था। प्रभु करे कि आप यह आशा पूरी कर सकें।

विनीत · राजेन्द्र जिज्ञासु

(पृष्ठ ३ का शेष)

३२	„ जितेन्द्र, शामली	१०
३३	„ अजय, मांडवा	२०
३४	„ सुभाषचन्द्र आर्य	२०
३५	„ आचार्या सुमित्रा वर्मा, एम. डी. स्कूल, रोहतक	५१
३६	„ बलराज शास्त्री, सैनिक स्कूल, रोहतक	११
३७	„ श्यामसुन्दर बंसल, उपमन्त्री आर्यसमाज कनीना (महेंद्र)	१००
३८	„ बाबू रघबीरसिंह ए. ई. टी. ओ. माडल टाऊन, रोहतक	५ कम्बल
३९	„ आर्यसमाज जींद जंक्शन	२००
४०	„ आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ़, जि. फरीदाबाद	४१००
४१	„ महाशय धर्मवीरसिंह व गजराजसिंह आर्य, ग्राम नवादा कोह, जि. फरीदाबाद	५१
४२	„ आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल, जि. फरीदाबाद	१२४६
४३	„ मनीराम, हिसार	१००

(क्रमशः)

सैकड़ों रोगों का एक इलाज नीम

नीम आयुर्वेद के मतानुसार त्रिदोष का नाश करनेवाला है। वह सत्य की तरह कड़वा जरूर होता है लेकिन उसका परिणाम सुखद ही होता है। इसके पत्तों में प्रोटीन, कैल्शियम लौह और विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है। ऐसे पेड पौधे बहुत कम हैं जो जड से शिखर तक समूचे के समूचे काम के हो। इसकी छाया छिलका, पत्ते, फूल फल और डण्ठल तक में इन्सान को तन्दरुस्त कर देने वाले गुण विद्यमान हैं।

यह सच है कि नीम हकीम से इलाज कराना खतरे से खाली नही होता, मगर 'नीम' से आप बेखौफ इलाज करा सकते हैं। इसे सस्कृत में 'निम्ब', हिन्दी मे 'नीम', बंगाली में 'निमगाछ', गुजराती में 'लिबडो', अंग्रेजी में 'नीमट्री', मराठी में 'कडुनिब' तथा फारसी मे 'नेनबूनीम' कहते हैं। तो फिर आइये साधारण से लगनेवाले प्रयोग से कठिन बीमारियों को दूर करने की विधि सही जानकारी लें—

अजीर्ण

अजीर्ण (बदहजमी) के कारण खट्टी डकार, सिरदर्द, जी मचलाने और कभी-कभी ज्वर जैसे लक्षण भी पैदा हो जाते हैं। नीम के फल (निमौली) खाइये। मीठे चरपरे होने से उन्हें खाने को जी करेगा। इस से जठराग्नि दहल उठेगी और भूख भड़कने लगेगी।

आंखों में जलन

नीम की पत्तियों का रस और पठानी लोध बराबर पीसकर पलकों पर लेप दें। आंखों की जलन और लाली इससे दूर हो जायेगी।

घाव न भरना

नीम की पत्तियों का रस १० ग्राम और सरसों का तेल १० ग्राम को २५ ग्राम पानी मे पकाये। जब जल का अंश जल जाये तो इसे नीचे उतार लें। इस तेल को घाव पर लगाने से मवाद और विष जलकर नयी त्वचा अंकुरित होकर घाव भर जाता है।

जवानी के कील

जवानी में अक्सर कील हो जाया करती हैं। इस पर नीम के बीज सिरके में पीसकर लेप करते रहें तो दाग धुलकर मुखड़ा सुन्दर हो जाता है।

जुएं और लीखें

नीम का तेल सिर में लगाने से जुएं और लीखें साफ हो जाती हैं।

तिल्ली बढ़ना

नौशादर, निमौली और अजवाइन समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाले। ३ ग्राम चूर्ण सुबह ताजे पानी के साथ लेने से तिल्ली अपना आकार ग्रहण कर लेती है।

दस्त

नीम के ५ बीजों की गिरी पीसने के बाद फांककर पानी की घूट भर लें। दिन में ३ बार इसका सेवन करें तो दस्त रुक जाते हैं और दस्त लगने की पुरानी बीमारी भी इससे दूर हो जाती है।

दमा

कहावत है कि 'दमा दम के साथ जाता है' लेकिन नीम तेल दमें को जड़ से उखाड देता है। पानी में नीम का शुद्ध तेल १० बूंद डालकर चबाकर निगल जाये। ऐसा दिनभर में ६ बार करने से तीन महीने बाद दमें का दम निकल जाता है।

कम दिखाई देना

नीम के फूल छाया में सुखाये हुए में कलमी शेरा पीसकर छानकर सुर्मे जैसा बनालें। सुबह-शाम आंखों में १-१ सलाई आंजने से आंखों की ज्योति दिन-ब-दिन बढने लगती है।

पतिंगों से परेशानी

रोशनी पर गर्मियों में पतिंगे आकर परेशान करते हैं। अगर नीम के तेल से दीपक जलाए तो पतिंगे उधर आने मे भी घबरायेगे।

बवासीर

बवासीर खूनी हो या बादी नीम इसकी जड़ हिला देता है। बवासीर का रोग खून से सीधा सम्बन्ध रखता है और नीम खून का नियन्त्रण बखूबी करता है। नीम की अन्दरवाली छाल ३ ग्राम और गुड ५ ग्राम पीसकर गोलिया बनाकर निगले और बवासीर में खून रोकने के वास्ते प्रतिदिन ४-५ निमौलिया खाना शुरु करें। रोजाना किसी के साथ भी ५ बूद नीम तेल पियें और यही तेल मस्सों पर लगाए तो बवासीर का नाश होता है।

रतौंधी

रतौंधी में रात को कम दिखाई देता है या बिल्कुल दिखाई नहीं देता है। निमौलिया कच्ची ३-४ तोड लाइये। निमौली फोडकर उसमें सलाई घुमाकर आंखों में आंजने से रात को सामान्य दिखाई देने लगता है।

—परशु पाटीदार

- ठण्डे पानी से हाथ-पैर धोकर पैर के तलवे में तेल मालिश करके सोने से अच्छी निद्रा आती है और स्वप्नदोष आदि का भय नहीं रहता है।
- चिरस्थायी स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए 'सात्विक भोजन' और अच्छी नींद तथा 'ब्रह्मचर्य' का पालन करना मानवमात्र के लिए अनिवार्य है।
- सुबह नाश्ते मे चाय न लेकर अंकुरित चने लें क्योंकि चाय स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है।

साभार दैनिक जनसन्देश २४-११-९१

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को दान

श्रीमती सुदेशरानी धर्मपत्नी श्री हरबंशलाल जी गुप्त मकान नं० ८४१/१५ फरीदाबाद ने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद के निर्धन छात्रों के लिये १२ रजाइयां तथा १२ तलाइयां प्रदान की हैं। स्मरण रहे इन्होंने आर्यसमाज सैक्टर १५ फरीदाबाद मे भी सत्सग हेतु एक बड़ा हाल तथा यज्ञशाला आदि के निर्माण हेतु उदारतापूर्वक दान देकर अनुसरणीय कार्य किया है।

इसी प्रकार स्वर्गीय श्री जगन्नाथ जी सेठ की सुपुत्री श्रीमती शशिप्रभा मकान नं० १४३७, सैक्टर १५ फरीदाबाद ने अपने पिताजी की स्मृति मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को अपने करकमलो से फल वितरीत किये हैं। उपरोक्त दानी महानुभावों को गुरुकुल परिवार की ओर से धन्यवाद किया गया।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसमाज कासंढी का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

दीपावली के उपलक्ष्य पर ३० अक्तूबर, १९९१ से स्वामी वेद रक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व मे एक सप्ताह का यज्ञ तथा वेदकथा का कार्य सुचारु-रूप से चला। आरम्भ के तीन दिनों में हरयाणा सभा के भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द जी महाराज ने शराब, मांस, बीड़ी आदि कुरीतियो को छोडने तथा वैदिकधर्म का प्रचार किया। अन्तिम तीन दिन दीवाली तक उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव जी बेधड़क ने क्रान्तिकारी प्रचार किया। जिससे नौजवानो में जागृति [illegible] उत्साह प्राप्त हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति पर स्वामी धर्मानन्द जी महाराज आर्यसमाज पानीपत ने भी दीपावली तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण पर मार्मिक विचार प्रस्तुत किये।

वानप्रस्थी महानन्द, सोनीपत ह(र०)

हिन्दी को मौलिक रूप में इस्तेमाल किया जाए

समाचार सेवा

गुड़गांव, २२ नवम्बर। हिन्दी को अनुवाद की भाषा के रूप में न अपनाकर मौलिक एवं सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर अपनाया जाना चाहिए। बैंकिंग प्रणाली में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि अनुवाद के साथ-साथ भाषा के मौलिक प्रयोग पर बल दिया जाए। इससे हिन्दी को नई शक्ति मिलेगी।

उपरोक्त विचार हिन्दी के प्रख्यात समालोचक डा० नामवरसिंह ने व्यक्त किये। वह इलाहाबाद बैंक कर्मचारी महाविद्यालय में बैंक के राजभाषा अधिकारियों की पन्द्रह दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि मैं हिन्दी को उस रूप में देखना चाहता हूं जिसमें वह रोज इस्तेमाल की जाती है। उन्होंने कहा कि लोग विकास की मांग करते हैं जबकि हम हिन्दी भाषा के इस्तेमाल की बात करते हैं। उन्होने बताया कि प्रयोग और प्रचलन में न होने से अच्छी से अच्छी भाषा भी कोशिशों में धरी रह जाती है।

डा० सिंह ने भाषा में लोकतान्त्रिकता को बनाए रखने पर बल देते हुए कहा कि हिन्दी भाषा को लेकर हिन्दुस्तानियों में जो पूजाभाव विद्यमान है, उसे त्यागकर हम उसे अपने आप सहजरूप से इस्तेमाल मे आने दें।

विषय प्रवर्तन करते हुए डा० महेशचन्द गुप्त ने इसे एक शुभ संकेत बताया कि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के वरिष्ठ साहित्यकार अब सरकारी क्षेत्र में हिन्दी प्रयोग सम्बन्धी कार्यक्रमों में हिस्सा लेने लगे हैं। इसका एक अच्छा परिणाम यह होगा कि उन्हें इस तथ्य का पता चलेगा कि अब सरकारी संस्थानों में हिन्दी भाषा का प्रयोग समुचित रूप से होने लगा है। उनके द्वारा समाज भी इस तथ्य से अवगत होगा।

बैंक में मण्डल प्रमुख के. सो. रिखी ने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं के आयोजन का महत्त्व इसलिए अधिक है कि इनसे बैंक के राजभाषा अधिकारियो द्वारा संस्थान में हिन्दी भाषा के प्रयोग को और अधिक बढ़ावा मिलता है तथा पहले की उपलब्धियों का जायजा मिलता है।

इस अवसर पर सहायक महाप्रबन्धक के०एल० अरोड़ा, प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य जी० के० सक्सेना एवं बैंक के राजभाषा प्रबन्धक श्यामसुन्दर चतुर्वेदी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

साभार · दैनिक नवभारत २३-११-९१

हिन्दीभाषी क्षेत्रों के बदले ही चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाये

रोहतक, २२ नवम्बर (ट्रिब्यू)। हरयाणा जनता दल ने पंजाब समस्या को हल करने के नाम पर हरयाणा को हिंदीभाषी क्षेत्र दिये बिना चण्डीगढ़, पंजाब को सौंपने के किसी भी प्रस्ताव का जोरदार विरोध किया है। हरयाणा जद ने मांग की है कि पंजाब समस्या को हल करते समय हरयाणा से सम्बन्धित हितों की रक्षा की जाये और प्रदेश की जनता को विश्वास में लेना चाहिये।

प्रदेश जनता दल की राज्यस्तरीय कोर समिति के वरिष्ठ सदस्य और पूर्वमन्त्री हीरानन्द आर्य ने आज यहां एक विशेष भेंट में कहा कि अगर केन्द्र ने अकालियों और खाड़कुओं को खुश करने के लिये हरयाणा के हितों की कुर्बानी दी तो इससे पंजाब समस्या हल नहीं होगी और हरयाणा में रोष बढ़ जायेगा।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून २३-११-९१

जुलूस निकाल बच्चों ने बड़ों को चेताया

गुड़गांव, (ससे)। रोटरी पब्लिक स्कूल के बच्चों ने शहर के प्रमुख बाजारों में धूम्रपान के विरोध में जुलूस निकाला। ये बच्चे अपने हाथों में गत्ते से बनी तख्तियां लिए हुए थे। इन तख्तियों पर धूम्रपान तथा मादक द्रव्यों के नुकसानों के बारे में नारे लिखे हुए थे। शहर के लोगों ने बच्चों के इस प्रयास को खूब सराहा।

जुलूस कबीर भवन चौक के पास एक सभा में परिवर्तित होगया। सभा को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ रोटेरियन राजेश सूटा ने कहा कि बच्चों के ऐसे प्रयासों का समाज के ऊपर ज्यादा अच्छे ढंग से असर होता है।

भारतीय युवकों में धूम्रपान तथा नशीली दवाओं के सेवन की बुरी लत बढ़ती जारही है। यदि इसे आज से ही रोकने के प्रयास नहीं किये गये तो हमारी एक पूरी पीढ़ी पंगु हो जाएगी।

उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि नशीली दवाओं के सेवन करने वालों का इलाज सहानुभूतिपूर्वक किया जाना चाहिए। पथभ्रष्ट लोगों को समाज की सहानुभूति तथा प्यार की अधिक आवश्यकता होती है।

साभार : दैनिक नवभारत २५-११-९१

ग्राम गोरछी (हिसार) में वेदप्रचार

दिनांक १८-११-९१ को आयसमाज गोरछी को ओर से वेदप्रचार का आयोजन किया गया। जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी सभा उपदेशक, श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने आर्यसमाज का इतिहास, राष्ट्र रक्षा, गोरक्षा तथा शराबबन्दी बारे ओजस्वी विचार रखे। पं० ईश्वरसिंह एवं पं० सुमेरसिंह जी के समाज-सुधार के भजन हुए। प्रातःकाल आर्यसमाज मन्दिर में हवन किया गया। पंचमहायज्ञ, आत्मा-परमात्मा तथा विद्यार्थियों के कर्त्तव्य बारे विचार रखे। हवन पर श्री सुलतानसिंह प्रधानाचार्य महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थियों को साथ लेकर पधारे। कार्यक्रम बहुत ही रोचक एवं प्रेरणाप्रद रहा।

—फूलसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज गोरछी

आर्यसमाज सोराटाडा (गंगानगर) राज० का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री फूलाराम आर्य, उपप्रधान—दरियासिंह आर्य, मनोहरलाल आर्य, मन्त्री—गंगाराम आर्य, उपमन्त्री—शीशपाल आर्य, कोषाध्यक्ष—रामप्रसाद आर्य, प्रचारमन्त्री—धनपत आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—रामजीलाल आर्य, संरक्षक—काशीराम आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि नं० P, RTK-८१

मुद्रिसमन १,१९, ०८, ५३, ०१२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ४ १४ दिसम्बर, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

ऋषि दयानन्द का जीवन : कुछ विचारणीय बातें

(डा० भवानीलाल भारतीय)

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय नवजागरण के प्रमुख ज्योतिर्धर महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक विश्वसनीय तथा ऐतिहासिक गवेषणा से परिपूर्ण प० लेखराम आर्य पथिक द्वारा लिखित जीवन-चरित है। स्वामी दयानन्द के तेजस्वी एवं प्रतिभापूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व से आकृष्ट होकर लोगों ने उनके जीवनकाल में ही उनके वैयक्तिक जीवन के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करनी चाही थी। इसके परिणामस्वरूप स्वामी जी ने प्रथम तो ४ अगस्त, १८७५ को पुणे में व्याख्यान देकर अपने जीवनवृत्त की कुछ प्रमुख घटनाओं से श्रोताओं को अवगत कराया था। पुनः अंग्रेजी पत्र 'थियोसोफिस्ट' के आग्रह पर उन्होंने अपना आत्म-वृत्तान्त क्रमशः प्रकाशनार्थ भेजना प्रारम्भ किया। जिसकी ३ किस्तें ही उस पत्र में छप सकीं। इसके तुरन्त बाद स्वामी जी अस्वस्थ होगये और ३० अक्तूबर, १८८३ को उनका निधन होगया।

स्वामी जी के जीवनकाल में उनके जीवनचरित को निबद्ध करने का एक व्यवस्थित प्रयत्न फर्रुखाबाद निवासी पं० गोपालरावहरि ने किया था जो मूलतः महाराष्ट्रवासी थे, किन्तु वर्षों से फर्रुखाबाद में निवास करते थे। पं० गोपालराव ने 'दयानन्द दिग्विजयार्क' शीर्षक से ३ खण्डों में महाराज के जीवन-वृत्तांत को निबद्ध किया। इसके दो खण्ड तो स्वामी जी के जीवनकाल में ही प्रकाशित होगये थे जबकि अन्तिम खण्ड उनके परलोकगमन के पश्चात् मुद्रित हुआ। स्वामी दयानन्द का यह आग्रह रहता था कि उनके जीवन की घटनाओं को बिना किसी प्रकार की अतिरञ्जना किये, वास्तविक एवं तथ्यात्मक ढंग से वर्णित किया जाए। इस सन्दर्भ में हमें स्वामी जी द्वारा पं० गोपालरावहरि को दी गई उस प्रताड़ना का स्मरण करना चाहिए जिसमें उन्होंने स्पष्ट कहा था कि जब आपको मेरा इतिहास ठीक-ठीक विदित नहीं तो उसके लिखने का कभी साहस मत करो, क्योंकि थोड़ा-सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोष कृत्य भी बिगड़ जाता है। बात यह हुई थी कि पं० गोपालराव ने दयानन्द दिग्विजयार्क में यह लिख दिया था कि चित्तौड़ प्रवास के समय महाराणा उदयपुर नित्यप्रति दो बार स्वामी जी से भेंट करने आते थे, जबकि वस्तुस्थिति उससे भिन्न थी। स्वामी जी की महाराणा से इस दौरान केवल तीन बार ही भेंट हुई थी। स्वामी जी की नाराजगी का यही कारण था।

स्वामी जी के निधन के पश्चात् उनके अनुयायी आर्यसमाज को महाराज का प्रामाणिक जीवनचरित तैयार कराने की चिन्ता हुई। फलतः आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपनी अन्तरंग सभा की बैठक में एक प्रस्ताव स्वीकार कर यह निर्णय किया कि स्वामी दयानन्द का बृहत् एवं प्रामाणिक जीवनचरित लिखने का दायित्व प० लेखराम जैसे महानुभाव के सुपुर्द किया जाये, जिनमें शोध एवं अनुसंधान की प्रवृत्ति के साथ-साथ स्वामी महाराज के चरित्र एवं व्यक्तित्व के प्रति अगाध श्रद्धा एवं अटूट निष्ठा भी है। यह निर्णय सर्वथा उचित ही था। सभा के आदेश को स्वीकार कर प० लेखराम भी महाराज के जीवन विषयक तथ्यों का संग्रह करने के लिये देशभ्रमण हेतु निकले। भारत सुदर्शा प्रवर्त्तक (फर्रुखाबाद) के जनवरी १८८९ ई. के अंक में प्रकाशित सूचना के अनुसार प० लेखराम ने स्वामी जी के जीवन से सम्बन्धित सामग्री का संग्रह करने के लिए सर्वप्रथम १८ दिसम्बर, १८८८ को लाहौर से मथुरा के लिए प्रस्थान किया था। इसके पश्चात् वे सर्वत्र घूम-घूमकर इस विषय से सम्बद्ध तथ्यों और घटनाओं को तलाश करने में रात-दिन एक करने लगे।

यह दुर्भाग्य ही था कि जीवनचरित विषयक महत्त्वपूर्ण उपादान सामग्री का समग्ररूप से संग्रह करने के पश्चात् भी पं० लेखराम स्व-जीवनकाल में उसे पूरा नहीं कर सके। ६ मार्च, १८९७ को अमर धर्मवीर पं० लेखराम का बलिदान होगया और स्वामी दयानन्द का यह महत्त्वपूर्ण जीवनचरित उनकी लेखनी से पूर्ण नहीं हो सका। बाद में, जैसाकि हम जानते हैं, स्वामी श्रद्धानन्द के अनन्य सहयोगी एवं विश्वासभाजन पं० आत्माराम अमृतसरी जी को इस जीवनचरित को व्यवस्थित कर सम्पादित करने का भार सौंपा गया और पं० लेखराम के परिश्रम को उस समय सार्थकता मिली, जब १८९७ ई० के अन्त तक यह ग्रन्थ उर्दू में प्रकाशित हो सका।

यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब कालांतर में पं० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द तथा अन्य अनेक लेखकों ने स्वामी जी के जीवनचरित लेखन में भूरिशः प्रयत्न किये और उनके परिश्रम के परिणामस्वरूप स्वामी दयानन्द के अनेक जीवनचरित अनेक भाषाओं में लिखे जाकर प्रकाशित भी हुए, तो पं० लेखराम के द्वारा संगृहीत सामग्री के आधार पर लिखे गये इस जीवनचरित की क्या महत्ता तथा उपयोगिता है? यहां हम संक्षेप में इसी बात पर विचार करेंगे।

सर्वप्रथम तो हमें यह जानना चाहिए कि पं० लेखराम ने स्वामी जी के जीवन विषयक तथ्यों की खोज का कार्य जिस समय आरम्भ किया था उस समय तक इस देश की धरती पर सहस्रों लोग जीवित थे जिन्होंने स्वामी जी को अपने चर्म-चक्षुओं से देखा था, उनके सम्पर्क में आये थे तथा जिनको महाराज के उपदेशामृत पान करने का स्वर्णिम अवसर भी प्राप्त हुआ था। पं० लेखराम ने ऐसे अनेक लोगों से व्यक्तिगत भेंटकर उनके द्वारा दिये गये विवरणों को लेखनीबद्ध किया था। प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट संख्या १ में हमने उन महानुभावों की एक विस्तृत सूची प्रस्तुत की है जिनसे व्यक्तिशः मिलकर अथवा उनमें से कुछ से पत्राचार द्वारा सम्पर्क स्थापित कर प० लेखराम ने स्वामी दयानन्द विषयक उनके संस्मरणों को लिपिबद्ध किया था। स्वामी जी के सम्पर्क में आये लोगों से मिलने तथा उनके बयानों को कलम बन्द करने की यह सुविधा बहुत कुछ प० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय को भी प्राप्त हुई थी, क्योंकि उन्होंने भी बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में देश का सर्वत्र भ्रमण कर उन लोगों से सम्पर्क स्थापित करने का सफल यत्न किया था जो स्वामी महाराज का सान्निध्य लाभ कर सके थे।

(क्रमशः)

पंजाब में सेना की तैनातगी

केन्द्र सरकार ने पूरे पंजाब राज्य को गड़बड़ग्रस्त घोषित करते हुए इसके सीमांत जिलों तथा अन्य संवेदनशील इलाकों को सेना के हवाले कर दिया है। अभियान रक्षक नाम की इस नई रणनीति के अन्तर्गत पाकिस्तान से लगी हुई पंजाब राज्य की पूरी सीमा सील करके सेना तथा सुरक्षाबलों द्वारा संयुक्त रूप से आतंकवादियों के विरुद्ध एक व्यापक अभियान चलाया जायेगा। पंजाब में सेना की तैनातगी बहुत देर से उठाया गया, लेकिन निश्चित रूप से एक सही कदम है। आज समूचा पंजाब आतंकवाद से बुरी तरह पीड़ित है। इन गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए आतंकवादियों की हिंसात्मक गतिविधियों पर अंकुश लगाना अति आवश्यक होगया है, क्योंकि इस समय सिविल प्रशासन पुलिस बल की मदद से आतंकवाद के विस्तार को रोकने में अक्षम सिद्ध हो रहा है। यह ठीक है कि केवल सेना की तैनातगी से ही पंजाब समस्या का कोई स्थाई समाधान नहीं निकलने वाला, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में बढ़ते हुए आतंकवाद के विरुद्ध केवल सेना ही एक सशक्त विकल्प दिखाई देता है।

लगता है कि केन्द्र सरकार पंजाब में १५ फरवरी से पहले चुनाव करवाये जाने के अपने निर्णय के प्रति काफी गम्भीर है और यह सब कुछ उसी योजना के अन्तर्गत हो रहा है। पंजाब में सेना की तैनातगी को लेकर बहुत से अकाली नेताओं तथा उनके सहयोगी संगठनों ने हमेशा की तरह काफी हायतौबा मचाई है और इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताया है, जबकि वास्तविकता यह है कि स्वयं उन्होंने कभी गम्भीर होकर सच्चे दिल से पंजाब समस्या को सुलझाने की दिशा में कोई कार्य नहीं किया। ऐसे ही नैतिकबल विहीन नेताओं की वजह से आज तक आतंकवाद के विरुद्ध आम सहमति का कोई राष्ट्रीय-नीति नहीं बन पाई है। मानवता की दुहाई देनेवाले इन नेताओं को सेना अथवा सुरक्षाबलों के अत्याचार तो दिखाई दे जाते हैं, लेकिन आतंकवादियों द्वारा की जारही सैंकड़ों निर्दोष एवं मासूम लोगों की वहशियाना हत्यायें, लूटपाट तथा अन्य अमानवीय कारवाहियां दिखाई नहीं देतीं। विधवाओं तथा मासूम बच्चों की आहें, उनकी करुण पुकार इनके कानों तक नहीं पहुंचती। आलोचकों का यह कथन बिल्कुल बेमानी है कि पंजाब में सेना का उपयोग करने से पहले और अधिक संयम से काम लिया जाना चाहिए था। अब संयम की ऐसी कौन-सी सीमा शेष बची है जिसे निर्धारित किया जा सकता है? यह कहना भी बिल्कुल अनर्थक है कि सेना केवल देश की बाहरी खतरों से रक्षा के लिए है, उसे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप से दूर रखा जाना चाहिए। जब देशद्रोही शत्रु देश के भीतर ही मौजूद हो तो बाहरी खतरों से देश की रक्षा तो बाद की बात है। अब यह बात बिल्कुल साफ हो चुकी है कि हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान ने इन राष्ट्रविरोधी आतंकवादियों के माध्यम से भारत के विरुद्ध एक अघोषित युद्ध छेड़ रखा है। ऐसी स्थिति में इन शक्तियों के विरुद्ध सेना के उपयोग को अनुचित कैसे माना जा सकता है?

आज प्रश्न सेना की तैनातगी का विरोध करने अथवा स्वागत करने का नहीं, अपितु देश की एकता और अखण्डता की रक्षा करने का है। आज प्रश्न आतंकवाद के फैलाव को रोकने तथा बेगुनाह लोगों के जान-माल की सुरक्षा का है। मौजूदा परिस्थितियों में केवल हमारी सेना ही इस कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम दे सकती है। आतंकवादियों के घिनावने मन्सूबों ने देश की अस्मिता को गम्भीर संकट में डाल दिया है, लेकिन इस बात की पूरी आशा की जा सकती है कि जिस प्रकार हमारी सेना ने समय-समय पर देश को बाहरी तथा भीतरी संकटों से रक्षा की है, उसी प्रकार यह राष्ट्रविरोधी आतंकवादी शक्तियों का भी सफलतापूर्वक दमन करने में सक्षम होगी। सर्वप्रथम आतंकवादियों का पाकिस्तान से जुड़ा सम्पर्क स्थाई रूप से तोड़ना अति आवश्यक है अन्यथा यह कारवाई एक लम्बी और थका देनेवाली प्रक्रिया बनकर रह जायेगी। इसके अतिरिक्त पंजाब के पड़ोसी राज्यों हरयाणा, हिमाचल, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश के तराईवाले क्षेत्रों में भी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की जानी चाहिए। क्योंकि आतंकवादियों ने इन राज्यों में भी अपनी जड़ फैला रखी हैं। सेना द्वारा खदेड़े जाने पर यह आतंकवादी पड़ोसी राज्यों में घुसकर हिंसक कारवाइयां कर सकते हैं। अतः यह अभियान अत्यन्त सुनियोजित ढंग से चलाया जाना चाहिए।

इसमें कोई दो राय नहीं कि पंजाब समस्या का स्थाई समाधान केवल राजनैतिक प्रक्रिया द्वारा ही सम्भव है, लेकिन राजनैतिक प्रक्रिया के अनुकूल माहौल भी तो बनना चाहिए। इसके साथ-साथ पंजाब को नैतिक रूप से एक दृढ़ नेतृत्व की भी आवश्यकता है जो राष्ट्रहितों को बढ़ावा दे सके। लेकिन ऐसे कायर नेताओं से कोई अपेक्षा नहीं की जा सकती जो आतंकवाद के विरुद्ध एक शब्द कहने से भी डरते हैं। पंजाब में जल्द से जल्द चुनाव हों, इससे किसी को विरोध नहीं हो सकता। बशर्ते कि चुनाव स्वतन्त्र, निष्पक्ष तथा भयमुक्त वातावरण में हों। एक ४७ राइफलों के खौफनाक साये में अथवा खालिस्तान को चुनावी मुद्दा बनाकर सम्पन्न हुए चुनावों का परिणाम देश के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध होगा। बहरहाल पंजाब में सेना की तैनातगी पर एक सामान्य नागरिक सन्तोष ही व्यक्त करेगा। सेना की उपस्थिति से राज्य में लोगों का मनोबल ऊंचा होगा और सामान्य स्थिति बहाल करने में काफी मदद मिलेगी। आशा है कि केन्द्रीय सरकार पंजाब समस्या के स्थाई समाधान के लिए गम्भीरता से निरन्तर प्रयास करते हुए एक स्पष्ट नीति तय कर पाने में सफल होगी।

सुशीलकुमार शर्मा
शिवाजी नगरबस्ती दानिशमंदा
जालन्धर (पंजाब)

ग्राम कंवारी (हिसार) में वेदप्रचार की धूम

दिनांक ४-५-६ दिसम्बर, ९१ को ग्राम कंवारी में वेदप्रचार का आयोजन किया गया। जिसमें पं० सत्यवीर शास्त्री एवं प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने धर्म क्या है, नवयुवकों का कर्त्तव्य तथा शराबबन्दी बारे इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। पं० जवरसिंह खारी की भजनमण्डली के समाज सुधार के क्रांतिकारी भजन हुए। प्रतिदिन चौपाल में हवन किया गया। कार्यक्रम बहुत ही प्रेरणाप्रद एवं रोचक रहा।

सूबेदार रामेश्वरदास आर्य
मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

शोक समाचार

बड़े खेद के साथ सूचित किया जाता है कि श्री सूबेसिंह आर्य गांव कुराड़ इब्राहिमपुर, जिला सोनीपत का २१-११-९१ को हृदयगति रुकने से स्वर्गवास होगया। वे गांव की आर्यसमाज के मन्त्री रह चुके हैं। १९६७ के गौ सत्याग्रह में जेल गए। इन्होंने सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए गांव में तथा आसपास के गांवों में आर्यसमाज के प्रचार के लिए जीवन्त प्रयास किया।

मन्त्री आर्यसमाज
कुराड़ इब्राहिमपुर, जिला सोनीपत

❀ नारी के उत्थान-पतन पर राष्ट्र का उत्थान-पतन निर्भर है।
—अरस्तू

❀ नारी का सम्पर्क ही उत्तम शील का आधार है। —गेटे

❀ काव्य और प्रेम दोनों नारी की सम्पत्ति हैं। नर विजय का भूखा होता है और नारी समर्पण की। पुरुष लूटना चाहता है और नारी लुट जाना।
—महादेवी वर्मा

ओ३म् शान्तिः-शान्तिः-शान्तिः

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यजुर्वेद ३६।१७

इस मन्त्र का अर्थ है (द्यौ) द्युलोक (शान्तिः) शान्तियुक्त अर्थात् शान्त है। (अन्तरिक्षं शान्तिः) अन्तरिक्ष लोक शांतियुक्त है। (पृथिवी शांति) पृथ्वी शान्तियुक्त है (आपः शान्तिः) जल शांतियुक्त है (विश्वेदेवा शान्तिः) सब दिव्य पदार्थ शान्तियुक्त हैं। (ब्रह्म शान्तिः) वेद विद्या शांतियुक्त है (सर्वम् शान्तिः) सब कुछ शान्तियुक्त है। यह दस वस्तुयें शान्तिवाली हैं। जो शान्ति इन सबको ठीक तरह रख रही है (सा शान्तिः) वही शांति (मा) मुझे अर्थात् मुझ प्रभु-भक्त को भी (एधि) प्राप्त हो। शांति शब्द संस्कृत की 'शम्' धातु से क्तिन् प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग में शांति शब्द बनता है। इस 'शमु' (शम्) शब्द का अर्थ है उपशम या समन्वित होना। समन्वित होने का अर्थ है बिना किसी टकराव या उलझन किए अपने काम करते चले जाना। आप जरा इस विशाल ब्रह्मांड या संसार की रचना पर विचार कीजिए। ब्रह्मांड में असंख्यनक्षत्र तारे, ग्रह, उपग्रह हैं। कभी सोचिए तो सही कि यह पृथ्वी हमारे लिए कितनी विशाल है। परन्तु सवेरे चमकने वाला और विशाल भूमण्डल को जगमगाने वाला यह सूर्य कितना बड़ा है इस पृथ्वी से ! इसमें तेरह लाख पृथ्वियां समा सकती हैं। परन्तु इस ब्रह्मांड में इस सूर्य की स्थिति समुद्र में बूंद के बराबर है। ऐसे एक करोड़ सूर्य ज्येष्ठा नाम के तारे में समा सकते हैं और कुछ पुराने खगोलविद् बताते हैं कि ऐसे परम ज्येष्ठा, महा ज्येष्ठा नाम के अन्य तारे भी इनसे बड़े हैं। अगस्त्य तारा तो यहां तक कहा जाता है कि इनको परास्त कर देता है। जानते हैं, आपने सर्दियों में, अन्धेरी रात में आकाश में बहती-सी आकाश गंगा देखी होगी। इस आकाश गंगा के तारों को गणना करके बताया गया है कि इसमें १७६३ के बाद १६ शून्य बैठाने पर जितनी संख्या होगी उतने ग्रह, नक्षत्र, तारे और सूर्य हैं इस आकाश गंगा में। परन्तु जरा भी अशान्ति कहीं नहीं। एक रेलगाड़ी (छोटी-सी) जब पास से गुजरती है तो वह छोटी-सी वस्तु कितना शोर कर जाती है, परन्तु इस ब्रह्मांड के नक्षत्र आदि किस प्रकार चलते हैं कि जरा भी अशान्ति नहीं होती। हमारे कानों में उनका शोर नहीं आता है। बड़े-बड़े इन पिण्डों की गति का शब्द क्या सुना है आपने ? भाव निर्माता ने ऐसे बनाए हैं कि एक सीमा से अधिक और एक सीमा से कम भी शब्द नहीं सुन सकते। दूरबीन के सूक्ष्मदर्शक यन्त्रों से ब्रह्मांड पर नजर डालिए, द्युलोक के नक्षत्र और तारों को देखिए तो कभी-कभी ऐसा लगेगा कि दो तारे टकरा जायेंगे, परन्तु वे दांए-बाएं निकल जाते हैं। इसका मतलब होता है—समन्वित होना। आप कभी कोई फल लीजिए। उस फल में खट्टा, मीठा, नमकीन अनेक प्रकार के पदार्थ मिले होते हैं परन्तु प्रभु ने इस ढंग से मिलाया है कि वे समन्वित होकर मिलकर एक विशेष स्वाद देते हैं। उसी प्रकार प्रकृति के पंचतत्वों को देखने से पता चलेगा कि जल आक्सिजन और हाइड्रोजन से मिलकर बनता है, पर बिना किसी संघर्ष के वे जल बनाते रहते हैं। यह भी तो समन्वय की भावना है।

संगीत के 'स र ग म प ध नी' सात स्वर हैं और इनको समन्वित करने से एक संगीत उत्पन्न हो जाता है। यह संगीत वर्षा करा सकता है, दीपक राग दीए जला सकता है, यह राग पशु पक्षियों को मुग्ध कर सकता है। अकबर और तानसेन की बात आपने सुनी होगी ? तानसेन के गुरु थे हरिदास। एक बार हरिदास का गाना सुनकर जंगल का आकाश गूंज उठा, वृक्ष और पौधे झूम उठे, जंगल के हरिण हरिदास के पास आकर खड़े होगए, पक्षियों ने चहचहाना बन्द कर दिया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि चलती हवा भी ठहर गई है। यह संगीत क्या है ? शब्दों का समन्वित रूप।

इस मन्त्र पर जब हम विचार करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि इसमें वर्णित द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथ्वी, जल, औषधियां, वनस्पतियां सब पदार्थ शान्ति से युक्त हैं। वह शान्ति मुझे भी प्राप्त हो। अर्थात् सर्वत्र शान्ति है, पर मेरा मन शांत नहीं, वह बेचैन है, उसे सन्तोष नहीं, उसे कुछ भी दिया जाये, फिर भी वह अधिक की कामना में रहता है। मनुष्य का मन शान्त नहीं, चारों ओर में चिल्ल-पों मची है, संसार अशांति का घर है। हमारे मनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, शंका, भ्रान्ति, व्याधि आदि का जन्म हो रहा है। इन्द्रियां बहिर्मुखी हैं, इसी से केवल बाहर की वस्तुओं को देखती हैं, अन्तरात्मा को नहीं देखती। कोई विवेकशील पुरुष ही अमृतत्व या शान्ति की शुभ इच्छा से इन इन्द्रियों को अन्तर्मुखी करके अन्तरात्मा को देख पाता है। अज्ञानी मनुष्य बाह्यविषयों की ओर दौड़ते हैं, इसी में सर्वत्र व्याप्त मृत्यु के फन्दे में फंस जाते हैं, परन्तु ज्ञानी मनुष्य अमृतत्व को जानकर शांति को प्राप्त होते हैं। संसार के विषय मनुष्य को अपने में बांधकर अशांति के खंदक में डाल देते हैं। विषयों में बन्धन की वह ताकत है जो मोटे से मोटे रस्से में नहीं, मजबूत लोहे की जंजीरों में नहीं। विषय शब्द का अर्थ "विशेषेण सिनन्ति बध्नन्ति इति विषयाः" जो अच्छी प्रकार से बांधे उन्हें विषय कहते हैं। संस्कृत के निम्नलिखित श्लोकों में विषयों की व्यापकता का उल्लेख किया गया है—

> भिक्षाशनं तदपि नीरसमेकवारं,
> शय्या च भू परिजनो निजदेहमात्रम्।
> वस्त्रं च जीर्णं शतखण्डमयी च कन्था,
> हा हा तथापि विषया न परित्यजन्ति ॥

भीख का नीरस भोजन है, पृथ्वी ही शय्या है, शरीर ही परिवार है, सैकड़ों छिद्रों के रूप में फटा हुआ कपड़ा ही वस्त्र है, तब भी मनुष्य को विषय कभी छोड़ते नहीं। एक दूसरे श्लोक में कहा गया है—

> कृशः काणः खञ्जः श्रवणरहितः पुच्छविकलो
> व्रणी पूयक्लिन्नः कृमिकुलशतैरावततनुः।
> क्षुधाक्षामो जीर्णः पिठरजकपालार्पितगलः
> शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च हन्त्येव मदनः ॥

कमजोर, काना, लंगड़ा, कानों से रहित, पूंछहीन, घावों से भरे हुए और हजारों कीड़े जिसमें भर रहे हैं ऐसे घावों वाले, भूख से व्याकुल, जीर्ण, जिसके लटके हुए गले में बूल चिपटी हुई है ऐसा कुत्ता कुतिया के पीछे लगा रहता है। कवि कहता है कि अरे कामदेव ! तुम मरे हुए को भी मारनेवाले हो। विषय भोगे जाते हुए अत्यन्त रमणीय हैं, पर वे 'पर्यन्तपरितापिन' अन्त में कष्ट देने वाले होते हैं, शान्ति नहीं।

दुःख संसार में तीन प्रकार के हैं—

आध्यात्मिक जैसे क्रोधादि। आधिदैविक जो जगत् के जड़ पदार्थों द्वारा प्राप्त होते हैं जैसे अतिवृष्टि, बाढ़, सूखा, ओला, पत्थर गिरना, गढ़वाल जैसे भूकम्प आदि। तीसरे प्रकार के अशांति के कारण हैं आधिभौतिक दुःख अर्थात् वे दुःख जो हमें मनुष्य या दूसरे प्राणियों से प्राप्त होते हैं। चोर हमारा माल चुरा लेता है। चूहे खेत खा जाते हैं आदि। इन तीन प्रकार के दुःखों और अशांति से भाग पाने के लिए मनुष्य चिल्ला पड़ता है। शान्तिः शान्तिः शान्तिः। हे परमपिता हमें दुःखों से छुटकारा दिलाओ, दिलाओ, दिलाओ।

शांति के प्रकरण में शांति के विपरीत क्रांति शब्द का अर्थ भी समझ लेना चाहिए। संस्कृत की क्रमु (क्रम) का अर्थ है पाद विक्षेप या आगे बढ़ना। इस प्रकार शांति शब्द प्रगति शून्यता का सूचक नहीं और इसी प्रकार क्रांति शब्द किसी वस्तु या व्यवस्था को तोड़ने-फोड़ने और अव्यवस्था करने को नहीं कहते। परन्तु सड़ी-गली, अन्धविश्वासी परम्परा को तोड़कर उसके स्थान पर नई व्यवस्था को कायम करना, जिससे मनुष्य को शांति मिले वही क्रांति है।

अन्त में आइए हम वैदिक शांति गीत का गान करें—

> शांति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में।
> जल में, थल में और गगन में।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

गतांक से आगे—

		रुपये
१	श्री डा० मनोहरलाल आर्य प्रधान आर्य कन्या पाठशाला कैथल	११००
२	,, रमेशदेव आर्य ग्राम जसराना, जिला सोनीपत	१००
३	,, आर० पी० शर्मा उपमन्त्री आर्यसमाज नई मण्डी मुज्जफरनगर	७५
४	,, मनोहरलाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज बोगोपुर, पो० घोलेहड़ा, जि० महेन्द्रगढ	२०१
५	श्रीमती बिमल बसल कोषाध्यक्ष आर्यसमाज मन्दिर रादौर, जि० यमुनानगर	५०१
६	श्री इन्द्रसिंह रिसलदार (धौड) आर्यनगर झज्जर जिला रोहतक	१००
७	,, निहालसिंह आर्य अध्यापक ग्राम जसौरखेडो जिला रोहतक (सार्वदेशिक सभा में भी दीपावली पर १०० रु० सहायतार्थ भेज चुका)	१००
८	,, बलवन्तसिंह आर्य मकडौली कला, जि० रोहतक	१००
९	,, आर्यसमाज मेन बाजार नारायणगढ जि० अम्बाला	१७५०
१०	गुप्त दान मननालो व कासनी द्वारा म० दीपचन्द आर्य कासनी, रोहतक	२ कम्बल, १ लोई, १ सूती खेस
११	गुप्त दान ,, ,, ,, ,,	११ रजाइयां
१२	श्री नत्थूराम मेनी १०८४/३५ सिविल लाईन, रोहतक	२ कम्बल १८ कपड़े
१३	मन्त्री आर्यसमाज कैथल	३ बोरी वस्त्र
१४	महाशय भगवान्‌सिंह आर्य दूबलधन, जि० रोहतक	११११

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित आर्यसमाजों ने भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए उत्तरकाशी ने सहायता सामग्री स्वयं भेज दी है।

१ आर्यसमाज रेवाड़ी

दो ट्रकों में चावल, गेहूं, दाल, गुड, नालीदार चद्दर, रजाई, कम्बल, चादर, सर्दी के वस्त्र, स्वेटर आदि भेजे हैं।

२ जीव कल्याण संस्थान आर्यसमाज १९ सेक्टर फरीदाबाद द्वारा

१४० नये कम्बल, २८० नई धोतियां तथा ३६ नई रजाइयां भेजी गई हैं।

३ आर्य वीरदल फरीदाबाद के मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य तथा सभा के उपप्रधान श्री लछमनदास आर्य बल्लबगढ़ आदि के प्रयत्न से एक ट्रक लोहे की चदरे, १५० कम्बल, २५ बोरी चावल, ४ बोरी आटा, दो बोरी गेहूं, १५० बोरी गर्म कपडे (ऊनी जरसी, कोट, पेन्ट, शट), १७५ मोमबत्ती के पैकिट, ८ पैकिट माचिस, एक बोरी बर्तन आदि आर्य वीरदल के स्वयसेवकों द्वारा भेजे गये हैं।

४ आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत की ओर से भी सहायता सामग्री ट्रकों द्वारा भूकम्प पीड़ितों को उत्तरकाशी सभा के कोषाध्यक्ष श्री रामानन्द सिंहल आदि द्वारा भेजी गई है।

आशा है अन्य आर्यसमाज तथा संस्थायें सहायता राशि सभा द्वारा भेजकर यश के भागी बनगे।

—सभामन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को है। अत. सर्वहितकारी का आगामी अंक २१ दिसम्बर का स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक प्रकाशित किया जाएगा।

—सम्पादक

आवश्यक सूचना

हैदराबाद के उन सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है कि तीसरे केस में जो २६ आदमी सम्मिलित थे उस केस को हम जीत गये हैं। इसके साथ जो ११ आदमियों ने केस किया था उसमें भी जीत गये हैं। मेरे अनुमान के अनुसार डेढ़ महीने में भारत सरकार के पास से सबके पास चिट्ठी आजायेगी। उस पत्र में जो सुझाव हैं उसके अनुसार कागज तैयार करके भारत सरकार के पेंशन विभाग को भेज देने चाहियें। यदि इस चिट्ठी की कोई बात समझ में न आये तो दयानन्दमठ में आकर जानकारी करलें।

महाशय भरतसिंह
संयोजक : हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पेंशन समिति

शोक समाचार

१ श्री कर्णसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज अटायल, जि० रोहतक के सुपुत्र श्री बलराज का गतदिनों देहांत होगया। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवारजनों को दुःख सहन करने की शक्ति दे।

स्वामी धर्मानन्द
प्रधान आर्यसमाज गांधरा, रोहतक

२ २२ नवम्बर को श्री प० अर्जुनदेव के बड़े भाई हिम्मतसिंह सुपुत्र श्री केशोराम का देहांत होगया। २८ नवम्बर को श्री रामचन्द्र मन्त्री आर्यसमाज टकारा के पिता और श्री स्वर्गीय स्वामी सुलक्षणानन्द जी के छोटे भाई फतेसिंह का लम्बी बीमारी से देहांत होगया। आर्यसमाज दहकोरा की ओर से दोनों महानुभावों को भगवान् सद्‌गति प्रदान करे।

—अर्जुनदेव आर्य

३ आर्यजगत् को जानकर अति दुःख होगा कि चौ० बिशनसिंह एडवोकेट, गांव टयोण्ठा (कैथल) का १ नवम्बर, ९१ को स्कूटर ट्रक भिडन्त में देहांत होगया।

श्री बिशनसिंह जी आर्यनेता, सच्चे कर्मयोगी थे। आपमें आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपने सन् १९७९ में कैथल में आर्य महासम्मेलन करवाया, जिसमें हजारों स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया।

रामनिवास आर्य भजनोपदेशक

(पृष्ठ ३ का शेष)

अन्तरिक्ष में, अग्नि पवन में,
औषधि, वनस्पति वन उपवन में,
जीवमात्र के तन में मन में।
शांति कीजिए—

ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में,
वैश्यजनों के होवे धन में,
शूद्र के सेवा कर्मन में।
शांति कीजिए……

शांति राष्ट्र निर्माण सृजन में,
सकल विश्व में जड़ चेतन में,
नगर ग्राम में और भवन में,
जगती के होवे कण-कण में,
शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में।

प्रेरक प्रसंग

लक्ष्मी नहीं—गृहलक्ष्मी चाहिए

—क्या आपकी लड़की घरवालों की इच्छा का ध्यान रखती है ?
जी नहीं, अभी तो उम्र पड़ी है सीख जाएगी।

—क्या आपकी लड़की घरवालों की आय को ध्यान में रखकर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना जानती है ?

जी नहीं, क्योंकि हम ही उसकी हर आवश्यकता पूरी करने के लिए सदैव तैयार रहते हैं।

—क्या आपकी लड़की घर को सफाई और सजावट करना जानती है ?

अजी पढने-लिखने में इतना समय ही कहां बचता है जो वह इन बातों की ओर ध्यान दे सके।

—क्या आपकी लड़की कपड़े सीना, काढ़ना आदि जानती है ?
अजी क्या बात करते हैं आप……?

—खैर आपकी लड़की खाना बनाना तो जानती ही होगी ?
अजी उसकी भी क्या जरूरत है ? घर में बहुत सारे नौकर चाकर हैं, यह काम तो वही कर देते हैं।

—क्या आपकी लड़की ईश्वरभक्ति, सध्या हवन के लिए थोड़ा-सा समय निकालती है ?
आप भी क्या पुरानी बातें ले बैठे…।

—आपकी लड़की कैसा भोजन खाना पसन्द करती है ?

अजी उसकी पसन्द छोड़िए। वह कभी-कभी मीट खा लेती है। मीट के साथ-साथ शराब का इस्तेमाल भी कर लेती है। मेरी लड़की तो आधुनिक युग की है।

—आपकी लड़की इसके अतिरिक्त और क्या-क्या जानती है ?

अजी साहब यह कहिए कि वह क्या नहीं जानती। मेरी लड़की अभिनय करना जानती है, घुड़सवारी जानती है, होटल तथा क्लबों में अंग्रेजी ढंग से खाना और बातचीत करना जानती है, टेनिस खेलना जानती है, डिस्कोडांस जानती है। अजी इन बातों को जानकर आप क्या करेंगे ? मैं उसकी शादी में पूरे एक लाख रुपये नकद भी दूंगा। बस आप यह समझिए कि मेरी लड़की तो साक्षात् लक्ष्मी है… लक्ष्मी। यह कहकर लड़की के पिता ने शान से गर्दन उठाई।

"लेकिन खाली लक्ष्मी नहीं, हमें तो गृहलक्ष्मी चाहिए शाह जी… गृहलक्ष्मी।" कहकर वर पिता बाहर चले गए और शाह जी विस्फारित नजरों से उन्हें देखते ही रह गये।

(तपोभूमि मासिक से साभार)

—हरिचन्द स्नेही
१८/५५ भगतपुरा, सोनीपत

❀ नर-नारी मूलरूप में एक हैं। आत्मा एक जैसी है, वे एक-दूसरे के पूरक हैं।

—गांधी जी

शराबी भाइयों की सेवा में वेद एवं महापुरुषों के उदाहरण

देश मे दिन प्रतिदिन बढ रही शराबखोरी को मध्य नजर रखते हुए मैं शराबियों की सेवा में कुछ महापुरुषो के उदाहरण लिखकर भेज रहा हू। साथ में पूर्ण आशा भी करता हू कि जो परिवार एव नवयुवक शराब से बरबाद हो रहे है अवश्य ही पढकर, विचारकर, प्रेरणा लेकर ईश्वर की कृपा से शराब न पीने का व्रत लेकर अपना तथा अपने परिवार का जीवन सुखी बनावेगे।

१- मदिरा पीनेवाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

२- शराब के अधीन होकर मनुष्य अत्यन्त निन्दनीय काम करता है। वह इस लोक और परलोक में भी अनन्त दु:खों को प्राप्त करता है। —भगवान महावीर

३- मनुष्यो! तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना वह पराक्रम की परीक्षा है। तुम तलवार के सामने सर झुकाने से भयभीत न होना वह बलिदान की कसौटी है। पर शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है। —महात्मा बुद्ध

४- यदि तुम परमपिता परमेश्वर के स्थान अर्थात् गिरजाघर जाने वाले हो तो कभी मद्यपान मत करना न अपनी सन्तान को ऐसा करने देना। —ईसा मसीह

५- शराब सब बुराइयों की जड है। —मुहम्मद साहब

६- जो मनुष्य शराब का सेवन करते हैं उनके तीर्थ स्नान करने, व्रत रखने एव कई प्रकार के नियम रखने के माहात्म्य सब नरक में पड़ जाते हैं अर्थात् नष्ट होजाते है। —गुरु नानक

७- मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

८- मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक की वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी

९- नशाबन्दी एक बुनियादी बात है। —मोरारजी देसाई

१०- शराबी को अनेक बुराइयां एव रोग घेर लेते है। —चौ० चरणसिह

११- योगिराज श्रीकृष्ण जी के वशज यादवो का नाश शराब से हुआ। मुगलों के साम्राज्य का नाश तथा रोमन साम्राज्य का नाश शराब से हुआ। भरतपुर के महाराजा के खानदान का नाश शराब से हुआ। वर्तमान में भी अनेक उदाहरण हैं जिन किसानो की शराब के कारण जमीन बिकी है तथा कत्ल हुए हैं। भ्रष्टाचार एव व्यभिचार का नगा नाच हुआ है। —इतिहास से

ना मर्दों के लिए नही मर्दों के लिए जीवन बदलने के लिए उपरोक्त उदाहरण काफी हैं।

सग्रहकर्त्ता—अत्तरसिंह आर्य
क्रांतिकारी सभा उपदेशक

संस्कृत छात्रों को नि:शुल्क शिक्षा, भोजन व छात्रवृत्ति

गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय शुकताल, मु० नगर (उ०प्र०) में कक्षा उत्तर मध्यमा (द्वितीय वर्ष) मे मास दिसम्बर १९९१ के अन्दर कुछ ऐसे छात्रो के प्रवेश होरहे हैं जोकि पढने में योग्य हो, आचरण अच्छा हो, चरित्रवान् हो एव प्रथम श्रेणी प्राप्त करने में समर्थ हों। छात्रों को नि:शुल्क अच्छा भोजन व आवास आदि मिलेगा तथा ७५ रुपये मासिक छात्रवृत्ति भी प्रदान की जायेगी। शास्त्री के छात्रों हेतु भी पठन-पाठन की व्यावस्था है।

आचार्य इन्द्रपाल
प्रधानाचार्य

श्रीमती परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, अजमेर का चुनाव

प्रधान	:	स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, दयानन्दमठ, दीनानगर
कार्यकर्त्ता प्रधान	:	स्वामी ओमानन्द जी, गुरुकुल झज्जर
उपप्रधान	:	श्री प्रो० शेरसिंह जी, डा० भवानीलाल जी भरतीय, श्री फूलचन्द जी आर्य
मन्त्री	:	श्री गजानन्द जी आर्य
संयुक्त मन्त्री	:	श्री धर्मवीर आर्य
कोषाध्यक्ष	:	श्री कमचन्द जी
पुस्तकाध्यक्ष	:	श्री ओमप्रकाश जी झँवर

श्रद्धांजलि समारोह

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के ६५वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में रोहतक नगर की सभी आर्यसमाजों/आर्यसंस्थाओं की ओर से रविवार, दिनांक २२ दिसम्बर, १९९१ को सुभाषनगर के मुख्य पार्क में २-०० बजे से ५-०० बजे तक एक भव्य श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया जारह है।

निवेदक :
देशज आर्य मन्त्री
केन्द्रीय सभा रोहतक

बच्चों का रोगोपचार

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती-१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

दूध डालना उल्टियां

खील धान की लीजिये, सेंधा नमक मिलाय।
शहद मिलाकर शिशु को, देना तुरत चटाय॥

दूसरा

पीपल काली मिर्च का, चूरण लेओ बनाय।
रहो चटाते बाल को, दिखलाये करामात॥

बच्चों चनूनों पर

अण्डी के पत्तों का रस, लीजे रूई भिगोय।
इसे गुदा में रख दिये, जाय चनूने खोय॥

पेट के कीड़े

बथुआ का रस निकालकर, काला नमक मिलाय।
तीन बार दिन में पिये, सब कीड़े मर जाय॥
मात्रा ५ ग्राम

बच्चों का दमा रोग

तुलसी पत्ते पीसकर, शहद के साथ चटाओ।
इस औषध से दमारोग, बच्चों का दूर भगाओ॥

सुखपूर्वक दांत निकालें

चौबचोनी पीसकर, लीजे शहद मिलाय।
मसूड़ों पर मलते रहो, सभी कष्ट मिट जाय॥

शैया मूत्र पर चुटकला

काला जीरा आमला, करो पीसकर महीन।
शहद मिलाकर चटाये, लेकर माशा तीन।
सुबह शाम यह गौर से, औषधि करें प्रयोग।
कुछ दिन में होगा खत्म, वस्त्र मूत्र का रोग॥

जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत में वैदिक प्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित जिला वेदप्रचार मंडल पानीपत के संयोजक एवं सभा के कोषाध्यक्ष लाला रामानन्द जी सिंगला के निर्देशन में प० रामकुमार जी आर्य भजनोपदेशक की भजन मण्डली ने दिनांक १-१०-९१ से ३१-१०-९१ तक निम्नलिखित ग्रामों में वेदप्रचार किया तथा कुछ शिथिल आयसमाजों में जागृति उत्पन्न की एवं कुछ ग्रामों में नवीन आयसमाजों की स्थापना भी की है।

१. दिनांक १०-१-९१ को ग्राम मालसी में वेदप्रचार किया तथा नवीन आर्यसमाज की स्थापना की। श्री प्रेमसिंह आर्य व श्री श्यामलाल जी आर्य ने वेदप्रचार में पूर्ण सहयोग दिया। कुछ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत भी धारण किये।

२. दिनांक २-१०-९१ से ३-१०-९१ तक ग्राम ओसर जिला पानीपत में वेदप्रचार हुआ, जिसमें नशाबन्दी, दहेजप्रथा, बालविवाह, नारी-शिक्षा, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य तथा सदानन्द आर्य ने विशेष सहयोग दिया।

३. दिनांक ८-१०-९१ से १०-१०-९१ तक ग्राम भिण्डारी में वैदिक प्रचार हुआ।

४. दिनाक ११-१०-९१ को ग्राम अलूपुर, जिला पानीपत में वेद-प्रचार किया गया। प्रचार को सफल बनाने में श्री जयचन्द आर्य (वैद्य) ने सहयोग दिया।

५. दिनांक १२-१०-९१ से १६-१०-९१ तक ग्राम अटावला, जिला पानीपत में वेदप्रचार हुआ तथा नवीन आर्यसमाज की स्थापना भी की। श्री मातूराम नम्बरदार, मा० जागेराम, मुख्याध्यापक श्री अजीतसिंह आर्य, श्री गिरधारीराम आर्य इन सबने सभा के लिए विशेष योगदान दिया। ४५६ रु० सभा को दान मिला।

६. दिनांक १८-१०-९१ से २२-१०-९१ तक ग्राम आदियाना में वेदप्रचार बहुत हर्षोल्लास के साथ किया गया। श्री धूपसिंह आर्य सुपुत्र श्री प्रीतसिंह आर्य तथा चौ० सुरतसिंह आर्य ने प्रचार को सफल बनाने में विशेष रुचि ली तथा श्री धूपसिंह जी ने भोजन आदि का भी विशेष प्रबन्ध किया।

७. दिनाक २३-१०-९१ को ग्राम सालवन, जिला पानीपत आर्यसमाज मन्दिर में शरद् पूर्णिमा के शुभ अवसर पर पूज्य स्वामी श्री परमानन्द जी योगतीर्थ के विशेष सहयोग से वेदप्रचार किया गया। श्रद्धेय स्वामी जी ने सभा को एक सौ रुपये दान दिये।

८. दिनाक २४-१०-९१ से २६-१०-९१ तक ग्राम नेन, जिला पानीपत में वेदप्रचार हुआ। श्री सरदारसिंह आर्य सुपुत्र श्री धर्मसिंह आर्य व नकलीराम जी आर्य ने प्रचार को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया और कुछ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत भी धारण किये तथा सामाजिक कुरीतियों से दूर रहने की प्रतिज्ञा भी ली। वैदिक-प्रचार का गांव के लोगों पर बहुत अच्छा प्रभाव रहा। २९० रुपये दान प्राप्त हुआ।

९ दिनांक २७-१०-९१ से २९-१०-९१ तक ग्राम परढाणा, जिला पानीपत मे वैदिक-प्रचार का कार्यक्रम श्री सूरजमल जी नम्बरदार के पूर्ण सहयोग से सम्पन्न हुआ। नारी-शिक्षा, दहेजप्रथा, बालविवाह, नशाबन्दी आदि विषयों पर बल दिया गया तथा चरित्र-निर्माण व वैदिकपथ पर अग्रसर होने के लिए आह्वान किया गया। गांव के लोगों ने प्रचार से प्रभावित होकर सभा को २७१ रुपये दान दिये।

१० दिनांक ३०-१०-९१ को जोन्धन खुर्द, जिला पानीपत में वेद-प्रचार किया गया। लाला रामनिवास जी सरपंच तथा श्री कुन्दनलाल आर्य के सहयोग से प्रचार-कार्य सफल हुआ। सभा को १०४ रुपये दान-राशि प्राप्त हुई।

११. दिनांक ३१-१०-९१ को ग्राम महाराणा कला, जिला पानीपत में वैदिक-प्रचार किया गया। श्री ईश्वरसिंह आर्य सुपुत्र श्री खेमचंद जी आर्य ने प्रचार को सफल करवाया।

शराबबन्दी प्रचार पदयात्रा का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज कवारी (हिसार) ने दिन प्रतिदिन बढ़ रहे शराब के प्रचलन एवं भ्रष्टाचार के विरोध में सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी के नेतृत्व मे २० से ३० नवम्बर, ९१ तक जि० भिवानी एव जिला हिसार के अनेक ग्रामों का शराबबन्दी प्रचार पदयात्रा का जन-जागरण अभियान कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ। जब आर्य-बंधुओं का काफला हाथ में ओ३म् का ध्वज लिए हुए महर्षि दयानन्द जी की जय, आर्यसमाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा ऊंचा रहे, शराब पीना पाप है तथा बाप शराब पीता है बच्चे भूखे मरते हैं आदि नारे लगाते हुए गांव में पहुंचता था तो दृश्य देखते ही बनता था। गाव के नर-नारी श्रद्धा से उनका स्वागत करते थे। गाव में रात्रि एव दोपहर का तीन घण्टे का कार्यक्रम होता था तथा प्रातः हवन किया जाता था।

जिन गावों में प्रचार-कार्य हुआ वे इस प्रकार हैं—दिनांक २० को बलियाली, २१ को सुमड़ा खेड़ा, ढाणी राव, २२ को बवानी खेड़ा, पपोसा, २३ को जमालपुर, बोहल, २४ को रतेरा, मुहजादपुर, २५ को बालावास कवारी, २६ को नलवा, दुबेठा, २७ को बाडाब्राह्मणान हरिता २८ को बूरा, सहाड़वा, २९ को तलवण्डीरुका, धलकोट, ३० को खेड़ा, सिवानी मण्डी, प्रातः १ दिसम्बर को हनुमान आर्य के घर पारिवारिक हवन किया गया।

उपरोक्त ग्रामो में निम्न विद्वानों ने जिनमें सर्वश्री स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी धर्मानन्द, महात्मा ताराचन्द, महाबीरप्रसाद प्रभाकर सभा उपदेशक क्रांतिकारी, चौ० जवाहरसिंह, श्री सग्रामसिंह आर्य, महाशय धनपत आदि विद्वानों ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब, धूम्रपान से होने वाले नुकसान, आर्यसमाज का इतिहास, राष्ट्र-रक्षा, गोरक्षा, नारी-शिक्षा, दहेजबन्दी, चरित्र निर्माण तथा मूर्ति-पूजा एवं पाखण्ड बारे मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला। प्रातः हवन पर पंचमहायज्ञ, नवयुवकों का कर्त्तव्य, आत्मा-परमात्मा तथा यज्ञोपवीत के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। परिणामस्वरूप कई ग्रामों में नवयुवकों ने जनेऊ लिए तथा बुराई छोड़ने का सकल्प लिया। लोगों को आह्वान किया कि अगर सुख से जीवन जीना चाहते हो तो अपने-अपने ग्रामो में आर्य-समाज को स्थापना करो तथा आर्यसमाज के सदस्य बनो। साथ में विद्वानों को बुलाकर वेदप्रचार एव पारिवारिक हवन-सत्सग आदि का कार्य जारी रखें।

इसके अतिरिक्त स्वामी देवानन्द जी की मण्डली महाशय झाब्बेराम, श्री दीपचन्द तथा प्रेम जी के समाज-सुधार के शिक्षाप्रद एवं हृदय को छूने वाले क्रांतिकारी भजन हुए। शराबबन्दी कार्यक्रम की सभी जगह लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। शराबबन्दी की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः शराब हटाओ, देश बचाओ। सभा को ७०० रु० दान प्राप्त हुआ।

सूबेदार रामेश्वरदास आर्य
मन्त्री आर्यसमाज कवारी

देश की करीब आधी आबादी निरक्षर

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुनसिंह ने आज राज्यसभा में बताया कि १९९१ की जनगणना के अनुसार देश की ४७.८९ प्रतिशत आबादी निरक्षर है।

श्री सिंह ने प्रश्नों के लिखित उत्तर में बताया कि निरक्षरता दूर करने के व्यापक कार्यक्रम के तहत १९९५ तक १५ से ३५ वर्ष के आठ करोड़ वयस्क लोगों को साक्षर बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

(दैनिक नवभारत से साभार)

ध्यान योग शिविर एवं योग सम्मेलन

गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में एवं स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती की संरक्षता में रविवार २२ दिसम्बर ९१ से रविवार २९ दिसम्बर ९१ तक 'ध्यान योग शिविर' का आयोजन किया जारहा है। जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण महर्षि पतञ्जलि के आधार पर दिया जायेगा। आप शिविर मध्य शारीरिक रोगों तथा मानसिक अशांति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

निवेदक : स्वामी धममुनि (मुख्याधिष्ठाता)
आत्मशुद्धि आश्रम (पजीकृत न्यास),
बहादुरगढ, जिला रोहतक

भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु अपील

आशा है आपको दैनिक समाचार-पत्रों, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा ज्ञात होगया है कि गढ़वाल तथा उत्तरकाशी में आये भयंकर भूकम्प से लाखों नर-नारी बेघर होगये हैं। हजारों नर-नारी मौत के मुह में चले गये हैं और अब सर्दी के दिनों में आकाश के नीचे अपना सकटपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अनेक प्रकार के रोग फैल रहे हैं। ऐसी भयंकर तथा दयनीय स्थिति में हम सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि अपने नगर तथा ग्राम से इन भूकम्प पीड़ित भाइयों के लिए धन तथा गम वस्त्र आदि संग्रह करके अपनी सुविधा के अनुसार सभा के मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक, उप-कार्यालय गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद या महर्षि दयानन्द वैदिकधाम पेहवा मार्ग कुरुक्षेत्र के पते पर भेजकर प्राप्ति को रसीद प्राप्त कर लेवें।

सभा की ओर से संग्रहीत धनराशि तथा वस्त्र आदि यथास्थान हरयाणा की जनता को ओर से सामूहिक रूप में भेजी जावेगी और दानदाताओं के नाम सभा के साप्ताहिक पत्र 'सर्वहितकारी' में प्रकाशित किये जावेंगे।

आशा है हरयाणा के आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षण संस्थायें उदारतापूर्वक धन तथा वस्त्र आदि संग्रह करके यथाशीघ्र सभा को भेजकर संगठन का परिचय देवेंगे।

निवेदक :—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	सूबेसिंह	रामानन्द
परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

❀ हे नारी ! जैसे पगडी आदि वस्त्र सुख देने वाले हैं वैसे तू पति के लिए सुख देने वाली हो। —महर्षि दयानंद

उ०प्र० में अदालतों को हिंदी में काम के आदेश

लखनऊ, (वार्ता)। उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य के न्यायालयों विशेष रूप से जिला न्यायालयों के कामकाज में हिन्दी को पूरी तरह लागू करने का निश्चय किया है और इसके अनुरूप समस्त शासकीय अधिवक्ताओ को अपने कार्य हिन्दी में करने के निर्देश दिये गये है।

राज्य के न्यायमन्त्री ओमप्रकाशसिंह ने बताया कि हिन्दी न्यायालय के मस्त कार्यों की भाषा बने इसके लिए पहले ही हिन्दी में सबसे अच्छा निर्णय लिखने वाले न्यायाधीशों को पुरस्कृत करने का फंसला किया गया है। उत्तर प्रदेश के शासनादेशों एव कानूनों को एक साथ अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा में समय-समय पर प्रकाशित कराने का निणय भी किया गया है।

जिला न्यायालयों को हिन्दी टाइप राइटर और स्टेनोग्राफर की कितनी आवश्यकता है इसकी भी जानकारी प्राप्त की जारही है ताकि शासन यथाशीघ्र यह सुविधा उन्हें उपलब्ध कर सके।

श्री सिंह ने बताया कि इसी वर्ष से न्यायालयों का कार्य पूर्णरूप से हिन्दी में ही रिपोट ही हो इसके लिए शासन आवश्यक शासनादेश भी जारी करना चाहता है। इसके लिए उच्चन्यायालय से सहमति प्राप्त करने के लिए पत्र लिखा जा चुका है। उनकी सहमति प्राप्त होने पर ही आवश्यक आदेश जारी किये जा सकते हैं। इस बीच अधिवक्ताओं को यह निर्देश दिया गया है कि वे न्यायालय के समक्ष अपना समस्त कार्य हिन्दी में ही करें।

न्यायमन्त्री ने कहा कि जब तक न्यायालय की भाषा पूरी तरह से हिन्दी नहीं हो जाती तब तक जनता को जनता की भाषा में न्याय का आदर्श चरितार्थ नहीं होगा।

(दैनिक जागरण से साभार)

आर्यसमाज के सिद्धांतों से आधी समस्यायें खत्म हो जायेंगी—पायलट

जनसत्ता सवाददाता

नई दिल्ली : संचार राज्यमन्त्री राजेश पायलट ने कहा है कि अगर आर्यसमाज के नियमों और सिद्धातों को ईमानदारी से अपना लिया जाए तो मानवजाति की आधी से ज्यादा समस्याये और बीमारियां खुद-ब-खुद खत्म हो जायगी। उन्होने कहा है कि युवकों को सच्चाई, कठोर मेहनत और भगवान् में विश्वास रखकर काम करते रहना चाहिए, इससे उन्हें जीवन के हर क्षेत्र मे कामयाबी मिलेगी। श्री पायलट आज आठवे आर्य युवा महासम्मेलन के समापन समारोह में बोल रहे थे।

सचारमन्त्री ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी बांटे। हिन्दी साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' के महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस व आर्यसमाज मन्दिर सयुक्त अक का भी उन्होंने विमोचन किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश को एकता व अखण्डता के लिए बिना स्वार्थ में काम करने का सभी आर्यजनों का आह्वान किया।

समारोह का उद्घाटन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति सुभाष विद्यालंकार ने किया। हरयाणा के कृषि राज्यमन्त्री वचनसिंह आय ने कहा कि अश्लील फिल्मों और शराब की बढ़ती प्रवृत्ति के खिलाफ हरयाणा की धरती से जल्दी ही एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन छेड़ा जाएगा।

(४-१२-९१ जनसत्ता से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रो[illegible] शित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि नं० P/RTK-४१

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक - सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ५ २१ दिसम्बर, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

(स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस विशेषांक)

स्वामी श्रद्धानन्द वीर महान्

भारत मां के तप:पूत, स्वामी श्रद्धानन्द वीर महान् ।
भूलेगा ना जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।

वैदिक मर्यादा के पालक, धर्मनीति के शुभ संचालक ।
देशभक्त, बलवान् बनाए, तुमने नाथ हजारों बालक ॥
गुरुकुलों का जाल बिछाया, किया अचम्भित सर्व जहान् ।
भूलेगा ना जगत् आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥१

तुम जो कहते थे करते थे, दुखियों के संकट हरते थे ।
ईश्वर विश्वासी पक्के थे, नहीं पापियों से डरते थे ॥
सुनकर नाम आपका, थर्राते थे गोरे बेईमान ।
भूलेगा ना जगत् आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥२

ऋषिवर दयानन्द के चेले, देश, धर्म हित संकट झेले ।
अत्याचारी अंग्रेजों के, शोणित से थे होली खेले ॥
स्वतन्त्रता का नाद बजाया, ऊंची की भारत की शान ।
भूलेगा ना जगत् आपका, देशभक्त नेता, बलिदान ॥३

स्वामी तुम थे सच्चे नेता, अद्भुत त्यागी, वीर, विजेता ।
परम तपस्वी, उपदेशक थे, नाम विश्व श्रद्धा से लेता ॥
साहस के तो आप धनी थे, गाती है दुनियां यशगान ।
भूलेगा ना जगत् आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥४

शुद्धि की तलवार चलाई, मिटती हिन्दू कौम बचाई ।
देख वीरता विकट आपको, दुश्मन की सेना घबराई ॥
धर्म की रक्षा में हे स्वामी, हंसकर आप हुए कुर्बान ।
भूलेगा ना जगत् आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥५

जाति-पाति का भेद मिटाया, छुआछूत कलंक बताया ।
मनुष्य मात्र की जाति एक है, जग को वैदिकपथ दर्शाया ॥
'कर्म प्रधान जगत् में' केवल, दिये हजारों थे व्याख्यान ॥
भूलेगा ना जगत् आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥६

नेता अब यदि धर्म जानले, अगर आपकी बात मानले ।
'जिये देशहित, मरे देशहित', हृदय में यह बात ठानलें ॥
ऋषियों के प्यारे भारत का, हो जाएगा फिर कल्याण ।
भूलेगा ना जगत् आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥७

नन्दलाल 'निर्भय' सिद्धांत शास्त्री, भजनोपदेशक
ग्राम पो० बहीन, जिला फरीदाबाद (हर०)

आर्यसमाज बादशाहपुर जि० गुडगांव का उत्सव सम्पन्न

६-७-८ दिसम्बर, ९१ को आर्यसमाज बादशाहपुर, जि० गुडगांव का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया । स्वामी प्रेमानन्द जी की अध्यक्षता में हवन सम्पन्न हुआ । प० रामनिवास जी की भजनमण्डली व पं० चिरंजीलाल आर्य की भजनमण्डली के प्रभावशाली भजनों के द्वारा बहुत अच्छा प्रभाव रहा । प० चन्द्रपाल शास्त्री, सुखदेव शास्त्री, पं० सुरेशपाल जी के प्रवचन हुए। रविवार को सोहना, गुडगावां, मित्रौल औरंगाबाद सभी समाजो का उत्सव सामूहिक रूप में पूर्ण हुआ ।

—स्वामी वेदपाल

बलिदान दिवस पर विशेष

त्यागमूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक—पं० शिवकुमार आर्य, एम० ए०, पानीपत

विख्यात वीर सन्यासी, गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के सूत्रधार, राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम सेनानी तथा हिन्दू संगठन के मन्त्रदाता स्वामी श्रद्धानन्द थे। जिनका जीवन और व्यक्तित्व मनुष्य जीवन को बदल देनेवाला है। आज चौसठवें बलिदान दिवस पर स्वामी श्रद्धानंद जैसे कल्याण मार्ग के पथिक से शिक्षा लेकर हमें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करनी है।

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म सन् १८५६ ई० में हुआ। पंजाब के जालन्धर जिले के तलवन कस्बे में हुआ। पिता श्री नानकचन्द परम आस्तिक थे जो मुख्तार पद पर कार्यकर्त्ता थे, बाद में पुलिस इंस्पेक्टर बने। स्वामी जी का बचपन का नाम मुन्शीराम था। शैशवकाल लाड-प्यार में बीता। नानकचन्द पुलिस विभाग में होने के कारण बच्चों की पढ़ाई में ध्यान नहीं दे पाते थे। फल यह हुआ कि बड़ी आयु में शिक्षा आरम्भ हुई, वह भी नियमित रूप से नहीं चली, किन्तु अपूर्व स्मरण शक्तिवाला होने के कारण मुन्शीराम ने उत्तरोत्तर उन्नति प्राप्त की। उच्च शिक्षा काशी में प्राप्त की, साथ ही चारित्रिक पतन की ओर भी निरन्तर बढ़ता गया। स्वयं लिखा है कि मुझे मालूम हुआ कि काशीपुरी सब प्रकार के व्यभिचार का नरककुण्ड है। जिस कलुष कथा को लोकोक्ति द्वारा व्यंजित कर दिया है—रांड सांड सीढ़ी सन्यासी, इनसे बचे सो सेवे काशी।

मुन्शीराम ने महाविद्यालयीन शिक्षा क्वीन्स कालेज में प्राप्त की। उस काल में अंग्रेजी पर उनका असाधारण अधिकार था जिसमें ९७ अंक प्राप्त किये। एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और आगे चलकर जालन्धर में वकालत की। शिक्षा के क्षेत्र में जितना ऊंचा उठा, उच्च वकील बना, उतना ही चरित्र का पतन हुआ। जीवन में बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव आया। ऐसी कोई बुराई नहीं थी जिससे मुन्शीराम अछूता रहा हो, किन्तु चारित्रिक अधःपतन के गहन गह्वर में गिरकर भी कोई व्यक्ति किसी महापुरुष की प्रेरणा और आशीर्वाद से अपने जीवन को श्रेष्ठता के सर्वोच्च सोपान पर प्रतिष्ठित कर सकता है, इसका जीता जागता उदाहरण मुन्शीराम का जीवन है। वे स्वयं ऋषि दयानन्द की स्मृति में समर्पित करते हुए लिखते हैं—मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितने बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की। अपनी नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्वामी दयानन्द की कृपा को ही कारण माना।

मुन्शीराम विचित्र प्रकार का नास्तिक था, जो प्रात. स्नान के बाद व्यायाम, कुश्ती एवं देवीपूजा, रामचरितमानस का पाठ भी करता था। भक्तिभाव पराकाष्ठा पर था और दूसरी ओर परमात्मा की सर्वोच्च सत्ता से कुछ लेना देना नहीं था। वह नास्तिक स्वामी दयानद के एक ही उपदेश "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं" से सच्चा आस्तिक बना और आर्यसमाज में प्रवेश किया। जिसके लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया और कहा—

उतर गया मेरे मन दा संसा, जब तेरो दरसन पायो।

आर्यसमाज का नेतृत्व किया। कर्मठ जीवनकाल प्रारम्भ हुआ। वकालत छोड़ दी, अपनी सारी सम्पत्ति आर्यसमाज के कार्य में लगादी। फिर जिस शिक्षा से उसका चरित्र पतन हुआ था उसके निवारण के लिए उच्च चरित्र निर्माण, राष्ट्र-प्रेम का पाठ पढ़ानेवाली गुरुकुल शिक्षा का आरम्भ किया। उन्होंने गुरुकुल के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। गुरुकुल उनके स्वप्नों का ही दिव्य रूप था।

सन् १९०२ ई० में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की जिसे अपना निजी पुस्तकालय, सद्धर्म प्रचारक प्रेस एवं जालन्धर स्थित भव्य कोठी दान कर सर्वमेध यज्ञ में अपनी अन्तिम आहुति दी।

चतुर्थ आश्रम में प्रवेश कर स्वामी श्रद्धानन्द बने और कहा—श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आज तक के इस जीवन को मैंने पूरा किया, श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्य देवी है। अब भी श्रद्धाभाव से प्रेरित होकर ही मैं संन्यास ले रहा हूं। इसलिए अपना नाम श्रद्धानन्द रखता हूं। श्मश्रु-विहीन मुण्डित मस्तक स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में मानो धर्म की वेदी पर बलिदान होने के लिए दयानन्द के पश्चात् एक अन्य तेजस्वी महापुरुष का अवतरण हुआ। पश्चात् गुरुकुल के आचार्य के गरिमामयपद से स्वयं को मुक्त कर लिया। इस प्रकार पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा का त्याग कर दिया।

राष्ट्रीय स्वाधीनता पर लगी पराधीनता की बेड़ी से देश कराह रहा था जिसे देख वीर संन्यासी स्वाधीनता संग्राम में उतर गया। सत्याग्रह संग्राम में ७ मार्च, १९१९ को दिल्ली में स्वामी जी का प्रथम राजनैतिक भाषण हुआ। ३० मार्च को घण्टाघर से लौटते हुए जुलूस का नेतृत्व करते हुए स्वामी जी के समक्ष गोरखा पलटन संगीने ताने खड़े होगये। स्वामी जी गरज कर बोले—मैं खड़ा हूं गोली मारो, छाती खोलकर कहा। परन्तु अंग्रेज अधिकारी ने तुरंत भयावह घटना को रोक लिया। यह जुलूस हिन्दू मुस्लिम भ्रातृत्व का अनोखा दृश्य था। दोनों धर्मावलम्बी स्वामी जी को अपना नेता मानते थे। ४ अप्रैल, १९१९ का वह दृश्य इस्लाम के इतिहास में चिरस्मरणीय था जब काषाय वस्त्र-धारी आर्य सन्यासी ने उनके उपासना स्थल जामामस्जिद की सर्वोच्च वेदी पर विराजमान होकर उन्हें प्रेम, एकता, भ्रातृभाव तथा परस्पर सहानुभूति का सन्देश दिया। वेदमन्त्रों से मस्जिद को गुंजा दिया। जून १९१९ में जलियांवाला बाग कांड के बाद का अधिवेशन अमृतसर में होना था, कांग्रेस नेता घबरा रहे थे उस समय नेतृत्व सम्भाला और ओजस्वी भाषण मातृवाणी में दिया।

अक्रोधेन जयेत् क्रोधं, असाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन, जयेत् सत्येन चानृतम्॥

राजनीति से उपराम होकर स्वामी जी ने हिन्दू संगठन जो कारण-वश हिन्दूधर्म को छोड़कर अन्य मतों में गये लोगों को शुद्धि कर पुनः हिंदू धर्म में प्रवेश दिलाया। उनकी चिंतन सरणि दलित जातियों के उत्थान हेतु ठोस कार्यक्रम की ओर बढ़ी और स्पष्ट किया कि देश के बहुसंख्यक लोग ही सामाजिक दृष्टि से दुर्बल रहेंगे तो वे प्राप्त की गई स्वाधीनता की रक्षा करने में भी असमर्थ होंगे। वे आजकल के संकीर्णबुद्धि राजनीतिज्ञों की भांति यह विश्वास नहीं करते थे कि हिन्दुओं के संगठित होने से मुसलमानों में टकराव होगा। उनकी धारणा थी कि सशक्त हिंदू समाज ही धरातल पर साम्प्रदायिक राजनीति से निपटने में सक्षम हो सकता है। अतः जिस ने व्यक्ति लोभ, भय या आतंक का शिकार होकर अपना धर्म-परिवर्तन कर लिया है वह पुनः अपने पूर्वजों के धर्म में प्रविष्ट हो सकता है, जिसमें १९२३ में ३० हजार मलकानों को शुद्ध कर हिन्दूधर्म की दीक्षा दी गई जो देश और समाज के लिए लाभप्रद रही। १९२३ में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा स्थापित की गई और स्वामी जी उसके प्रधान बने।

जो मुसलमान स्वामी जी का सम्मान करते थे उनका रुख निरंतर आक्रामक होता गया। जो लोग स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व और चरित्र को बिना समझे उन पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाते हैं वे उस महापुरुष के हृदय के भाव तथा मानवजाति के प्रति अपार आदर को समझने में असमर्थ रहे हैं। मार्च १९२६ में दिल्ली में एक मुस्लिम महिला असगरी बेगम की शुद्धि हुई और उसे शांतिदेवी नाम दिया गया। इस घटना ने मुस्लिम समाज को हिला दिया। असगरी कराची से बच्चों को लेकर आयी थी। शुद्धि के बाद आर्य विधवा आश्रम में रखा गया। मुसलमानों ने भगाने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दायर किया किन्तु अदालत में फैसला सुना दिया कि अभियुक्त निर्दोष है। असगरी ने अपनी इच्छा से शुद्धि करवाई है। मतान्ध मुस्लिम समाज ने इसके लिए उन्हें अपराधी ही माना। स्वामी जी फिर भी निर्भय होकर कार्य में लगे रहे। वृद्ध शरीर कार्यों की अधिकता एवं सफर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द–जिन्हें महर्षि के सत्यार्थप्रकाश ने कल्याण-मार्ग का पथिक बना दिया

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

क्रांतिदूत दयानन्द का क्रांतिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश ऐसा अनुपम अमरदीप अथवा प्रकाशस्तम्भ है जो अगणित भूले-भटके मानवों को सुपथ दर्शा चुका है। इसके स्वाध्याय से न जाने कितने पतित सुधर कर महात्मा बन गये। कितनों के जीवन बदल गये और कितनों के उजड़े घर फिर से बस गये? अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द भी उन्हीं में से एक थे। इसी ग्रन्थ ने एक नास्तिक एवं नाना व्यसनों में लिप्त नवयुवक को कल्याणमार्ग का पथिक बना दिया।

मुन्शीराम जी अपने यौवनकाल में नास्तिकता की ओर उन्मुख हो चुके थे और नास्तिक भी ऐसे जिन्हें अपनी नास्तिकता पर गर्व था। बरेली में जब महर्षि दयानन्द पधारे थे, तब मुन्शीराम जी के पिता श्री नानकचन्द जी वहां नगर कोतवाल थे। महर्षि के व्याख्यानों में शांति-व्यवस्था बनाये रखने का काम उनके सुपुर्द था। अपने पुत्र को नास्तिकता की ओर उन्मुख होते और नाना व्यसनों से घिरे होने से वे बहुत चिन्तित थे और चाहते थे कि किसी तरह मेरा बेटा इस अन्धकारमय अवस्था से उभर जावे। जब उन्होंने बरेली में महर्षि के दर्शन किये और उनके व्याख्यान सुने तो उन्हें कुछ आशा बन्धी कि यह महात्मा अवश्य मेरे बेटे को उभार लेंगे और इसी विचार से उन्होंने अपने बेटे मुन्शीराम से कहा कि वेदों के मर्मज्ञ एक अद्भुत विद्वान् सन्यासी यहां पधारे हुए हैं। क्या ही अच्छा हो यदि तुम भी उनके दर्शन एवं प्रवचनों का श्रवण कर सको। और यह भी कहा कि उनके दर्शनों के लिए एवं उनके प्रवचनों को सुनने के लिए नगर के बहुत से सम्भ्रात लोग उपस्थित होते हैं। कई वकील, कई डाक्टर, कई प्रोफेसर, यहां तक कि कलैक्टर और पादरी भी उपस्थित होते हैं। अतः कल तुम भी उनके उपदेश सुनने को चलना। मुन्शीराम ने चलने के लिए हां करदी। किंतु उसके बाद वह अपने मनमें सोचने लगा कि केवल सस्कृत पढ़ा व्यक्ति भला युक्तियुक्त एवं तर्कसंगत बात कैसे कर सकता है?

अगले दिन नियत समय पर पिताजी ने चलने को कहा। मुन्शीराम बेमन हो पिता के साथ हो लिए। वहां जाकर देखते हैं कि नगर के अनेक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति उनका भाषण सुनने के लिए समुपस्थित हैं। पादरी स्काट और कई अन्य यूरोपियन भी वहां पर उपस्थित थे। इसे देखकर मुन्शीराम के मनमें कुछ उत्सुकता एवं व्यग्रता उत्पन्न हुई और वे अधीरता से भाषण प्रारम्भ होने की घड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। महर्षि का भाषण क्या था, अमृतवर्षा थी। प्रथम दिन के उस भाषण ने ही मुन्शीराम के मस्तिष्क को झकझोर कर रख दिया और यही उनके जीवन में परिवर्तन का कारण बना। उस प्रभाव का जो महर्षि के पहले दिन के व्याख्यान का मुन्शीराम जी पर पड़ा, उसको उनके अपने शब्दों में देना उचित समझते हैं। अपनी आत्मकथा में स्वामी जी लिखते हैं कि—"वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषिआत्मा का ही काम था।"

इतना ही नहीं स्वामी जी तो यहां तक लिखते हैं कि—"यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था तथापि मैं मनमें सोचा करता था कि यदि ईश्वर और वेद के ढकोसले को पण्डित दयानन्द स्वामी तिलाजलि दे दें तो फिर कोई भी विद्वान् उनकी अपूर्व युक्ति और तर्कणा शक्ति का सामना करनेवाला न रहे। मुझे अपने नास्तिकपन का उनदिनों अभिमान था। एक दिन ईश्वर के अस्तित्व पर आक्षेप कर डाले पांच मिनट के प्रश्नोत्तर में ऐसा घिर गया कि जिह्वा पर मुहर लग गई। मैंने कहा—"महाराज! आपकी तर्कना बड़ी तीक्ष्ण है। आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्व) है। दूसरे दिन भी ऐसा ही कहने पर महर्षि ने उनसे कहा कि देखो! तुमने प्रश्न किये मैंने उत्तर दिए—यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी मैं तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास करा दूंगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।"

सत्यार्थप्रकाश का जादू

महर्षि के सत्संग ने मुन्शीराम पर गहरा प्रभाव छोड़ा तथापि ईश्वर पर उसका पूर्णरूपेण विश्वास नहीं जम पाया था। किन्तु एक समय ऐसा आया जब महर्षि के ही विचारपुंज सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से उनके हृदय में आस्तिकता के भाव जागृत हो उठे। इस तथ्य को श्री स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा में स्वीकारा है। वे लिखते हैं कि—"सम्वत् १९४१ का माघ मास और आदित्यवार का दिन है। नास्तिकपन के गढ़े से मैं निकल चुका हूं। धर्म-विषयक गहरे आंदोलन के पश्चात् 'सत्यार्थप्रकाश' का पाठ दिन-रात आरम्भ कर चुका हूं। अनारकली के पास रहमत खां के अहाते में एक तीन कमरोंवाली कोठी के बाईं ओर के कमरे में मैं प्रातः ६ बजे कुर्सी पर बैठा हूं। 'सत्यार्थप्रकाश' का आठवां समुल्लास सामने खुला पड़ा है, किन्तु मैं हाथ पर सिर रखे किसी गम्भीर विचार में निमग्न हूं। इतने में कमरे का द्वार खुला और मेरे मित्र सुन्दरदास जी ने अन्दर प्रवेश किया। उनके पैर की आहट ने मुझे विचारनिद्रा से जगा दिया। यह सुन्दरदास जी रावलपिण्डी के राजक्रांति में फंसे वकील, लाला अमोलकराम के भाई आर्यजाति की उन्नति के दृढ़ पक्षपाती थे। सुन्दरदास भी जानते थे कि आस्तिक बनने के पश्चात् मेरा अधिक झुकाव ब्राह्मसमाज की ओर हो रहा है। उन्होंने पूछा—"किस चिन्ता में हैं। कहिए कुछ निश्चय हुआ?" मेरी ओर से उत्तर मिला—"पुनर्जन्म के सिद्धांत ने फैसला कर दिया, आज मैं सच्चे दिल से आर्यसमाज का सभासद् बन सकता हूं।"

यह सब महर्षि दयानन्द और उनके विचारपुंज सत्यार्थप्रकाश का ही चमत्कारी प्रभाव था और कल्याणमार्ग के इस पथिक ने इस प्रभाव को मुक्तकण्ठ से स्वीकारा भी है। स्वामी जी के ये शब्द इसमें प्रमाण हैं—"मैं क्या था इसे इस कहानी में मैंने छिपाया नहीं। मैं क्या बन गया और अब क्या हूं? वह सब तुम्हारी कृपा का ही परिणाम है।" (वही) श्री स्वामी जी महर्षि के प्रति कितने कृतज्ञ हैं, यह उपरोक्त शब्दों से प्रतिध्वनित होता है।

सत्यार्थप्रकाश की प्राप्ति की उत्सुकता भरी कहानी

स्वामी जी अपनी धुन के बड़े पक्के थे। एक बार जो ठान लेते थे तो उसे कर ही गुजरते थे। जब सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय की बात मनमें आई तो उसे प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठे। अपनी इस आतुरता और अधीरता को दर्शाते हुए वे लिखते हैं कि—"मैं सीधा वच्छोवाली के आर्यसमाज मन्दिर की ओर सत्यार्थप्रकाश खरीदने के विचार से चल दिया। विक्रय पुस्तक भण्डार बन्द था। चपरासी ने कहा कि लाला केशवराम पुस्तकाध्यक्ष के आने पर पुस्तक मिल सकेगी। मैंने उनके घर का पता लिया और दो घण्टों की आवारागर्दी के पीछे उनका घर ढूंढ निकाला। केशवराम जी घर न थे, बड़े तारघर गये थे, क्योंकि वह तार बाबू (सिगनैलर) का काम करके ही आजीविका प्राप्त करते थे। मैं तारघर का पता लगाकर वहां पहुंचा। उस समय वह छुट्टी में जलपान के लिए घर गये थे। मैं फिर उनके घर लौटा तो वह तारघर लौट गये थे। पूछने से पता लगा कि वे डेढ़ घण्टे में ड्यूटी से लौटेंगे। मैंने वह डेढ़ घण्टा पास की गली के अन्दर मटरगश्ती में बिताया। एक सज्जन बाबू केशवराम जो के घर में जाते दिखाई दिये मैंने उन्हें जा घेरा। "महाशय जी मुझे सत्यार्थप्रकाश खरीदना है।' उत्तर मिला 'निवृत्त होकर कुछ खा लूं फिर आपके साथ समाज मन्दिर चलूंगा। मैंने अपना सारे दिन का इतिहास सुनाकर बाहर ठहरने की इच्छा प्रकट की। केशव जी का मुख सहानुभूति से चमक उठा औ

(शेष पृष्ठ ४ पर

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व

ले०—ओमप्रकाश शास्त्री सभागणक, रोहतक

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के शब्दों में–'स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवनभर अपने पसीने से मानवसेवा की और अन्त में अपने खून से।' स्वामी दयानन्द सरस्वती को वे अपना गुरु मानते थे। २३ वर्ष की आयु में मुन्शीराम जैसे नास्तिक और बुरी लतों में फंसे हुए नवयुवक ने स्वामी दयानन्द के दर्शन किये। जब वे स्वामी दयानन्द की भव्य आकृति को देखने लगे तो ठगे से रह गये। उनके सत्संग में लगातार दो सप्ताह तक जाते रहे, प्रश्न करते रहे, परन्तु फिर भी आस्तिक नही बन सके। अपने शराबी मित्र के हाथों से एक युवती की रक्षा करते समय उन्होंने दयानन्द के उपदेशों की सार्थकता समझी और अकस्मात् ही उनकी नास्तिकता चकनाचूर होगई।

वे अग्रेजों के समय में नायब तहसीलदार के पद पर कार्य कर रहे थे। लेकिन उन्होने जब देखा कि भारतीयों के प्रति अपमानजनक व्यवहार हो रहा है तो तुरन्त ही उन्होंने उस पद को ठुकरा दिया। उनके कानो के अन्दर स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेश गूंजने लगे—"विदेशी राजा चाहे न्यायप्रिय क्यों न हो, लेकिन उससे अधिक अच्छा स्वदेशी राजा है, चाहे वह अन्यायी क्यों न हो।" उनके अन्दर भावना जागृत हुई कि अब देश को अवश्य ही स्वतन्त्र कराना है। उन्होंने विचार किया कि परतन्त्र भारत में भारतीय सस्कृति नष्ट होती जारही है। इसलिए सस्कृति की रक्षा हेतु वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये। ३५ वर्ष की आयु मे उनकी पत्नी का स्वर्गवास होगया। उन्होने सच्चे वैदिक जीवनयापन करने की ठानी और सामाजिक कामों में समर्पित करने की ठानी। विशेष रूप से उत्साह के साथ आगे बढे। एक वर्ष के पश्चात् जालन्धर मे कन्या विद्यालय की स्थापना करदी।

डी०ए०वी० कालेज में उस समय वेद का पाठ पढाने पर 'गुरुदत्त' पर रोक लगादी गई, तब मुन्शीराम ने गुजरांवाला में गुरुकुल की स्थापना की। इसी गुरुकुल को उन्होंने हरिद्वार के समीप कांगड़ी ग्राम में स्थानातरित कर दिया। अपना शेष जीवन गुरुकुल को ही दे दिया। अपने पुत्रों को भी गुरुकुल मे प्रवेश दिलवा दिया। ईश्वर के भरोसे पर, दृढ़ आत्मविश्वास के भरोसे पर गुरुकुल को चलाया।

स्वामी जी हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। अग्रेजों की संगीनों के सामने छाती ताने खड़े होने के बाद उनको जामामस्जिद के मिम्बर से भाषण देने का गौरव मुस्लिम जनता ने प्रदान किया। स्वामी जी ने अनेक मुसलमानो को शुद्ध करके पुन वैदिकधर्म में मिलाया। लेकिन मुसलमान इस शुभकर्म को सहन नही कर सके। एक अन्यायी तथा दुष्टात्मा ने धोके से गोली मारकर हत्या करदी। स्वामी जी पथभ्रष्ट मुसलमान के हाथों वीरगति को प्राप्त हुए। स्वामी जी ने कभी हिम्मत नही हारी। मृत्यु का भय उन्हें बिल्कुल भी नहीं था। स्वामी दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चलकर उन्होंने अपना जीवन वेदप्रचार में ही लगा दिया। उनके व्यक्तित्व से हमें बहुत ही अधिक प्रेरणा मिलती है। हमें दु.ख है कि आज ऐसे महापुरुष हमारे बीच में नहीं हैं, इस कारण से समाज में कुरीति पनपती जारही है। लेकिन हमें धैर्य, साहस और धर्म को नहीं त्यागना चाहिए। उस महान् हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर देश-सेवा, समाज की उन्नति निःस्वार्थभाव से करनी चाहिए। स्वामी जी के व्यक्तित्व से यही प्रेरणा हमें मिलती है। तभी हम समाज को एक नया रूप दे सकते हैं। वैदिकधर्म का प्रचार करने में सफल हो सकते हैं, तभी स्वामी दयानन्द के स्वप्नों को साकार कर सकते हैं।

आवश्यक सूचना

गांव लेघां, जिला भिवानी में दस वर्ष से एक गोशाला बड़े अच्छे ढंग से चल रही थी, जिसमें सैकड़ों गौ हैं। जिसके व्यवस्थापक कृष्ण कुमार आर्य हैं। परन्तु अब उस गोशाला में दानी महानुभावों की सहायता की आवश्यकता है, नही तो गऊवे भूखी मरने का डर है। इसलिए दानी महानुभावो से नम्र-प्रार्थना है कि इस गोशाला की सहायता करके पुण्य के भागी बन। —रतनसिंह आर्य उपदेशक

हैदराबाद में भारतीय भाषा सम्मेलन २१ व २२ दिसम्बर ९१ को

हैदराबाद में आगामी १४-१५ दिसम्बर को होनेवाले भारतीय भाषा सम्मेलन में परिवर्तन करके २१ व २२ दिसम्बर को आयोजित करने का फैसला किया गया है। यह परिवर्तन केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह जी के अन्यत्र व्यस्त कार्यक्रमों के कारण किया गया है। इस सम्मेलन में दक्षिण भारत के कई मन्त्रियों, सांसदों तथा प्रसिद्ध समाजसेवी नेताओं को भी आमन्त्रित किया गया है।

इस सम्मेलन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नये अध्यक्ष श्रीराम रेड्डी जी के अतिरिक्त उत्तर तथा दक्षिण भारत के कई विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा सुविख्यात प्राध्यापक इत्यादि भाग लेंगे। इस कार्यक्रम के लिए हैदराबाद में व्यापक स्तर पर तैयारियां करली गई हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री बिमल वधावन एडवोकेट इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए हैदराबाद जायेंगे। यह सम्मेलन सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी की अध्यक्षता में होगा। इस सम्मेलन में समस्त भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी को राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित करने की विभिन्न योजनाओं पर विचार किया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्रप्रदेश के तत्वावधान में आयोजित इस सम्मेलन के अध्यक्ष श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य आर्यसमाज भारतीय द्वारा एक ऐसे मच का गठन करना है जिससे समस्त भाषाओं के विकास के लिए देश के समस्त प्रांतों, राजनीतिक दलों तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा संयुक्त प्रयास किये जा सके।

श्री वन्देमातरम् जी ने घोषणा करते हुए कहा कि देश की एकता व अखण्डता की नीव को सुदृढ़ बनाने के लिए निकट भविष्य में आर्यसमाज द्वारा अहिंसात्मक आंदोलन भी चलाये जायेंगे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक का १५ से १७ नवम्बर, ९१ को वार्षिकोत्सव एव २३ अक्तूबर से २१ नवम्बर तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ म० गुरुदत्त आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। महायज्ञ के ब्रह्मा श्री यज्ञपाल शास्त्री रहे। उत्सव में आर्यजगत् के विद्वान् व भजनोपदेशक आमन्त्रित किये गये। जिनमें सर्वश्री गणेशदास प्रधान, प्रिंसिपल सर्वदानन्द शास्त्री, प्रो० रामविचार अधि० हर० आर्य प्रादेशिक उपसभा, आसाराम सीताराम गाजियाबाद, हरिश्चन्द्र भजनोपदेशक, राजेश जैन प्रिंसिपल डी.ए वी, पब्लिक स्कूल, रोहतक मुख्य रूप से थे।

उत्सव में आर्य महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन, छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता, आर्य युवक सम्मेलन एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। —मक्खनलाल गांधी मन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

उन्होंने कहा—"महाशय जी! चलिए पहले आपको पुस्तक दे दू। जब तक आपका काम न करलूं, मुझे इत्मीनान न होगा।"

समाज मन्दिर में पहुंचने पर सत्यार्थप्रकाश मेरे हाथ में रखा गया। मैंने मूल्य दिया और इस प्रकार आह्लादपूर्वक लौटा, मानो बड़ा कोष हाथ लग गया है। मेरे साथी मुझे प्रातःकाल के भोजन में सम्मिलित न देख विस्मित थे। जब मैं पहुंचा तब सायंकाल का भोजन परोसा जारहा था, खूब भूख लगी थी, भोजन रुचिपूर्वक किया। शाम को भ्रमण के लिए गया ही नही। लैम्प जला, सत्यार्थप्रकाश की भूमिका समाप्त कर प्रथम समुल्लास के स्वाध्याय में लग गया।

पाठकवृन्द! सत्यार्थप्रकाश की प्राप्ति के लिए व्याकुलता और व्यग्रता इससे बढकर और फिर क्या हो सकती है? महर्षि की इसी ग्रन्थ ने मुन्शीराम को कल्याणमार्ग का पथिक बनाया था। काश! हम भी महर्षि के इस पावन ग्रन्थ को अपना प्रेरणास्रोत बना सकते।

भारत यात्रा की शुरूआत की विवेकहीन, अशुभ और अहितकर

—प्रो० शेरसिंह, पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

डा० मुरली मनोहर जोशी की गणना भारत के प्रबुद्ध नागरिकों में की जाती है और पिछले १५ वर्षों में मेरे सामने उनका यही रूप उजागर होता रहा। डा० जोशी इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र के प्राध्यापक रहे। वे एक वैज्ञानिक माने जाते हैं और भारत के संविधान के मूलभूत सिद्धांतों में उनकी आस्था भी प्रकट होती रही है। परन्तु जिस ढंग से उन्होंने अपनी (एकता यात्रा) की शुरूआत की है उससे देश के जागरूक और प्रबुद्ध व्यक्तियों के हृदयों पर चोट लगी है। उन्होंने विज्ञान, अन्धविश्वास और राजनीति को जो विषाक्त मिश्रण अपनी राजनीतिक प्रयोगशाला में तैयार किया है उसने देश के भविष्य की चिन्ता करनेवाले मनीषियों को चकित कर दिया है।

साम्प्रदायिक तत्त्वों के तुष्टीकरण और पन्थ निर्पेक्षता के नाम पर अल्पसंख्यकवाद तथा विघटनकारी शक्ति को मिले प्रोत्साहन से देश का ढांचा निस्सन्देह चरमराया है, परन्तु सुधार विरोधी दकियानूसी तत्त्वों के तुष्टीकरण और अन्धविश्वास के प्रचार-प्रसार ने राष्ट्र के ढाचे को यदि अधिक न तो उतनी ही हानि जरूर पहुंचाई। यह अन्धविश्वास कि एक लाख बार "सुदर्शन" का जाप करने से श्रीकृष्ण आह्वान पर अपना सुदर्शन-चक्र लेकर उपस्थित होगे और सब बाधाओं को समाप्त कर देंगे या चण्डी के ९०० नामों पर की हुई आहुतिया विजय और ऐश्वरीय प्रदान करेगी, हमारी सहायता उसी प्रकार नही कर पायेगी, जिस प्रकार ऐसे ही अन्धविश्वास के भरोसे ने न तो महमूद गजनवी को सोमनाथ का मन्दिर लुटने से बचाया और न देश की जनता को पराधीन बनने से बचाया।

भारत के जन-जन के हृदय एकात्मता विभिन्न नदियों के जलों को मिलाकर एक कलश मे भर लेने से या विभिन्न क्षेत्रों की मिट्टी को दूसरे कलश में भर लेने से उत्पन्न नही की जा सकती। देश के बिखराव को ऐसे सस्ते, थोथे और शोषणयुक्त नारो से नही रोका जा सकता, उसके लिए गम्भीर चिन्तन आवश्यक है और उस चिन्तन के पीछे हिम्मत से किये गये फैसले और उसी हिम्मत से किया जानेवाला अमल अति आवश्यक है। मिश्रित जल बेचकर या शिलापूजन के नाम पर पैसा तो अरबों इकट्ठा किया जा सकता है, परन्तु समस्या का समाधान इन धन्धों से सम्भव नहीं हो सकता।

देवी का वरदान प्राप्त करने के लिए उस पर पशुबलि करके चढ़ावा चढाना अत्यन्त क्रूर असभ्य और मानवता विरोधी कृत्य है। इस प्रथा को मान्यता देकर डा० जोशी ने हिन्दूसमाज और सम्पूर्ण देश की संस्कृति के प्रति कुसेवा और अपराध किया है। ऐसी प्रथाओं को मान्यता देकर वे उनके दल के नेता किस मुह से सतीप्रथा का विरोध करेंगे। पुराणों की कथाओं से प्रभावित होकर वे गोमांस खाने को मान्यता नहीं दे देंगे, इसकी क्या गारण्टी है। पुरी के शंकराचार्य का आशीर्वाद लेने के लिए कल यदि डा० जोशी कह बैठें कि छुआछूत तो हिंदूधर्म का अभिन्न अंग है तो कोई क्या कर लेगा। सुधारों के विरोधी तत्त्वों के तुष्टीकरण की मनोवृत्ति ने उन सबका विश्वास हिला दिया है जो वैदिकधर्म के उदार मानवतावादी और वैज्ञानिक दृष्टिकारी के आधार पर देश, समाज और राष्ट्र को सुसंगठित करने का स्वप्न संजोये हुए हैं और उसी आधार पर मानव की समस्याओं का समाधान चाहते हैं।

मैं गलती नहीं करूंगा यदि मैं यह मानलूं कि इस प्रकार की गतविधियों का उद्देश्य सुधाररूपी घड़ी की सूइयों को उल्टी दिशा में घुमाना है और दकियानूसी, सुधार विरोधी विचारों तथा अन्धविश्वास के विरुद्ध जो युद्ध दयानन्द, गांधी तथा अन्य सन्तों और सुधारकों ने समय समय पर छेड़े थे उनकी उपलब्धियों को धो डालने की यह प्रयास है।

डा० जोशी को यह नही भूलना चाहिए कि वे इस राष्ट्र के प्रतिष्ठित नागरिक हैं और भारत के संविधान ने भारत के नागरिकों के मूलभूत कर्त्तव्यों की ओर इंगित करते हुए अनुच्छेद ५१(ए) मे स्पष्ट उल्लेख किया है कि "भारत के प्रत्येक नागरिक का यह मूलभूत कर्त्तव्य होगा कि वह वैज्ञानिक मिजाज, मानवतावाद और अन्वेषणात्मक तथा सुधारवादी मनोवृत्ति को बढावा दे।" देवी से वरदान प्राप्त करने के लिए पशुबलि चढाना क्या बर्बरता और अमानुषिकता नही है, क्या वह मानवतावादी कही जा सकती है। क्या एक लाख जाप और चण्डी के ९०० नामों की नौ सौ आहुतियां देकर बाधायें दूर करवाने और विजय तथा ऐश्वर्य प्राप्त करने की लालसा सुधारवादी मनोवृत्ति की परिचायक है या इसमें कही कोई अन्वेषणात्मक बुद्धि निहित है ? क्या इससे वैज्ञानिक मिजाज का प्रतिपालन होगा ?

मैं डा० जोशी से चाहूंगा कि किसी दूसरी भावना से नही तो कम से कम संविधान के मूलभूत सिद्धातों में अपनी आस्था दोहराने के लिए राष्ट्र से क्षमा मांगे, क्योंकि जिस प्रकार विवेकहीन और अशुभ ढग से उन्होंने अपनी यात्रा की शुरुआत की है उससे राष्ट्र की अहिंसा प्राणी मात्र के कल्याण और विश्वप्रेम से प्रेरित मानवतावादी संस्कृति को ही नही, राष्ट्र के हितों पर भी चोट पड़ने का अंदेशा है। भारत को उस महान् संस्कृति की रक्षा करके ही हम राष्ट्र को महान् बना सकते हैं और मानवमात्र को प्रेरणा दे सकते हैं।

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल द्वारा निःशुल्क शिक्षा

५ दिसम्बर, १९९१ को टोहाना में हुए भयानक नरसंहार मे मरने वालों की आत्मा की शांति के लिए डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, टोहाना में एक शोकसभा" आयोजित की गई। जिसमें सभी छात्र-छात्राओं व अध्यापकों ने दो मिनट का मौन रखकर मृत आत्माओ की शांति हेतु प्रार्थना की तथा परमात्मा से उनके परिवार को यह असाम दु:ख सहने की शक्ति देने को प्रार्थना की।

इस अवसर पर डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल के प्राचार्य डा० धर्मदेव विद्यार्थी ने घोषणा की कि मृतकों के बच्चो की स्कूल शिक्षा की व्यवस्था डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, टोहाना द्वारा नि शुल्क की जायेगी। डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल मे उन्हें बिना कोई प्रवेश शुल्क लिए प्रवेश तथा किसी प्रकार की कोई फीस नही ली जायेगी। यदि आवश्यकता हुई तो ऐसे बच्चो को पुस्तकें तथा वर्दियां नि शुल्क देने का प्रयास भी किया जायेगा। इस आशय की सूचना सम्बन्धित परिवारो को दी जारही है।

प्राचार्य धर्मदेव
डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, टोहाना

वैदिक सत्संग

श्री स्वामी प्रभुनाथ जी महाराज जन्मभूमि बवानियां (महेन्द्रगढ़) दिनांक २६-९-९१ को इस संसार से विदा होगए। उनकी पुण्य स्मृति में दिनांक २६-९-९१ से ७-१०-९१ तक दैनिक-यज्ञ और वैदिक सत्सग किया गया। दिनांक ७-१०-९१ को विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। प्रात: श्री महावीर आर्य पुरोहित आर्यसमाज नारनौल ने यज्ञ करवाया। महाशय श्री प्रभातीलाल द्वारा लिखित भजन महाशय श्री सन्तलाल जी ने सुनाये। दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलिया दी गई। तत्पश्चात् साधु सम्प्रदाय के नियमानुसार श्री शेरसिंह को ज्येष्ठ उत्तराधिकारी तथा श्री बदलसिंह को कनिष्ठ उत्तराधिकारी चुना गया। श्री माधोप्रसाद आर्य तथा मा० श्री लालमण आर्य ने इस कार्यक्रम को बहुत सराहनीय व्यवस्था की। अन्त मे वैदिक-धुन और जय-जयकार के नारों से यह कार्यक्रम सुसम्पन्न हुआ। —लालचन्द विद्यावाचस्पति

श्री मगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम
खेडको महेन्द्रगढ़)

महान् देशभक्त स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी

मुक्त भारत को कराया, स्वामी श्रद्धानन्द ने।
नाद वेदों का बजाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥

जुल्म नित अंग्रेज भारी, करते थे पापी यहाँ।
राज अंग्रेजी हिलाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥१

त्यागकर वेदों के पथ को, थी सकल प्रजा दुःखी।
धर्मपथ सबको सुझाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥२

देश मे विधवाय लाखों करती थी निश दिन रुदन।
पुर्नविवाह चालू कराया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥३

राम की सन्तान नित बनते थे, ईसाई यवन।
चक्र शुद्धि का घुमाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥४

शौकत अली जिन्ना से, स्वामी जी कभी ना दबे।
देशहित था कष्ट पाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥५

महर्षि दयानन्द जी के, शिष्य श्रद्धानन्द थे।
त्याग का जीवन बिताया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥६

गुरुकुलों को खोलकर, विद्या के खोले द्वार थे।
हमको मिटने से बचाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥७

शेर बन करके किया था, दुश्मनों का सामना।
मौत का ना खौफ खाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥८

गांधी, मोतीलाल ने, सम्मान था उनका किया।
स्वतन्त्रता का गीत गाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥९

ऐसा नेता विश्व में, कोई नही आता नजर।
धर्म पर सब कुछ लुटाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥१०

दिल्ली चांदनी चौक में, ताना था सीना वीर ने।
नाम दुनियां में कमाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥११

बात उनकी मानलो, इसमें भलाई है सभी।
जो कहा उसको निभाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥१२

जाग जाओ हिन्दुओं, कहना है 'निर्भय' का यही।
ढोंगियों का ढोंग ढाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥१३

—प नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पो० बहीन, जिला फरीदाब (हर०)

मुन्शीराम—श्रद्धानन्द

तुच्छ सीप में मूल्यवान मोती पलता है
शूलों में फूलों का जीवन रथ चलता है
जैसे रात्रि के आंचल से प्रात फूटता
धूम पुञ्ज से जैसे ज्वाला बाण छूटता
तूफानी लहरों से पोत यथा बच पाये
और भंवर से उछल स्वय तट को छू जाये
कमल कीच से निकले औ मुस्काये जैसे
दर्पण मल को छोड, बदन दिखाये जैसे
ज्यों रसाल गुठली को फोड बढकर लहराये
बुझा दीप जलते दीपक से ज्योति पाये
क्षुद्र नदी जल सुरसरिता से जब मिल जाये
नाम रूप तज गंगोदक पावन कहलाये
जैसे लोहा पारसमणि से छू जाने पर
बन जाता है स्वर्ण, चमक उठता है सत्वर
ऐसे मुन्शीराम ऋषि से जब मिल पाये
त्याग कलुष बलिदानी श्रद्धानन्द कहाये

—ले० श्री उत्तमचन्द शरर एम०ए०

श्रद्धानन्द संन्यासी

कर गये प्राणों का बलिदान स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी।
दयानन्द स्वामी का भाषण सुनकर सही विचारा॥

पट हृदय के खुले दूर अज्ञान हो गया सारा॥
त्याग दिये दुर्व्यसन ध्रुव सम अटल व्रत को धारा।
निज जीवन को तपे हुए सोने की तरह निखारा॥
करने लगे प्रभु गुणगान—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी॥१

ऊंच-नीच और भेदभाव का जग से भूत भगाया।
ये पथभ्रष्ट विधर्मी-जन उन सबको शुद्ध कराया।
भाई-भाई मिला दिये, शुद्धि का चक्र चलाया।
गंगातट पर हरिद्वार में गुरुकुल खोल दिखाया॥
मंगल जंगल के दरम्यान—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी॥२

मानवता जो उठी एकदम राष्ट्र प्रहरी जागे।
वेदधर्म का नाद बजाया दुष्ट कुकर्मी भागे॥
भारत में उत्पात फिरंगी जहां वहां करने लागे।
सीना खोल अड़े श्रद्धानन्द संगीनों के आगे॥
ये है वीरों की पहचान—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी॥३

सन् उन्नीस सौ छब्बीस का आया तेईस दिसम्बर।
प्राणों का घातक निकला कितना समय भयंकर॥
एक दुष्टात्मा निकट गया रखी पिस्तौल छिपाकर।
दी सीने में दाग दिया कमरे में रक्त बहाकर॥
परहित में दे गये जान—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी॥४

रचयिता : स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

श्रद्धा से श्री श्रद्धानन्द ने, वैदिक नाद बजाया था।
इसकी खातिर आपने अपना, सब कुछ भेंट चढ़ाया था॥

ऋषिवर के चरणों में आकर, जीवन का रुख मोड़ लिया।
विषम वासनायें यौवन की, उनसे नाता तोड़ लिया।
छोड दिया फिर चलन कुपथ का, वैदिकपथ अपनाया था।
इसकी खातिर उसने अपना, सब कुछ भेंट चढ़ाया था॥१

अंग्रेजों की छद्म नीति से, भारत देश बचाने को।
उत्तम राष्ट्रीय शिक्षा देश के, घर-घर में पहुंचाने को।
गुरुकुल स्थापन संकल्प को अपने, पूरा कर दिखलाया था।
इसकी खातिर उसने अपना, सब कुछ भेंट चढ़ाया था॥२

कूदे आजादी के युद्ध में, बनकर वीर सेनानी।
गोरों की संगीन के आगे अपनी छाती तानी।
निर्भीक सन्यासी ने अरिदल को, नीचा सिर दिखलाया था।
इसकी खातिर उसने अपना, सब कुछ भेंट चढ़ाया था॥३

छुआछूत का भूत चढा था, सर पर अपने भाइयों के।
फन्दे में वे फसने लगे थे, यवनों और ईसाइयों के।
देश एकता के हित उसने, शुद्धि चक्र चलाया था।
इसकी खातिर उसने अपना, सब कुछ भेंट चढाया था॥४

"पाल" यह [illegible] हमारा, मान बढ़ाये देश का।
सत्यनिष्ठ हो पालन करना, ऋषियों के आदेश का।
उस ही पथ पर बढते जाना, वीरों ने दर्शाया था।
इसकी खातिर उसने अपना, सब कुछ भेंट चढाया था॥५

—धर्मपाल आर्य
नरवाना (हरयाणा)

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में सादर

शब्द-सुमनांजलि

हे ! त्यागमूर्ति आनन्दकन्द।
धन्य तुम्हें है श्रद्धानन्द॥

सत्पथ की तुमने गही राह,
अपनी न रही हां, एक चाह,
परहित में ही संलग्न रहे,
दीनों के देखे दुःख-दाह।

बलि-पथ में विहरे तुम स्वच्छन्द।
धन्य तुम्हें है श्रद्धानन्द॥

जाति हित की चिन्ता गहरी,
बनकर आये थे तुम प्रहरी,
शुद्धि का चक्र चलाया था,
थी धर्म-ध्वजा नभ में फहरी।

जातीय-काव्य के बने छन्द।
धन्य तुम्हें है श्रद्धानन्द॥

पतितों को फिर से अपनाया,
सूखा सर सा हो, सरसाया,
पतझड़ था देखो उपवन में,
तुमने ही माधव विकसाया।

समरस किया था वर्ण-द्वन्द्व।
धन्य तुम्हें है श्रद्धानन्द॥

गही परम्परा की हाथ डोर,
संस्कृति का सरसा नवल भोर,
जाति को जीवन दान दिया,
तुम थे आशा की किरण कोर।

है सुयश आज भी तव अमंद।
धन्य तुम्हें है श्रद्धानन्द॥

डा० धर्मचन्द विद्यालंकार
प्रवक्ता सनातन धर्म महाविद्यालय
पलवल (फरीदाबाद)

शिवरात्रि पर ऋषि-मेला

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी शिवरात्रि पर ऋषि मेला १, २,३ मार्च, ९२ को मनाया जारहा है। जो लोग टंकारा रेल द्वारा जाना चाहें, उनके जाने-आने की सीटें उनकी स्वीकृति आने पर सुरक्षित करवादी जायेंगी। उनके आवास एवं भोजन का प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा। अपनी स्वीकृति तथा सदस्यों की सूची ३१-१२-९१ तक "आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१" के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

गतांक से आगे—

		रुपये
१	मन्त्री आर्यसमाज थानेसर, जिला कुरुक्षेत्र	५००
२	,, ,, मनाना जिला करनाल	१००
३	श्री राजपालसिंह ग्राम बरहाणा, जिला रोहतक	१०१
४	,, चौ० धर्मचन्द म०न० २०/८१६ डी० एफ० कालोनी, रोहतक	१००
५	प्रधानाचार्य स्वामी विरजानन्द, आदर्श उच्च विद्यालय गढी बीरबल (लवकरी) जिला करनाल	२५१
६	श्री मेहमासिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज गढ़ी बीरबल (लवकरी) करनाल	१०१
७	,, गुरनामसिंह आर्य उप-प्रधान आर्यसमाज गढ़ी बीरबल (लबकरी) जिला करनाल	१००
८	,, ला० सोमनाथ आर्य कोषाध्यक्ष ,, ,, ,, (लबकरी) जिला करनाल	५१
९	,, वैद्य प्रभुदयाल आर्य ,, ,, ,,	५१
१०	,, म. रमेशचन्द्र आर्य भजनोपदेशक ,, ,, ,,	२१
११	,, छताराम, पानीपत	१०
१२	,, डा० बिशम्बरदयाल छिल्लर डाढ़ी पो० दूधवा जिला भिवानी	१०५
१३	,, कृष्ण मिस्त्री सु० श्री उमेदसिंह ग्राम खरावड़ जिला रोहतक	५१
१४	,, बलबीरसिंह नम्बरदार कोषाध्यक्ष आर्यसमाज शेखपुरा पो० घरोंडा, जिला करनाल	२००
१५	,, नत्थूराम सैनी सिविल रोड १०७४/१६ रोहतक	३० वस्त्र
१६	,, रामबक्स सैनी आयनगर सैनी गली, रोहतक	३ वस्त्र

रनतसिंह आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा

१	श्री हनुमान आर्य सिवानी मण्डी, जिला हिसार	५१
२	,, दयानन्द अग्रवाल लोहा भण्डार सिवानी मण्डी जिला हिसार	५१
३	,, फकीरचन्द क्लाथ हाउस सिवानी मण्डी जिला हिसार	२५
४	,, जयभारत क्लोथ स्टोर ,, ,, ,,	५१
५	,, केड़िया ब्रादर्स ,, ,, ,,	२१
६	,, सिंगला किरयाना स्टोर ,, ,, ,,	२१
७	,, छयोगमल ,, ,, ,,	५१
८	,, कांशीराम अग्रवाल ,, ,, ,,	३१
९	,, रमेशकुमार ,, ,, ,,	२१
१०	,, मगलचन्द खेड़ेवाला ,, ,, ,,	२१
११	,, डा० सुरजीतसिंह पुरुषार्थी ,, ,, ,,	२१
१२	चौ० प्रेमराज नीमड़ीवाले, दुकान नं० २९ नई अनाज मण्डी, भिवानी	५१

(क्रमशः)

आवश्यक सूचना

हैदराबाद के उन सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है कि तीसरे केस में जो २९ आदमी सम्मिलित थे उस केस को हम जीत गये हैं। इसके साथ जो ११ आदमियों ने केस किया था उसमें भी जीत गये हैं। मेरे अनुमान के अनुसार डेढ़ महीने में भारत सरकार के पास से सबके पास चिट्ठी आजायेगी। उस पत्र में जो सुझाव हैं उसके अनुसार कागज तैयार करके भारत सरकार के पेंशन विभाग को भेज देने चाहिये। यदि इस चिट्ठी की कोई बात समझ में न आये तो दयानन्दमठ रोहतक में आकर जानकारी करलें।

महाशय भरतसिंह
संयोजक : हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पेंशन समिति

(पृष्ठ २ का शेष)

आदि में उन्हें निमोनिया होगया। बीमार अवस्था में आराम कर रहे स्वामी जी को २३ दिसम्बर, १९२६ शाम ४ बजे एक मुसलमान षड्यंत्रकारी बुजदिल कातिल अब्दुल रशीद ने पिस्तौल से वार किया। पहली गोली स्वामी जी के छाती में लगी और प्राण निकल गये। बलिदान के तीसरे दिन स्वामी जी के शरीर की अन्त्येष्टि सम्पन्न हुई। अन्त्येष्टि का यह जुलूस "न भूतो न भविष्यति" था। जो विराट् जुलूस सम्राटों को भी रिझानेवाला था। यमुना के निगम घाट पर अग्निदेव ने अपनी ज्वालाओं में उस सन्यासी के शरीर को समेट लिया जो स्वयं अग्नि के तुल्य ही तेजस्वी तथा अग्नि शिखा के तुल्य काषाय (भगवा) वस्त्रों से आच्छादित था।

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द अपने चारित्रिक पतन की खाई से उठकर त्याग, तपस्या, सेवा, सहानुभूति, मानव-प्रेम एवं राष्ट्र-धर्म रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर कर सर्वोच्च शिखर पर ज्योतिमान नक्षत्र की तरह चमका। उसके बलिदान दिवस पर उनके जीवन से शिक्षा लें और आपसी प्रेम, सहानुभूति तथा राष्ट्रीय एकता को सर्वोपरि बनायें।

त्याग मूर्ति आर्यवीर संन्यासी अनुपम।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें शत-शत प्रणाम॥

२३ दिसम्बर को हुए बलिदान दिवस पर विशेष लेख

निडर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द –आज एक पुनर्मूल्यांकन

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

राष्ट्रीय महानता

निर्भीक सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश की एकता के लिए देश को विदेशी सरकार की पराधीनता से स्वतन्त्र कराने के लिए, साम्प्रदायिकता का बीज नाश करने के लिए, विश्व में स्वतन्त्र भारत का गौरव बढ़ाने के लिए अपने जीवन में महान् काय किये उन्हीं के परिणामस्वरूप आज भारत स्वतन्त्र है। २३ दिसम्बर, १९२६ के उनके बलिदान के बाद यदि देश के नेता उनके बताये के अनुसार कार्य करते तो देश का विभाजन न होता। १९४७ में देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् भी यदि उनके बताए हुए आदर्शों पर हमारी सरकार चलती तो आज भारत को इतनी समस्याओं एव राष्ट्रीय संकटों का सामना न करना पड़ता और आज भारत में शांति और सुख समृद्धि हो सकती थी।

भारत माता को गुलामी की जंजीर से मुक्त करने के लिए जब और लोग योजनामात्र बना रहे थे उस समय तक स्वामी जो कमर कसकर, देशसेवा का व्रत लेकर मैदान में कूद चुके थे। उस समय उनका एक ही लक्ष्य एवं उद्देश्य था, वह था—भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करना।

वे जब तक जीवित रहे उनके सामने देशमुक्ति की कठोर प्रतिज्ञा रही। उनके दिल की हर धड़कन में राष्ट्रसेवा की झंकार रही। उनकी हर सांस में भारत के गौरव के गीत गूजते रहे। कदाचित् बलिदान के समय में भी उनके मनमें यही दुःख रहा होगा कि वे स्वतन्त्र भारत की माटी में न मिल सके।

हां, इतना अवश्य है कि राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने का जो संकल्प उन्होंने किया, अपने महान् बलिदान द्वारा उसे पूरा किया। निःसन्देह उन्होंने यह प्रेरणा महर्षि दयानन्द द्वारा ही प्राप्त की थी।

स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व जहां महान् धार्मिक था, वहां वे अत्यधिक राष्ट्रीय चरित्र के महान् व्यक्ति भी थे।

भारत के नेताओं की राष्ट्र के लिए की गई सेवाओं का उल्लेख करते हुए सभी निष्पक्ष लेखकों ने यहां तक लिख दिया कि यदि महर्षि दयानन्द हिन्दुओं को जागृत न करते और स्वामी श्रद्धानन्द यदि उनमें राष्ट्रीय प्रेरणा का प्रसार न करते तो कई युगों तक भारत की स्वतन्त्रता एक स्वप्नमात्र ही रहती।

और अगर सूक्ष्मता से देखा जाए तो यह बात अक्षरशः सत्य है कि जब अंग्रेजों के कूटनीतिक जाल में फसकर आर्यजनता छटपटा रही थी और आर्यत्व खतरे में पड़ा हुआ था, ऐसे अवसर पर शासक अंग्रेजों के क्रूर पंजों से आर्यों को छुड़ाने का साहस भला किसने किया? उन्हें अधोगति की ओर जाने से किसने बचाया। निःसन्देह महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने। अगर वे न होते तो हिन्दू और हिन्दुत्व का क्या होता? यह तो भगवान् ही जाने।

स्वामी जी के व्यक्तित्व और उनके महान् गुणों को तो भारतवासी १९१९ और उसके बाद के आंदोलनों के कारण ही जान सके। वे स्पष्टवादिता तथा निर्भीकता को साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। वह निर्भीकता जिस प्रखर ज्योति के साथ अंग्रेजी सरकार के सामने चमकती थी, उसी ज्योति के साथ औरों के मुकाबले में भी अपनी छटा दिखलाती थी। जो लोग अंग्रेजो काले कानून के विरोधी आंदोलन के समय दिल्ली के चांदनी चौक में न थे, उनके हृदयपटल पर भी स्वामी जी की वह मूर्ति अमिट रूप से चित्रित है—जो सीने को अंग्रेजी गोलियों और संगीनों के सामने खोलकर कह सकती है—लो, सामने खड़ा हूं गोली मारो। यह थी उनकी निर्भीकता एवं हृदय की शुद्धता। इसी शुद्धता के कारण ही ४ अप्रैल, १९१९ को मुसलमान भाइयों ने स्वामी जी को उपदेश देने के लिए दिल्ली की जामा मस्जिद में बुलाया था। जामा मस्जिद के इतिहास में यह पहला और अन्तिम अवसर था। जब किसी आर्य ने मुसलमानों से निमन्त्रण पाकर उन्हें जामा मस्जिद के मंच से उपदेश दिया हो। यह थी वास्तविक हिन्दू मुस्लिम एकता। यह था हिन्दू मुस्लिम एकता का मनोरम दृश्य। किन्तु बाद में महात्मा गांधी जी ने मुस्लिमों की तुष्टीकरण की नीति को अपनाकर भारत विभाजन का महान् अपराध किया। आज भी भारत सरकार मुसलमानों को सन्तुष्ट करने में लगी हुई है। अल्पसंख्यक आयोग बैठाकर उनके लिए पृथक् कानून पास कर रही है जबकि राष्ट्रीयएकता के लिए समान नागरिक संहिता का होना अत्यन्त आवश्यक है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४४ के अनुसार भारत के नागरिकों को यह आश्वासन दिया गया था कि भारत के सभी नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता करने की दिशा में प्रयास किये जायगे। अनुच्छेद चवालीस राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों का भाग है किन्तु देश का दुर्भाग्य है कि भारत की कांग्रेसी सरकार महत्त्वपूर्ण नीति निर्देशक सिद्धांत की ओर अब तक भी ध्यान नहीं दे रही? सर्वोच्च न्यायालय की पांच सदस्यों की संविधानपीठ के शाहबानो बेगम के मुकदमें के फैसले से तलाक के सम्बन्ध में समान नागरिक कानून की आवश्यकता जग जाहिर होगई है। तलाक तथा अन्य मुस्लिम शरीयत के कानूनों के अनुसार मुस्लिम महिलाओं की विवशता और उनके अधिकारों के सम्बन्ध में उठा यह प्रश्न इस बात को स्पष्ट करता है कि समान नागरिक संहिता का अभाव देश में एक बहुत बड़े मुस्लिम महिलावर्ग को संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों से वंचित करना है जो कि लोकतान्त्रिक व्यवस्था का अपमान है। संविधान की स्पष्ट अवहेलना है, जबकि मौलवी मुल्लाओं का शरीयत का कानून ही उन पर चलेगा। उनके शोर मचाने से ही संविधान में संशोधन हुआ उस समय न्यायमूर्ति चन्द्रचूड़ ने अत्यन्त खेद के साथ कहा था कि अनुच्छेद ४४ एक मृतपत्र बनकर रह गया है। इसके अतिरिक्त यह भी हुआ कि—राष्ट्रीयएकता के पक्षधर पं० नेहरू आखिर उस समय अनुच्छेद ४४ को कार्यरूप में परिणत करने के लिए काम क्यों न कर सके जबकि भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के कड़े विरोध के अतिरिक्त भी उन्होंने हिन्दू कोड बिल पास कराया। उन्हें महसूस होता था कि इससे हिन्दू महिलाओं के अधिकारों का हनन हो रहा है तो फिर मुस्लिम महिलाओं के विरुद्ध अन्याय और शोषण को वे क्यों सहन करते रहे? कारण इसका मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति ही है। इसी प्रकार कश्मीर में ३७० धारा लगाकर शेख अब्दुल्ला को खुश करने के लिए कश्मीर को अन्य राज्यों से विशेष दर्जा दिया गया। जो कश्मीर आज सारे राष्ट्र के लिए सिरदर्द बना हुआ है। घुसपैठियों तथा उग्रवादियों का घर बना हुआ है। उससे लगता है पंजाब भी आज पूरी तरह से आतंकवाद, अलगाववाद, उग्रवाद की चपेट में आकर जल रहा है।

मुस्लिमों के बारे में विचार करते समय कांग्रेसी नेता यह भूल जाते हैं कि मुस्लिम कानूनों के बारे में मुस्लिम देशों में भी संशोधनवादी लहर चल रही है। मिस्रवासी कोई भी व्यक्ति अपनी पूर्व पत्नी और अदालत की इजाजत के बिना दूसरा विवाह नहीं कर सकता। ट्यूनिशिया ने एक ही प्रहार से बहुविवाह-प्रथा का अन्त कर दिया है। वहां अब कोई भी पुरुष अपनी पत्नी को तलाक नहीं दे सकता। पाकिस्तान ने भी तलाक को अब कठिन बना दिया है। किंतु भारत में अलग से कानून बनाये जाते हैं। यहां मुस्लिम चार-चार पत्नियों से विवाह कर सकते हैं। चारों से यदि पांच-पांच बच्चे पैदा हो तो एक पुरुष से २० बच्चे पैदा हुए और इनके लिए परिवार नियोजन का कानून भी नहीं है। यह तो मात्र हिन्दुओं के लिए ही है। क्या यह संविधान का उल्लंघन नहीं? भारत को भी संविधान में संशोधन करके इस [illegible] से मुक्ति पानी होगी और उसे समान नागरिक संहिता की दिशा में तीव्रगति से कदम उठाने होंगे, नहीं तो यदि इसी प्रकार किसी एक सम्प्रदाय को सन्तुष्ट करने की नीति चलती रही तो देश का पुनः विभाजन होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस की इन निकृष्ट नीतियों के कारण ही २३ जुलाई, १९२३ को कांग्रेस से अपना इस्तीफा तत्कालीन कांग्रेस प्रधान मोतीलाल नेहरू को भेज दिया था। इसका कारण भी यही था कि कांग्रेस के किसी अधिवेशन में मोहम्मद अली, शौकत अली दोनों भाइयों ने हरिजनों को आधा-आधा बांट लेने की बात कही थी। गांधी जी व अन्य कांग्रेसी नेता उस समय भी चुप रह गए थे। स्वामी जी ने इस अधिवेशन में मुस्लिम नेताओं को करड़ा उत्तर देते हुए कहा था—क्या हरिजन कोई भेड़-बकरी हैं जोकि उनका बटवारा किया जाये। स्वामी जी ने यहीं पर ऐलान किया कि हम शुद्धि का चक्र चलायगे। इसके लिए उन्होंने फरवरी, १९२३ में आगरा में "हिन्दू शुद्धि सभा" की स्थापना की जिसके द्वारा मेवात हरयाणा के मेवों की २० हजार मुसलमानों की शुद्धि की गई। इस प्रकार कांग्रेस त्यागकर वे समस्याओं की आंधी से अकेले ही जूझते रहे। साम्प्रदायिकता की धारा का मुंह मोड़ते रहे और अन्त में मुस्लिम साम्प्रदायिकता के कारण ही २३ दिसम्बर, १९२६ को उनका बलिदान हुआ।

यदि १९२३ से ही शुद्धि का कार्य सुचारु-रूप से चलता और कांग्रेस के नेताओं की ओर से इसका विरोध न होता तो पाकिस्तान ही न बनता।

आज हम जब स्वामी जी के बलिदान दिवस पर उनके क्रांतिकारी कार्यों का पुनर्मूल्यांकन करते हैं तो सारी समस्याओं व संकटों का समाधान महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द तथा आर्यसमाज की उस समय की कार्य-पद्धति से हो सकता है और देश को बचाया जा सकता है। शासकों ने देश को अनेक विपत्तियों में डाल दिया है। आर्थिक रूप से देश दिवालिया होगया है। बाहर भीतर से देश के शत्रु अवसर की प्रतीक्षा में बैठे हैं।

आज राष्ट्ररक्षा का प्रश्न सर्वोपरि है। आज से पहले देश इतने भारी संकट में कभी नहीं फसा था। अनेक देशद्रोही शक्तियां सिर उठा रही हैं।

१९४७ में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पुण्य प्रभात में ही सूर्योदय होते ही गोहत्या बन्द की जानी चाहिए थी। राष्ट्रभाषा हिन्दी होनी चाहिए थी, शराब बन्द होनी चाहिए थी। आज सारे देश इसका अभ्यासी होगया है, विशेषकर हरयाणा। राष्ट्रधर्म निर्पेक्ष नहीं मतमतांतर के आग्रह से रहित धर्मसापेक्ष होना चाहिए था। राष्ट्र के जन-जन में देशभक्ति की भावना जागृत होनी चाहिए थी। शिक्षा में भारी परिवर्तन करके सभी को समान दीक्षा-शिक्षा देनी चाहिए थी। रोजगार की कोई समस्या न होकर सबको अनेक शिल्पकलाओं में पारंगत करना चाहिए था। रिश्वतखोर चोरों को सख्त सजा होनी चाहिए थी। देश के गद्दारों को मृत्युदण्ड देना चाहिए था। बलात्कारियों, चोर बाजारियों को भरपूर दण्ड होना चाहिए था। बालविवाह व दहेज पर पूर्ण प्रतिबन्ध होना चाहिए था। ऐसी अनेक राष्ट्रीय समस्यायें हैं जिनका समाधान शीघ्र ही होना चाहिए। यदि आज स्वामी श्रद्धानन्द होते तो इन राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान कर पाते, देश आगे बढ़ता। आर्यसमाज से आशाय की जाती थी वह भी आज लम्बी तानकर सो गया है। किं करोमि, क्व गच्छामि को देशमुद्धरिष्यति।

अन्त में यही कहकर विनम्र श्रद्धांजलि—

बतलाओ कुछ सोच समझ कर,
ऐसा था वह कौन महान् ?
आर्यसमाज के वे रत्न थे,
कहलाए स्वामी श्रद्धानन्द,
प्रातः स्मरण ही जिसका,
भर देता मनमे आनन्द।

आर्यसमाज क्योडक गेट कैथल का चुनाव

प्रधान—सवश्री अमरसिंह शोरेवाला, उपप्रधान—ला० हरिराम कपड़ेवाले, मन्त्री-डा० मनोहरलाल, उपमन्त्री-जुगलाल, प्रचारमंत्री—इकबालचन्द, कोषाध्यक्ष—युद्धविन्द्रकुमार।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की वंशावली

श्री मुन्शीराम जी का पहला नाम वृहस्पति था। जन्म फाल्गुन वदी १३, १९१३ विक्रमी तलवन में पत्नी श्रीमती शिवदेवी जी सुपुत्री श्री सालगराम से १८८७ ई०, १९३४ विक्रमी में विवाह हुआ। १९१७ ई. में संन्यास ग्रहण करके स्वामी श्रद्धानन्द बने।

वेद कुमारी	हेमन्त कुमारी	हरिश्चन्द्र	इन्द्र जी	सुमित्रा
जन्म १८८१ ई०	१८८५ ई०	२७-११-८७ ई०	१८८९ ई०	१८९१ ई० (१८९५ में निधन)

श्री हरिश्चन्द्र जी एवं श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति स्नातक (गुरुकुल शिक्षा समाप्त की) बने १९१२ ई०।

श्री हरिश्चन्द्र जी ने देहली में सद्धर्म प्रचारक और क्रांतिकारी पत्र 'विजय' जारी किया। केवल ६-७ अंक ही निकले थे अंग्रेज सरकार ने बन्द करवा दिया। २३-१२-१९२६ ई. को अब्दुल रसीद नामी मुसलमान ने पिस्तौल की तीन गोली मारकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को शहीद कर दिया।

जन्म—फाल्गुन वदी २३, १९१३ विक्रमी

विवाह—१९३४ विक्रमी, १८७७ ई० श्रीमती शिवदेवी सुपुत्री श्री सालगराम जी से।

महर्षि दयानन्द जी से मिलन—१४ श्रावण से ३ भाद्रपद १९३६ विक्रमी बरेली में।

आर्यसमाज में प्रवेश—१८८४ ई०।

वकालत पास की—१८८७ ई०।

धर्मप्रचार की लग्न—१८८८ ई०।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान बने—१८९२ ई०

सत्यधर्म प्रचारक उर्दू पत्रिका निकाली—१८८९ ई०।

गुरुकुल खोलने का संकल्प किया—१८९८ ई०।

गुरुकुल जारी किया—१९०२ ई०।

सत्यधर्म प्रचारक उर्दू से हिंदी में की—१ मार्च, १९०७ ई०।

संन्यास ग्रहण किया—१९१७ ई०।

पटियाला केस में ८५ आर्य कार्यकर्त्ताओं को बन्दी बनाया गया—११-१०-१९०९ ई०।

केस की पैरवी—१९०९ ई०।

पंजाब कांग्रेस के प्रधानपद से सुशोभित—१९१९ ई०।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान बने—१९०८ ई०।

जामामस्जिद देहली में वेदमन्त्र पढ़कर भाषण दिया—१९१९ ई०।

अमर बलिदान—२३ दिसम्बर, १९२६ ई० देहली में।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी
गुरुकुल भटिण्डा, पंजाब

ऋषि दयानन्द का जीवन : कुछ विचारणीय बातें

(डा० भवानीलाल भारतीय)

गतांक से आगे—

यहां एक बात और ध्यातव्य है कि प० लेखराम ने जिन लोगों के संस्मरणों और बयानों को लिपिबद्ध किया, उन्हें वस्तुनिष्ठ शैली में ही प्रस्तुत किया है। वे अपनी ओर से इन कथनों पर किसी प्रकार की टीका टिप्पणी नहीं करते तथा किसी प्रकार का मुलम्मा भी नहीं चढाते। यही कारण है कि पं० लेखराम द्वारा संग्रहीत इस जीवन-चरित में चरितनायक का जो चरित्र एवं व्यक्तित्व उभर कर हमारे समक्ष आया है वह वास्तविक है,अतिरंजना से पूर्णत: मुक्त है तथा सहज, स्वाभाविक एवं अकृत्रिम है। एक और स्मरणीय बात यह है कि प० लेखराम ने स्वामी जी से सम्बन्धित बातें केवल उन लोगों से ही नहीं पूछी थी जो उनके अनुयायी, भक्त, प्रशंसक तथा शिष्य थे। अपितु उन्होंने तो स्वामी विषयक जानकारी लेने का प्रयत्न उन सभी लोगों से किया था जिन्होंने किसी न किसी स्थान, परिस्थिति अथवा परिवेश में उस अवधूत संन्यासी को देखा था जो सर्वतन्त्र स्वतन्त्र, पूर्णतया उन्मुक्त भाव से विचरता हुआ देश एवं मानवता के हित का अविरत चिन्तन कर रहा था।

यहां हम कुछ ऐसे उदाहरण देने का लोभसंवरण नही कर सकते जिनसे पाठकों को विदित होगा कि साधारण से साधारण व्यक्तियों ने दयानन्द को कैसा जाना, कैसा पाया अथवा वे उनके सम्बन्ध में कैसे विचार अथवा धारणायें रखते थे। यहां यह पुन: स्मरण करादें कि ये वे लोग हैं जिनसे दयानन्द का कोई लेना-देना नहीं था। न तो ये उनके प्रशंसक हैं और न उनके अनुयायी। ये तो 'Comman man in the Street'—सडक पर चलते हुए साधारण आदमी हैं जिनको इस महा-पुरुष को देखने का सौभाग्य समकालीन होने के कारण अनायास ही प्राप्त होगया था।

सोरों (जिला एटा) निवासी गुसाई बलदेवगिरी ने पं० लेखराम को बताया कि "एटा जिले का एक ठाकुर अपने चार साथियों सहित आया और स्वामी जी के साथ अभद्रतापूर्ण व्यवहार करने लगा तो हमने उसे रोका, वह नहीं माना और दुष्टता की बाते करने लगा। इतना ही नही उसने अपने लोगों से कहा कि इसे(बलदेवगिरि को)पकड़ लो। उसकी आज्ञा पाकर उसके साथी मेरी ओर लपके और हाथ चलाया। "हम चूंकि अखाडमल्ल थे—एक उनका हाथ और एक पांव पकड़कर हमने उनको फेंक दिया। हमारे साथ और भी लोग थे, उन्होंने उसकी दाढ़ी और तलवार पकड़ली। पहले के हाथ से जब लाठी छूट गई तो हमने ले ली और लेकर सबके स्तम्भों पर दो-दो लगाई। इस पर वे सब फिसलते-फिसलते गंगा के कीचड़ में जा गिरे और फस गये। इस लड़ाई के पश्चात् हमको ध्यान आया कि कहीं ऐसा न हो कि स्वामी जी हमसे क्रोधित होगये हों और हमारे भोजन को ग्रहण न करें, परन्तु स्वामी जी ने हमारी ओर देखा और कहा—"श्रृणु हस्तप्रक्षालन कृत्वा भोजनमानय' अर्थात् सुनो, हाथ धोकर भोजन ले आओ। मैं भोजन लाने चला गया। भोजन के पश्चात् स्वामी जी ने हमें कहा कि चलो गंगा के तट पर डोल आवें।"

गंगातटवर्ती स्थानों पर भ्रमण करते समय स्वामी दयानन्द 'कोलाहल स्वामी' के नाम से प्रसिद्ध होगये थे। इसका कारण यह था कि जब वे किसी की बात को वेदादि के प्रतिकूल जानते तो उसका प्रतिवाद करते हुए कह देते यह मिथ्या है—'मनुष्याणां कोलाहल:' लोगों का कोलाहल मात्र है। अब जैसाकि लोक का स्वभाव है 'कोला-हल' शब्द का बार-बार प्रयोग करने के कारण जनसमाज ने भी उन्हें 'कोलाहल स्वामी' के नाम से पुकारना आरम्भ कर दिया था। आगरा जिले के होलीपुर ग्रामवासी वैद्यराज रामदयाल चौबे ने प० लेखराम को बताया कि एक बार जब उनकी भेंट बदरिया ग्राम निवासी प० गणेश से हुई तो उन्होंने बताया कि एक 'कोलाहल' आये हैं जो किसी को नहीं मानते हैं। बताने वाले का अभिप्राय यह था कि स्वामी दया-नन्द पौराणिक मत में मान्य किसी भी देवी देवता अवतार, तीर्थ आदि की प्रामाणिकता स्वीकार नहीं करते हैं। इस पर रामदयाल चौबे स्वाभाविक रूप से कह बैठे—"ऐसा नही हो सकता। वे किसी को तो अवश्य मानते होंगे।" इस प्रसग से ग्रामीणजनों में प्रचलित भी महा-राज विषयक निश्छल धारणाओं तथा उनके भोलेपन का ही अनुमान होता है।

स्वामी दयानन्द मिथ्या आडम्बरों एव पाखण्डपूर्ण आचरणों के कट्टर विरोधी थे। जन्माष्टमी के अवसर पर वल्लभ सम्प्रदाय तथा वैष्णवों के सभी मन्दिरों में एक खीरा ककड़ी को देवकी का उदर कल्पित कर उसे चीरते हैं और उसमें पहले से रखे गये पत्थर (जिसे वे शालिग्राम की प्रतिमा तथा कृष्ण का रूप ठहराते हैं) को निकालकर कहते हैं कि भगवान् का जन्म हुआ है। वे माता के गर्भ से बाहर आये हैं। स्वामी जी इस प्रकार के सभी हास्यास्पद कृत्यों के कटु आलोचक थे। उनकी इसी शैली में की गई आलोचना को स्मरण करते हुए काय-मगज निवासी लाला गोविन्दलाल वैश्य ने प० लेखराम को बताया था "एक बार मेरे दादा जो बातचीत के समय कहने लगे कि एक 'गप्पा' यहा आया था। वह जन्माष्टमी के विषय में कहता था कि उस दिन खीरे से पत्थर निकालते है और खीरे को देवकी का उदर ठहराते हैं और फिर उसे खा भी लेते हैं। मानो ठाकुर की माता का उदर चीरकर खा जाते हैं। यह कैसे अन्धेर को बात है।"

यहा यह स्मर्तव्य है कि गगातटवर्ती प्रदेशों में भ्रमण करते समय स्वामी महाराज पुराण, मूर्तिपूजा, सम्प्रदायवाद, वाममार्ग, नशासेवन, परस्त्रीगमन, चोरी तथा अनृत भाषण को 'गप्प' कहते थे और लोगों से इन अष्टविध गप्पों को त्यागने की प्रेरणा करते थे। पुन:-पुन: 'गप्प' शब्द का प्रयोग करने के कारण जनसाधारण लोकस्वभाव के वशवर्ती होकर उन्हें 'गप्पा बाबा' तथा 'गप्पाष्टक' के नाम से पुकारने लगा था। वैश्य महोदय के दादा के कथन में स्वामी जो को 'गप्पा' नाम से सम्बोधित किया जाना इसी तथ्य का प्रतीक है। कथन की स्वाभा-विकता तो स्पष्ट हो है। एक अन्तिम उदाहरण—

विक्रम सवत १९२६ का माघ का महीना। समय 'भयकर शीत' 'गगा का किनारा' प्रयाग में वासुकीटेक स्थित गगाघाट की बुर्जी पर कौपीनमात्रधारी, दिगम्बर प्राय: एक परमहस निश्चिन्त भाव से फर्श पर ही लेटे हैं। द्वन्द्वातीत संन्यासी के शरीर को माघ मास का भयकर जाडा भी कष्ट देता प्रतीत नही होता। मिर्जापुर निवासी पं. मोतीराम गौड, जो काशी के प्रसिद्ध विद्वान् सन्यासी स्वामी विशुद्धानन्द के सह-ध्यायी रह चुके थे। महाराज के दर्शनार्थ बहुत सवेरे चार बजे ही एक व्यक्ति को साथ लेकर गंगा के इस घाट पर पहुंचे है। उन्होंने इससे पहले कभी स्वामी जी को देखा नही है। उनके साथ का व्यक्ति बुधराम नाम का एक विद्यार्थी है जो काशी शास्त्रार्थ के समय उपस्थित था तथा महाराज को पहचानता था। अब आगे की बात प० मोतीराम के मुख स सुनिये—"हम प्रात काल स्वामी जी के दर्शनार्थ वासुकीटेक पर गये। चार बजे का समय था। देखा कि वे गगा के तीर स्थित घाट की बुर्जी पर सो रहे हैं। केवल एक लगोट लगाये हुए और सब नग्न, चारो खाने चित्त, हाथ-पाव फैलाये सो रहे हैं। बहुत ठण्डी वायु चल रही थी। जब हम पहुंचे तो उनको ऊपर से देखकर बुधराम बोला कि 'जिस ने काशी मे शास्त्रार्थ किया था वह 'गप्पाष्टक' यही है।' इन उदा-हरणों से हमें पता लगता है कि प० लेखराम ने कैसे-कैसे लोगों से मिलकर स्वामी जी से सम्बन्धित, सरल एवं सहजभावों से भरे, धरती की सोंधी सुवास के तुल्य मनभावन सस्मरणों की माला गूथकर इस जीवनचरित का निर्माण किया था।

शोक समाचार

आर्यसमाज माकडोला के प्रधान एवं पूर्व सरपच महाशय [illegible] जी का ७० वर्ष की आयु में ४ दिसम्बर को स्वर्गवास होगया। [illegible] अपने सरपंचकाल मे शराबबन्दी का प्रस्ताव करवाकर सरकार को भिजवाया तथा प्रस्ताव को उपेक्षा होने पर शराब के ठेके पर धरना देकर शराब का ठेका उठवाया था। भगवान् आपकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु अपील

आशा है आपको दैनिक समाचार-पत्रों, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा ज्ञात होगया है कि गढवाल तथा उत्तरकाशी में आये भयंकर भूकम्प से लाखों नर-नारी बेघर होगये हैं। हजारों नर-नारी मौत के मुंह में चले गये हैं और अब सर्दी के दिनों में आकाश के नीचे अपना संकटपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अनेक प्रकार के रोग फैल रहे हैं। ऐसी भयंकर तथा दयनीय स्थिति में हम सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि अपने नगर तथा ग्राम से इन भूकम्प पीड़ित भाइयों के लिए धन तथा गर्म वस्त्र आदि संग्रह करके अपनी सुविधा के अनुसार सभा के मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक, उप-कार्यालय गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद या महर्षि दयानन्द वैदिकधाम पेहवा मार्ग कुरुक्षेत्र के पते पर भेजकर प्राप्ति की रसीद प्राप्त कर लेवें।

सभा की ओर से संग्रहीत धनराशि तथा वस्त्र आदि यथास्थान हरयाणा की जनता की ओर से सामूहिक रूप में भेजी जावेगी और दानदाताओं के नाम सभा के साप्ताहिक पत्र 'सर्वहितकारी' में प्रकाशित किये जावेंगे।

आशा है हरयाणा के आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षण संस्थाएं उदारतापूर्वक धन तथा वस्त्र आदि संग्रह करके यथाशीघ्र सभा को भेजकर संगठन का परिचय देवेंगे।

निवेदक :—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	सूबेसिंह	रामानन्द
परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

उप राष्ट्रपति की लोगों से नेत्रदान की अपील

रतलाम, ८ दिसम्बर (भाषा)। उप राष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा ने लोगों से अपील की है कि वे मरने से पहले नेत्रदान की घोषणा कर नेत्रहीन लोगों के बीच प्रकाश की किरणें फैलाने में अपना योगदान दें। वे यहां श्री चेतन कश्यप रोटरी नेत्र बैंक की नींव रख रहे थे। उन्होंने कहा कि श्रीलंका का हर नागरिक नेत्रदान करता है। हमें भी ऐसा करना चाहिए और अपने वारिसों को मृत्यु के छह घण्टे के भीतर ही अपने नेत्रों के प्रत्यारोपण का सुझाव देना चाहिए। डा० शर्मा ने कहा कि नेत्रदान से बडा कोई दान नहीं है। इसके प्रचार-प्रसार की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि देश में नेत्रदान और नेत्र बैंकों की स्थापना के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

साभार : दैनिक जनसत्ता

मातृत्व अवकाश छह माह तक

चण्डीगढ, १० दिसम्बर (वार्ता)। हरयाणा के वित्तमन्त्री मांगेराम गुप्ता ने राज्य में कार्यरत महिला कर्मचारियों के लिये कुछ रियायतों की घोषणा की है। श्री गुप्ता ने यहां एक वक्तव्य में कहा कि महिला कर्मचारियों को मौजूदा तीन माह के बजाए छह माह का मातृत्व अवकाश मिलेगा और यह सुविधा दो जीवित बच्चों तक के जन्म पर मिलेगी। तीसरे बच्चे के जन्म पर मौजूदा तीन माह के मातृत्व अवकाश की सुविधा जारी रहेगी। श्री गुप्ता ने बताया कि महिला कर्मचारियों को अब एक साल में बीस आकस्मिक अवकाश मिलेंगे। ये आदेश अगले वर्ष एक जनवरी से लागू होंगे।

साभार : जनसन्देश

अध्यापक से शादी लड़कियों को नापसन्द

जबलपुर (एजेंसी)। शिक्षक वह निरीह प्राणी है जिससे शादी-योग्य ९५ प्रतिशत लड़कियां शादी करने से मना कर देती हैं।

देश के ९१.१ प्रतिशत शिक्षक अपने शैक्षिक कार्य से सन्तुष्ट नहीं हैं। वे यह कार्य अपनी विपरीत आर्थिक परिस्थितियों के कारण कर रहे हैं।

शिक्षकों के राष्ट्रीय आयोग द्वारा किये गये नमूने सर्वेक्षण में ये तथ्य उजागर हुए हैं।

सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि ६५.१ प्रतिशत शिक्षक तथा ५६.५ प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षक नहीं बनाना चाहते।

आयोग माध्यमिक विद्यालय के ७०० शिक्षकों, ७०० छात्रों तथा ७०० अभिभावकों से इंटरव्यू के आधार पर इन निष्कर्षों पर पहुंचा।

साभार : दैनिक नवभारत

लोकसेवा परीक्षा में आयु सीमा बढ़ेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केन्द्र सरकार ने सिविल सेवा परीक्षा १९९२ के लिए अधिकतम आयु सीमा ३३ वर्ष तय करने का प्रस्ताव रखा है।

सरकार के इस प्रस्ताव की जानकारी आज कार्मिक राज्यमन्त्री मार्गरेट अल्वा ने लोकसभा में दी। इस परीक्षा में शामिल होने के अवसर चार से बढ़ाकर पांच करने का भी प्रस्ताव है।

श्रीमती अल्वा ने कहा कि यह सुविधा सिर्फ अगले साल की परीक्षा के लिए ही देने का प्रस्ताव है। वैसे सिविल सेवा परीक्षा के लिए अधिकतम आयु सीमा २८ वर्ष और इसमें शामिल होने के अवसरों की संख्या चार है।

उन्होंने इस आरोप को गलत बताया कि १९९० की सिविल सेवा परीक्षा के पर्चे लीक होगए थे। उनके मुताबिक पर्चे लीक होने की बात प्रमाणित नहीं हो पाई थी। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भी कहा है कि प्रथम दृष्टि में इस फैसले पर पहुंचना कठिन है कि प्रश्नपत्र लीक हुए थे।

साभार . दैनिक नवभारत

विवाह संस्कार पर सभा को दान

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता स्वर्गीय श्री धर्मपाल आर्य ग्राम जुआं, जिला सोनीपत की सुपुत्री स्नेहलता का शुभविवाह संस्कार श्री योगेन्द्रसिंह सुपुत्र म० चतुर्भुज पूर्व सरपंच ग्राम माकडोला, जिला गुडगांव के साथ ११ दिसम्बर को तथा श्री धर्मपाल आर्य के सुपुत्र श्री जितेन्द्र का शुभविवाह संस्कार आपडोवा, जिला रोहतक निवासी श्री करतारसिंह की सुपुत्री सुनीता के साथ १२ दिसम्बर, ९१ को वैदिकरीति के अनुसार सभा के उपदेशक पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री, श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी उपाचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ एवं पं० विष्णुदत्त शास्त्री ने सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर सभा को १०० रुपये वेदप्रचारार्थ दान दिया गया।

—केदारसिंह आर्य

शराब हटाओ, देश बचाओ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि नं० PRIK-४१

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १९ अंक ६ २८ दिसम्बर, १९९१ वार्षिक शुल्क ३० (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

सोम की उपासना करो ?

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम० ए०, गोरखपुर)

सोम राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे ।
आदित्यं विष्णु सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥

इस मन्त्र का सबसे प्रथम शब्द 'सोम' है। यह मन्त्र सामवेद का है। इसमें कहा गया है जीवन का समारभ 'सोम' के साथ करना चाहिए। सोम के बाद बताया गया है राजा, वरुण, अग्नि, आदित्य, सूर्य, विष्णु के अनुसार, ब्रह्मा तथा बृहस्पति के अनुसार जीवन बिताने को कहा गया है। वेदों में अग्नि और इन्द्र के बाद सोमदेव का वर्णन है। वैदिक संहिताओं के अध्ययन से पता चलता है कि उनके दशमांश मन्त्रों में सोम की स्तुति, प्रार्थना, प्रशंसा और उपासना की चर्चा की गई है। सोम के गुणबोधक विशेषण वेद में बहुत अधिक मिलते हैं। जब हम आकाश में उदय होते हुए या उदित चन्द्रमा को देखते हैं तो हमारा मन आनंद से उत्फुल्लसित हो जाता है। सोम को चन्द्रमा भी कहा जाता है। चन्द्रमा का आनन्द एवं सौन्दर्य काव्य का जनक है, इस चन्द्रमा के दर्शन से मन सरस होता है और रसात्मक वाक्य ही काव्य होता है।

सोम के अनुकरण के कारण 'सोम' औषधि भी जो हिमालय में मिलती है सोम कहलाती है। इस औषधि की विशेषता है कि सामवेद के २९ अध्याय के २१-२२ मन्त्रों के अनुसार "शुक्ल पक्ष में इस औषधि का एक-एक पत्ता चन्द्रमा की एक-एक कला के समान बढ़ता जाता है और कृष्ण पक्ष में क्रमशः एक-एक पत्ता गिरता जाता है और अमावस्या को सभी लुप्त हो जाते हैं।" इन गुणों की समानता के कारण उस औषधि को भी सोम=चन्द्रमा कहते हैं। सोम=चन्द्रमा को ओषधीश (वीरुधां पतिः) ऋग्वेद ९.११४-२ में कहा गया है। अथर्ववेद ५.२७ चन्द्र, ऋ० ९.८६.४१ में और ९.६६.२५ में इन्द्र, ऋग्वेद ९.५१ २, ९.९७- ३२ पीयूष=अमृत, ९.६६.२५ में पवमान आदि नामों से कहा गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों में सोम को ज्योतिः (शतपथ ५.१.५.२) श्री (शतपथ ४. १.३.९) ब्राह्मण ग्रन्थों आदि के अतिरिक्त भी वैदिक साहित्य में सोम की भक्ति के रूप में अनेक मन्त्र आए हैं। सुश्रुत आदि वैद्यक ग्रन्थों में भी सोम का वर्णन है। ऊपर के सामवेद के मन्त्र की व्याख्या में सोम का अर्थ समझने के लिए हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम एक यात्री हैं और हमारी यह यात्रा हमारे जन्म के प्रारम्भ से ही प्रारंभ हो जाती है। हम इस यात्रा मे अनेक क्षेत्रों से गुजरते हैं। कहीं बड़े-बड़े रेगिस्तान दिखाई देते हैं तो कही ऊंची-ऊंची गगनचुम्बी चोटियां नजर आती हैं, कही उत्ताल तरंगोंवाले समुद्र तो कही हरे-भरे मैदान दृष्टिगोचर होते हैं और इस यात्रा में कही आनन्द की सुमधुर रागनियां सुनाई देती हैं तो कहीं दुखियों के आर्तनाद दिशाओं को गुंजा रहे होते हैं, कही अपमान पर अपमान, पराजय पर पराजय, हार पर हार हो रही होती है तो कहीं विजय के गीत सुनाई देते हैं, कही जय-जयकार हो रही होती है। ऐसी अवस्था में हम आगे कैसे बढ़े ? वेद कहता है अरे मनुष्य तू सोम का मार्ग पकड़ और आगे-आगे बढ़ता जा। सोमसन्वारभामहे।

प्रश्न होता है यह सोम का मार्ग कौन-सा है। हवन के मन्त्रों से हम चार आज्याहुति देते हैं – अग्नये स्वाहा, सोमाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा। क्या आपने कभी इन आहुतियों को डालते हुए इन पर मनन किया है ? मनन कीजिए तो आपको पता लगेगा कि वैदिक संध्या और यज्ञ पद्धति की एक-एक ऋचा और एक-एक शब्द मननीय है। यहां पर जीवन के लिए 'अग्नये स्वाहा' द्वारा आगे बढ़ने के लिए जीवन को समर्पित करने की प्रेरणा दी गई और कहा गया—"चरैवेति चरैवेति" आगे बढ़ो, आगे बढ़ो। मैं जब हवन के मन्त्रों पर विचार करता हूं तो मुझे याद आता है—

लड़ते जाओ, बढ़ते जाओ,
रुकने का क्या यहां काम है ?
रुकना मृत्यु और बढ़ना ही,
जीवन का बस एक नाम है।
जो लड़ता है वही राम है,
उसको ही मिलती है सीता।
यही युद्ध की शिक्षा देती,
कृष्ण कन्हैया की है गीता।
वहीं सत्य सुन्दर शिव बसते,
बसती जहां शक्ति कल्याणी।
युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है,
युद्धों की ही एक कहानी।

परन्तु आगे बढ़ते-बढ़ते, लड़ते-लड़ते अभिमान न आजाए, घमण्ड न मनमें जगह बनाले। वेद या हवन का मन्त्र कहता है 'सोमाय स्वाहा' आगे बढ़ना तो ठीक है, पर सोम का होना भी आवश्यक है। सोम क्या है ? सोम को संस्कृत में कहते है 'सौम्यता' (सोम का भाव)। सोम का भाव है नम्रता, शालीनता, शीलता, मधुरता, मीठा बोलना, पवित्र व्यवहार, मीठा स्वभाव, भगवान् के मधुर रूप के प्रति अपनी भक्ति अर्थात् प्रेमभक्ति। इनसे प्राप्त होने वाला आनन्द सोमरस है।

शिवाजी जैसे अद्भुत पुरुष विश्व में कम मिलेंगे। एक दिन वे सेना के सामने खड़े थे। सेना के सैनिकों और प्रजाजनों को देखकर उनके मनमें अभिमान उत्पन्न होगया और वे सोचने लगे अरे ! मैं कितना शक्तिशाली, पराक्रमी, उन्नत और अग्रणी हूं कि इतने सैनिकों और प्रजाजनों को भोजन दे रहा हू। उनकी बातों और हावभाव से सन्त रामदास को उनके इस घमण्ड और अभिमान की झलक का पता लगा। सन्त रामदास एक सच्चे गुरु थे। विश्व में सद्गुरु का बहुत महत्त्व है। वह बिना तलवार के, बिना धन के विश्व को बदलने का सामर्थ्य रखता है।

(क्रमशः)

आंखों की रक्षा के लिए क्या करें?

हम संध्या के मन्त्रों में प्रतिदिन बोलते हैं—ओं चक्षुः चक्षुः, ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः, ओं पश्येम शरदः शतं अर्थात् प्यारे प्रभु से प्रार्थना करते हैं—हे प्रभु ! हमारी आंखें निरोग, पवित्र हों और इनसे कम से कम सौ वर्ष तक देखते रहें। परन्तु केवल मन्त्र बोलते रहने से कुछ नहीं होगा। मन्त्र तो एक विचार है कि आंखों की रक्षा करो। अब प्रश्न है कैसे करें ? यजुर्वेद के एक मन्त्र में बताया है "चक्षुर्यज्ञेन कल्पताम्" अर्थात् यज्ञ के द्वारा आखों की रक्षा करो। ऐसे काम करो जिनसे नेत्रों की ज्योति बनी रहे और ऐसे काम मत करो जिनसे आंखों को हानि पहुंचे। ऐसे कार्यों का वर्णन निम्नलिखित है—

१. प्रातः उठते ही सबसे पहले ताजा पानी से कुल्ले करके आंखों को छींटे मार-मारकर अच्छी तरह धोना चाहिये। बच्चों की आंख भी धोनी चाहिये। जो ऐसा नहीं करते उनकी आंखें प्रायः बीमार रहती हैं।

२. प्रतिदिन भ्रमण करने के लिए जाओ और उगते हुए सूर्य को एक-दो मिनट तक देखते रहो।

३ यदि नजला जुकाम नहीं है तो हरी घास पर नंगे पांव चलो।

४ शीर्षासन करो, परन्तु एक-दो मिनट से अधिक नहीं।

५. प्रतिदिन दातों को साफ करना आवश्यक है, क्योंकि दांतों की गन्दगी का प्रभाव आंखों पर पड़ता है। दांतों के साथ-साथ गले को भी साफ करो।

६. पाव के तलवों और नाखूनों को स्वच्छ रखो। इनमें कभी-कभी तेल का मालिश करते रहो।

७. शराब, धूम्रपान आदि सभी प्रकार की नशीली वस्तुएं नेत्र ज्योति को जबरदस्त नुकसान पहुंचाती हैं। इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

८ मास खानेवालों के तो बच्चे भी आंखों के रोग लेकर पैदा होते हैं। मास खाने से आंखों में चर्बी बढ जाती है और शीघ्र अन्धापन आने लगता है।

९. लाल मिर्च के स्थान पर काली मिर्च का सेवन कर।

१०. अनुभव बताता है कि वनस्पति घी तेल का लगातार सेवन करने से आंखों की रोशनी को कम करता है। इसलिए गाय का देसी घी प्रयोग कर। यदि देसी उपलब्ध नहीं है तो वनस्पति घी के पकवान की मिठाइयों का अधिक सेवन न कर। जैसे प्रतिदिन पूरी पराठें खाते रहना।

११. पेट को साफ रख, कब्ज न होने दे, सुपाच्य भोजन ही ग्रहण करें और नित्यप्रति थोड़ा दूध अवश्य लेते रहें। चाय का अधिक सेवन न करें।

१२ फलों में सन्तरा, अनार, गाजर के रस का सेवन करना लाभदायक है, क्योंकि इनमें विटामिन 'ए' की मात्रा अधिक है जो नेत्रों के लिए उपयोगी है।

१३. आखों में खारिश खुजली होती है या लाली-सी रहती है तो त्रिफला या भुनी हुई शुद्ध फटकरी के लोशन से धोना चाहिए।

१४. अति मैथुन से आंखें अन्दर को धस जाती हैं और दृष्टिहीन होने लगती हैं।

१५. निरन्तर रात्रि जागरण से भी आंख खराब होने लगती हैं।

१६ कभी लेटकर मत पढो।

१७ चलती बस गाडी में नहीं पढना चाहिए।

१८ बहुत कम या अधिक तेज रोशनी में नहीं पढ़ना चाहिए।

१९ धूल, धूआं और तेज धूप से आंखों को बचाकर रखो। धूल उड रही हो और तेज धूप मे जाना हो पड़े तो चश्मा लगाकर, सिर पर कपडा डालकर जाओ।

२०. आखों मे कभी गन्दे हाथ उंगली मत लगाओ।

२१ अधिक शोक चिन्ता करने से भी आंखों पर कुप्रभाव पडता है। इसका शीघ्र निवारण करो।

२२. पूर्वजों के उस फार्मूले को भी अमल में लाओ, जिसे इस प्रकार बोलते हैं—

आंखों में अंजन, दांतों में मंजन, नित कर नित कर।
नाक में उंगली, कान में तिनका मत कर मत कर।

देवराज आर्य मित्र
वैद्य विशारद आर्यसमाज, बल्लभगढ़

सेहत सम्बन्धी अनमोल बोल

हीनयोग, अतियोग व मिथ्यायोग रोग के प्रधान कारण हैं। चिकित्सा उपकरण व चिकित्सक बढ़ रहे हैं। पहले विशेषज्ञ इक्का-दुक्का थे, अब गली-गली में हर रोग के विशेषज्ञ दिख जायेंगे। वास्तव में खान-पान की गलत आदतें हमें रोगी बनाती हैं। कुछ प्राचीन नुस्खों पर अमल कर लिया जाये तो बहुत-सी बीमारियों से बचा जा सकता है।

महाकवि घाघ ने कहा है—

प्रात: उठिके खटिया ते, तरते पीवै पानी।
कबहुं बैद घर आये नहीं, यह बात घाघ ने जानी ॥

वह आगे कहते हैं—

जाको मारा चाहिए, बिन मारे बिन घाव।
वाको यही बताइये, घुइयां पूरी खाव ॥

अर्थात् अरबी और पूरी लगातार खिलाकर किसी को शनैः-शनैः मृत्यु-मुख में धकेलने पर भारतीय दण्ड विधान की धारा ३०२, ३०१ या ३०७ नहीं लगती।

भूख अच्छी लगे, खाना ठीक पचे तो न दुर्बलता सतायेगी, न अन्य रोग होंगे। निम्नलिखित गोलियां टानिक जैसा काम करेंगी, पर मूल्य बहुत कम होगा—

त्रिफला, काला नोन और पानी लेय सनाय।
सबहिं बराबर कूटकर नीबू रस मिलवाय ॥
झरबेरी-सी गोलियां घोट पीस बनवाय।
दो गोली सेवन करें भूख बहुत बढ़ जाय ॥

कहा जाता है कि आंख गई जहान गया, दांत गये स्वाद गया। अतः थोड़ा परिश्रम करके घर पर ही दन्तमंजन बनालें, मंजन खूब बारीक कर कपड़छान जरूर करलें। खुरदरे मंजन दांत का ऐनामैल खराब करते हैं—

हर्रं बहेड़ा आंवला, पाचों नमक पतंग।
दांत वज्र कर देते हैं, माजू फल के संग ॥

पतंग एक प्रकार की लकड़ी होती है।

—विजय नारायण भारद्वाज
(साभार : दैनिक ट्रिब्यून)

आर्थिक असन्तुलन पर एक चर्चा

देश को महंगाई मार गई !

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

प्राचीन भारत को जब समृद्धि और वैभव पर दृष्टि डाली जाती है तो इस बात का पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है कि भारत कभी धन-धान्य से परिपूर्ण था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास को आरम्भ करते हुए भारत की धनसम्पत्ति की चर्चा करते हुए लिखते हैं—

"जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है जिसको लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

आगे कुछ तथ्यपूर्ण आंकड़े देकर सुखी और धन वैभव संपन भारत के वे स्वर्णिम दिन याद दिलाना चाहता हूं जब यहां सोने के घड़ों में गंगाजल रखे जाते थे और अतिथियों को सोने चांदी की थालियों में भोजन परोसे जाते थे। बालक के पैदा होते ही सोने की सलाकाओं से शहद लगाकर बालक की जीभ पर 'ओ३म्' लिखा जाता था। कर्णवेध संस्कार में कानों में सोने की बालियां पहनाई जाती थीं। विवाह संस्कार में कन्या को सोने के आभूषणों से सजाया जाता था। सभी वर्गों के लोग हाथों में सोने की अंगूठी पहना करते थे। स्वास्थ्य को उत्तम रखने के लिए सुवर्ण भस्म का सेवन करते थे। मन्दिरों में पत्थर की मूर्तियों को भी सोने के हार पहनाया करते थे। मन्दिर की गुम्बद का सर्वोच्च कलश भी सोना का होता था। स्वर्ण मन्दिर बनाये जाते रहे हैं। मिठाइयों पर भी चांदी सोने के वर्क लगाकर धनी निर्धन सभी खाते रहे हैं। यहां तक कि कब्रों में भी मुर्दे के सिरहाने एक रुपया चांदी का धरते थे।

मन्दिरों में सोने चांदी के चढ़ावे के रूप में अथाह सोने चांदी के भण्डार जमा होगए। यहां सब कुछ था, सब सस्ता था। महंगाई का तो लोग नाम भी न जानते थे।

सन् ७१२ ई० में मुस्लिम हमलावरों ने आकर मन्दिरों में लूटपाट की। अरबों रुपयों का सोना चांदी लूटकर अपने देश लेगए। अकेले सोमनाथ मन्दिर का हिसाब लगाया जाये तो २० अरब रुपये का सोना चांदी लूटकर मुहम्मद गजनवी लेगया। सारे मन्दिरों की लूट का तो हिसाब लगाया ही नहीं जा सकता। मुस्लिमकाल से ही देश निर्धनता की ओर बढ़ा। किन्तु महंगाई तब भी इतनी नहीं बढ़ी थी।

बहुत पुराने जमाने के तो भावों का ठीक-ठीक कुछ पता नहीं। किन्तु ढाई हजार वर्ष पूर्व महामति कौटिल्य (चाणक्य) के समय के भाव-तावों का तो कुछ पता लगता है। मुगलकालीन भावों का भी और उसके बाद अंग्रेजकालीन भावों का भी पता मिलता है। ढाई हजार वर्ष पूर्व कौटिल्य के समय वर्तमान मुद्रा में परिवर्तित भाव ये थे—

चावल—१ आना मन
तेल—८ आना मन
घी—१२ आना मन
दाल—१ आना मन
नमक—१ आना मन
मीठा—१० आना मन

धोटी धोती २ रुपये जोड़ा। मामूली कपड़ा एक आने के पांच टुकड़े। कौटिल्य के समय साधारण मजदूर की मासिक आय थी ६ आना। कारीगर को १२ आना और मुनीम गुमास्ते इसे १२ रुपये तक प्रतिमास पाते थे। महंगाई की कोई समस्या चन्द्रगुप्त के राज्य में न थी, सब सुखी थे। अकबर के जमाने में—आइने अकबरी में ईस्वी सन् १६०० के समीप के बाजार भाव वर्तमान सिक्के में परिवर्तन करने पर इस प्रकार दिए गए हैं—

गेहूं—५ आना मन
जौ—३ आना मन
चावल—ढाई रुपये मन
तेल—२ रुपये मन
मीठा—६ आना मन
नमक—६ आना मन
दूध—१० आना मन
किशमिश—साढे तीन आना सेर
गुड—२ पैसे सेर
ईंट—१२ आना हजार

अंग्रेजी राज्य में भी लगभग यही भाव थे। लेकिन देश को लूटने में अंग्रेजों ने भी कसर न छोड़ी। देश को जहां मुसलमानों से धार्मिक हानि हुई वहां अंग्रेजों से राजनीतिक हानि हुई। देश विभाजित हुआ।

किसी राष्ट्र की उन्नति कृषि पर भी निर्भर करती है। भारत में तो ८५ प्रतिशत किसान हैं। अतः यह देश कृषि-प्रधान देश कहलाता है। अब हम १९६७ वर्ष को आधार मानकर कृषियन्त्रों तथा अन्य कृषि सम्बन्धी साधनों की महगाई की चर्चा करगे। तो सुनिये—

आधार वर्ष १९६७

१९६७ से————आज १९९१ में

१. ट्रैक्टर मैसी २१६१० रुपये—१६०००० मूल्यवृद्धि अनुमानतः ८ गुणा
२. ट्रैक्टर जीटर १३७०० रुपये—१२०००० ,, ,, ८ ,,
३. डीजल १ लीटर ८५ पैसे—५ रु० २५ पैसे ,, ,, ६ ,,
४. मो आयल २ रु० ६० पैसे लीटर—२९ रु० लीटर ४ गुणा बढ़ोतरी
५. बिजली ८ रुपये २० एच०पी०—३० रु० एच०पी० ४ ,, ,,
६. यूरिया खाद ४२ रु० बोरा—१६२ रु० ४ ,, ,,
७. ईंट भट्टे से ३२ रु० हजार—७०० रु० हजार २२ ,, ,,
८. सीमेंट ७ रु० ६४ पैसे बोरा—११५ रु० बोरा १६ ,, ,,
९. डी०ए.पी. खाद ५४ रु० ७५ पैसे बोरा—२५० रु ५ ,, ,,
१०. गेहूं के भाव ७६ रु० क्विटल—२२५ रु० क्विटल ३ ,, से कम
११. कपडा ४ रु० मीटर—२० रु० मीटर ५ ,, बढ़ोतरी
१२. लोहा ६५ रु० क्विटल—१९४० रु० क्विटल १६ ,, ,,
१३. कोयला २० रु. प्रति क्विटल—२४० रु० क्विटल १२ ,, ,,

इस प्रकार उपरोक्त आंकड़ों से पता लगता है कि १९६७ से आज १९९१ में कृषि साधन-यन्त्रों में कितनी मूल्यवृद्धि होगई है।

अब थोड़ा-सा अन्न पैदा करने में किसान का कितना खर्चा आता है वह भी गेहूं का प्रति एकड़ का खर्च का विवरण सुन लीजिए—

१.	जुताई (बहाई) जमीन आठ बार ७५ रु० प्रति एकड़ के हिसाब से	६०० रु०
२.	बुवाई गेहूं व खाद — — — — हिसाब से	१५० रु०
३.	सुहागा (मेज) फिराई ४ बार २५ रु० के हिसाब से	१०० रु०
४.	बीज ६० किलो ६ रु० २५ पैसे किलो के सरकारी रेट से	३७५ रु०
५.	खाद डी.ए.पी एक बोरा १० किलो बीघा	२५० रु०
६.	खाद यूरिया २ बोरे १५० रु० प्रति बोरे से २० कि० बीघा	३०० रु०
७.	जिंक सल्फेट ३५ रु. की तथा कीटाणुनाशक १० कि. दवाई	२४५ रु०
८.	नलाई दो बार दो दिन मजदूर १०, मजदूरी ४० रु. के हिसाब से	४०० रु०
९.	रखवाली ६ माह, ६० माहवार के हिसाब से	३६० रु०
१०.	समय-समय पर दी गई मजदूरी जैसे पानी चलाना, डोल देना	२०० रु०
११.	पानी सात बार १२ रु० घण्टा, १० घण्टे में एक एकड़ की भराई	८४० रु०
१२.	फसल कटाई ४ मन गेहूं, भूस दो क्विटल, ३५ रु० क्विटल से भूस	५५० रु०

(शेष पृष्ठ ५ पर)

पश्चिम बंगाल के लिए गोवंश का लदान बन्द

नई दिल्ली, १७ दिसम्बर। बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बटकृष्ण बर्मन तथा आर्यसमाज बड़ा बाजार, कलकत्ता के प्रधान श्री चांदरत्न दम्मानी जी ने सार्वदेशिक सभा कार्यालय में टेलीफोन द्वारा सूचना दी है कि गत ८ दिसम्बर को जालन्धर से ६३ बोगियों में गउओं और बैलों का लदान करके कलकत्ता के लिए रवाना किया गया है। श्री दम्मानी जी द्वारा इस लदान की बिल्टियों के नम्बर भी बताये गये थे।

इस सूचना पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट केन्द्रीय कृषिमन्त्री श्री बलराम जाखड़ से मिले और उन्हें सम्पूर्ण स्थिति की गम्भीरता से अवगत कराया। इन पर श्री बलराम जाखड़ जी ने तुरन्त मुगलसराय रेलवे स्टेशन के अधिकारियों को यह आदेश जारी कर दिया कि यदि यह बोगिया मुगलसराय रेलवे स्टेशन से आगे न निकली हों तो उन्हें रोककर तुरन्त जालन्धर वापिस भेज दिया जाये। कृषिमन्त्री ने इसके साथ ही हरयाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की सरकारों को भी यह आदेश दिये हैं कि गोवंश का लदान कलकत्ता के लिए भविष्य में न किया जाये।

इस घटना पर दुःख व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने उत्तर भारत की समस्त गोभक्त जनता से अपील करते हुए कहा है कि गोवंश की रक्षा के लिए आर्यसमाज का साथ दें और बंगाल के लिए गउओं का लदान होने पर विरोधात्मक कार्यवाही करें।

स्वामी जी ने कहा है कि गोवंश की रक्षा के लिए वे कृषि मन्त्रालय की गोसंवर्द्धन सलाहकार समिति की बैठक में भी सरकार से इन घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने हेतु कड़े कदम उठाने के लिए कहेंगे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

सम्पादक के नाम पत्र

मान्यवर सम्पादक महोदय 'सर्वहितकारी' साप्ताहिक। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस विशेषांक को पढ़कर हृदय गद्‌गद् हो उठा। प्रेरणाप्रद काव्य संग्रह एवं विद्वानों द्वारा लिखी गई ऋषि महात्माओं की जीवन-गाथा को इस अंक में प्रकाशित करके आपने सोये हुए भावों को झंकृत कर एक नव-चेतना प्रदान की है।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द इस युग का सर्वश्रेष्ठ महान् क्रांतिकारी नेता था जिसने हर क्षेत्र में त्याग का परिचय देकर सबको चकित कर दिया था। वह वास्तव में दिव्यात्मा थी। आशा है आगे भी आप इसी प्रकार के विशेषांकों का प्रकाशन कर आर्यसमाज का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। धन्यवाद।

—आचार्य राजेन्द्रकुमार शास्त्री
महासचिव अखिल भारतवर्षीय अध्यापक संघ
८६/२१ ऋषिनगर, रोहतक

आवश्यक सूचना

संन्यासियों तथा वानप्रस्थियों से प्रार्थना है कि भूचाल के इलाके में सेवा करनेवालों की बहुत आवश्यकता है। सार्वदेशिक सभा ने भूचालग्रस्त इलाके के लिए बहुत-सा सामान वहां पहुँचाया है और दूसरे कई स्थानों में भी काफी सामग्री एकत्रित है। उचित लोगों तक जिन्हें जिस-जिस वस्तु की आवश्यकता है उन्हें पहुंचाने के लिए संन्यासी वानप्रस्थियों को वहां पहुंचकर यह सेवा-कार्य अवश्य करना चाहिए। वहां सामग्री पर्याप्त पहुंची हुई है किन्तु उसे बांटने की आवश्यकता है।

—स्वामी सर्वानन्द
दयानन्दमठ दीनानगर, पंजाब

हिन्दी में बोलो तो जुर्माना

जयपुर, १४ दिसम्बर (वार्ता)। केरल जैसे अहिन्दी भाषी राज्य में भी चालीस साल पहले स्कूलों में हिन्दी न बोलने पर लोग जुर्माना भरते थे। भारतीय बैंक संघ के अध्यक्ष पी०एस० गोपालकृष्णन ने आज यहां तीसरे अखिल भारतीय बैंक राजभाषा का उद्घाटन करते हुए कहा कि चालीस साल पहले जब वे केरल में पढ़ते थे तो स्कूलों में हिंदी सिखाने-पढ़ाने का सिलसिला शुरु हुआ ही था।

धारा-प्रवाह हिन्दी में बोलते हुए उन्होंने बताया कि तब स्कूलों में छोटी-छोटी टोलियां बनती थी और यह तय किया जाता था कि उनका कोई भी सदस्य यदि हिन्दी से हटकर मलयालम में बात करेगा तो उसे दो आने जुर्माना भरना पड़ेगा।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

'राजीव हत्या' विश्व की दस प्रमुख घटनाओं में

पेइचिंग (एजेंसी)। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी 'सिंहुआ' ने भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की हत्या को वर्ष १९९१ की दस सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटनाओं में शामिल किया है।

इस सूची में पहले नम्बर पर खाड़ी युद्ध और कुवैत की मुक्ति को रखा गया। इसके फौरन बाद राजीव गांधी की हत्या को रखा गया है। यानी राजीव हत्याकांड को वारसा सन्धि के अन्त, १९ अगस्त की सोवियत बगावत और यूगोस्लाविया के गृहयुद्ध के मुकाबले ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना गया है।

(नवभारत टाइम्स १९-१२-९१)

रिवाड़ी वेदप्रचार मण्डल में वेदप्रचार

आर्यसमाज रिवाड़ी के उत्साही मन्त्री श्री रामकुमार जी तथा प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री मनफूलसिंह वानप्रस्थी के सहयोग से रिवाड़ी मण्डल के ग्राम सुठाना में पं० जयपाल आर्य की भजनमण्डली ने १७ व १८ दिसम्बर को भजनों द्वारा वेदप्रचार किया तथा शराब, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा की। प्रचार के फलस्वरूप ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना होगई। चुनाव में श्री करतारसिंह प्रधान, श्री प्रेमचन्द मन्त्री तथा श्री दयानन्द कोषाध्यक्ष चुने गये। सभा को १०० रु० वेदप्रचारादि के लिए दिये गये।

इसके पश्चात् १९ दिसम्बर को ग्राम बिलला में प्रचार करने का कार्यक्रम बनाया गया, परन्तु एक नवयुवक द्वारा नशीली दवा खा जाने पर मृत्यु होगई। इस कारण प्रचार स्थगित करना पड़ा।

२० दिसम्बर को आर्यसमाज मन्दिर रिवाड़ी में सत्संग में प्रचार किया तथा आर्यसमाज की ओर से भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु १५०१ रु० तथा वेदप्रचारादि के लिए ५३१ रु० सभा को दान दिया। इस प्रकार सभा को २०३६ रु० दान प्राप्त हुआ।

—केदारसिंह आर्य

अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक २९-१२-९१ रविवार को दोपहर १२ बजे आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी, जिला भिवानी में होगी।

—सभामन्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज नीलोठी, जिला सोनीपत के पूर्व प्रधान वैद्य इन्द्रसिंह आर्य का १३ दिसम्बर, ९१ को ९५ वर्ष की आयु में निधन होगया। आप आर्यसमाज के प्रत्येक आंदोलनों में सम्मिलित होते थे और अपने ग्राम में आर्यसमाज का प्रचार करवाते थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति तथा उनके परिवार को इनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

१३.	खेत से थ्रेशर तक ढुलाई ७० रु प्रति ट्राली के हिसाब से	१४० रु०
१४.	थ्रेशर पर गेहूं कढ़ाई १२ रु० प्रति मन यानि ३० रु० क्विंटल, १४ क्विंटल का	४२० रु०
१५	मण्डी तक किराया ३५ मन गेहूं का	१४० रु०
१६.	ट्राली भराई, उतराई थ्रेशर पर मजदूरी	१५० रु०
१७.	मण्डी में भराई, उतराई, तुलाई, उघाई	६३० रु०
१८.	खेती पर लो गई पूंजी ४०० रु० बीघा से एकड़ के २००० का ब्याज ३६०	२३६० रु०
	कुल लागत खर्चा	७६४३ रु०

१. एक एकड़ को अनुमानित उपज—१४ क्विंटल
२. एक क्विंटल का लागत मूल्य—५४५ रु. १३ पैसे
३. ५४५ रु. लाभकारी शुद्ध मूल्य ८७ रु. २० पैसे
४. एक क्विंटल गेहूं की कीमत—६३२ रु. ३३ पैसे

इस प्रकार आपने देखा कि किसानों के अन्न के भाव कम बढ़े तथा दूसरे कारखानों की बनी वस्तुओं के मूल्य अधिक बढ़े। जिससे भारतीय किसान अरबों रुपये के कर्जे के नीचे दब गया। इसलिए किसानों को भाव लागत आधार पर मिलना चाहिए, जिससे देश का किसान उन्नत हो, देश में गरीबी मिटे। समय पर बिजली, पानी मिलना चाहिए। किसानों ने ही देश को पैदावार बढ़ाकर आत्मनिर्भर किया है। इसलिए किसानों को अन्न की पैदावार बढ़ाने के लिए सम्मानित व प्रोत्साहित करना चाहिए। किन्तु प्राईस इन्डेक्स के मुताबिक भाव किसानों को नहीं मिला है। इससे भारतीय किसान कृषि-सम्बन्धी खाद, बीज दवाइयों को महंगी खरीदकर अपने अन्न के भाव इस महंगी खरीद के कारण न मिलने से दुःखी व कर्जदार होगया है। जब कपड़ा, दवाई तथा अन्य खाने-पोने की चीजे बाजार में महगी मिलती हैं तो किसानों को अपने अत्यन्त परिश्रम का मूल्य क्यों न मिले ? इसलिए खाद, बीज, कीटाणुनाशक दवाई, बिजली, पानी, कपड़ा, दवाई एव कृषि सम्बन्धी सब यन्त्र आदि के भाव सस्ते रहने चाहिय, जिससे अन्न भी सस्ता हो, जिसे सब खाते हैं। सरकार को इस ओर पूरा ध्यान देकर नियन्त्रण में रखना चाहिए। केवलमात्र चुनावी वायदों से कि सौ दिन में महंगाई समाप्त कर देंगे केवल राजनीतिक झूठ है।

यही हाल गन्ने के भाव का भी है। १९५६ में जब रफी अहमद किदवई कृषिमन्त्री भारत सरकार में थे, तब भारत सरकार के आंकड़ों के अनुसार जितने रुपये क्विंटल चीनी, उतने ही आने का एक क्विंटल गन्ना। अब चीनी ९५० रु० प्रति क्विंटल है तो एक क्विंटल गन्ने के दाम ५९ रुपये ३७ पैसे बनते हैं। तो अब ५९ रु० ३७ पैसे की सरकार को घोषणा करनी चाहिए।

आवश्यक बैठक

वेदप्रचार मण्डल जिला जींद की आवश्यक बैठक दिनांक ५-१-९२ रविवार को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर, नरवाना में होगी।

—प्रो० ओमकुमार आर्य सह-संयोजक

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दान-दाताओं की सूची

रुपये

गतांक से आगे—

१.	गुप्त दान द्वारा प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार चाणक्यपुरी रोहतक	५००
२.	श्री प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार चाणक्यपुरी, रोहतक	५१
३.	,, म० भरतसिंह वानप्रस्थी दयानन्दमठ, रोहतक	५१
४.	,, मन्त्री आर्यसमाज नांगल, डा. बहल, जिला भिवानी	१००
५.	,, आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत	५००
६.	,, वेदप्रकाश आर्य ड्राईवर सु. चौ. पर्वतसिंह आर्य सैनिक हाई स्कूल, रोहतक	१०१
७.	,, आर्यसमाज, रेवाड़ी	१५०५
८.	,, ब्र. दीपकुमार आर्य को. ओ. बैंक, हिसार	१००
९.	,, विजेन्द्रसिंह आर्य म.नं. ६५८ अर्बन एस्टेट, हिसार	१००

श्री पं० हरिराम आर्य कारोली, जि० रेवाड़ी द्वारा संग्रहीत

१०.	श्री लाला छैलूराम हजारीलाल टिम्बर मर्चेण्ट रेलवे स्टेशन कोसली, जिला रेवाड़ी	२५१
११.	,, पं. हरिराम आर्य प्रधान आर्यसमाज कारोली जिला रेवाड़ी (पहले भी सौ रुपये दे चुके)	२०१
१२.	,, आर्यसमाज कारोली, जिला रेवाड़ी	१५०
१३.	,, ला. चेतनदास पेड़ामल वस्त्र भण्डार रेलवे स्टेशन कोसली, जिला रेवाड़ी	१०१
१४.	,, रामकुमार लोहिया कृष्ण उद्योग रेलवे स्टेशन कोसली जिला रेवाड़ी	१०१
१५.	,, रामनिवास एण्ड सन्ज लोहिया ,, ,, ,, जिला रेवाड़ी	५१
१६.	,, डा. गुप्ता, गुप्ता मेडिकल स्टोर ,, ,, ,, जिला रेवाड़ी	५१
१७.	,, छाजूराम हरिप्रकाश ,, ,, ,, जिला रेवाड़ी	५१
१८.	,, सुरेशकुमार ,, ,, ,, जिला रेवाड़ी	२१
१९.	,, पं. केशवराम, तुम्बाहेड़ी ,, ,, ,, जिला रेवाड़ी	१५
२०.	,, पं. सत्यनारायण मुनीम ,, ,, ,, जिला रेवाड़ी	७
२१.	,, डा राजकुमार आचार्य म.न. ८८/२१ ऋषिनगर लाढौत रोड, रोहतक	२५
२२.	,, आर्यसमाज गोहाना मण्डी, सोनीपत	२५१

(क्रमशः)

—सभामन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं श्रद्धांजलि समारोह

गुड़गावां : २१-१२-९१ शनिवार को आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गावां द्वारा आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में एक विशाल शोभा-यात्रा आर्यसमाज रामनगर से दोपहर एक बजे आरम्भ की गई। जिसमें गुड़गावां नगर की समस्त आर्यसमाजों, मेवात क्षेत्र के आर्यबन्धु, प्रा. सा. सोहना, मेहरोली, गुरुकुल जसात, लोआकलां की ब्रह्मचारिणियां, गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी तथा स्थानीय आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र/छात्रायें सम्मिलित हुए। इस अवसर पर खेल, व्यायाम, आसन, तलवार, भाला, स्तूप आदि का प्रदर्शन किया गया। आर्य वीरदल रोहतक की भजनमण्डली ने अपनी मस्तीभरे गीतों से लोगों को दीवाना बना दिया।

रामलीला मैदान गुड़गावां छावनी में सायं ३ से ५ बजे तक के समारोह में श्री मुख्तारसिंह राघव संगीतकार ने मधुर गीतों से एवं श्री महेश जी विद्यालंकार ने स्वामी श्रद्धानन्द की राष्ट्रीय संस्था गुरुकुल कांगड़ी, राष्ट्रप्रेम की घटनाओं द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रो० बलराज जी मधोक ने जाति-पाति और भावी खतरे इस्लाम की कट्टरवादिता को एक भयंकर विश्व की समस्या बताया। समारोह के अध्यक्ष डा. विद्याभूषण जी तनेजा तथा मुख्य अतिथि श्री सतीशकुमार जी जैन ने अपने सन्देश द्वारा जनता को सात्विक जीवन की प्रेरणा दी।

—ओमप्रकाश आर्य
महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गावां

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कालका, जिला अम्बाला का वार्षिक उत्सव दिनांक २१-१२-९१ से २३-१२-९१ तक मनाया गया। इस उत्सव में सभा की तरफ से पं. ईश्वरसिंह तूफान की भजनमण्डली द्वारा शराब, दहेज एवं सामाजिक कुरीतियों का खण्डन किया तथा उनके मनोहर भजन हुए। सभा को ११०० रु. वेदप्रचार के लिये दान दिया गया।

—खेमसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज कालका, जिला अम्बाला

बलिदान दिवस कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक १९-१२-९१ को आर्यसमाज नलवा (हिसार) की ओर से पं. रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस मनाया गया। प्रातःकाल आर्यसमाज मन्दिर में सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी द्वारा हवन किया गया। क्रांतिकारी जी ने पंडित जी के जीवन एवं राष्ट्रहित के कार्यों पर प्रकाश डाला तथा लोगों से शराब एवं धूम्रपान जैसी भयंकर बुराइयों से दूर रहने का आग्रह किया।

—भलेराम आर्य, नलवा

पं० सुदर्शनदेव आचार्य को भ्रातृ-शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचाराधिष्ठाता पं. सुदर्शन-देव आचार्य के बड़े भ्राता श्री बलवीरसिंह आर्य ग्राम बालन्द का दिनांक ८-१२-९१ को स्वर्गवास होगया। वे ६६ वर्ष के थे। दिनांक १३-१२-९१ को वैदिकरीति से बृहत् शांति-यज्ञ तथा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—मुन्शीराम आर्य
प्रधान आर्यसमाज, बालन्द

ग्रामोत्थान—मंगलविजय

फिर अपने गांवों को हम स्वर्ग बनायेंगे।
अपने अन्दर सोया देवत्व जगायेंगे॥
गांव की गलियां क्यों गन्दी रहने देंगे।
गन्दगी नरक जैसी अब क्यों सहने देंगे॥
सहयोग और श्रम से यह नरक हटायेंगे।
फिर अपने गांवों को हम स्वर्ग बनायेंगे॥

रहने देंगे बाकी अब मनका मैल नहीं।
अब भेदभाव का हम खेलेंगे खेल नहीं॥
सब भाई-भाई हैं, सब मिलकर गायेंगे।
अपने अन्दर सोया देवत्व जगायेंगे॥

देवों जैसा होगा चिन्तन, व्यवहार चलन।
सद्भाव भरे होंगे सबके ही निर्मल मन॥
फिर तो सबके सुख-दुःख सब में बंट जायेंगे।
फिर अपने गांवों को हम स्वर्ग बनायेंगे॥

शोषण उत्पीडन का फिर नाम नहीं होगा।
फिर पीड़ा और पतन का काम नहीं होगा॥
सोने की चिड़िया हम फिर से कहलायेंगे।
फिर अपने गांवों को हम स्वर्ग बनायेंगे॥

धर्म क्या है ?

—स्व० स्वामी समर्पणानन्द जी

सूर्य उदय हुआ है या नहीं, यह बात कहकर बतानी नहीं पड़ती। प्रकाश और गर्मी स्वयं इस बात का परिचय देते हैं कि सूर्योदय हो गया। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य धर्मात्मा हो तो उसका परिचय यह कहकर नहीं दिया जा सकता कि वह मनुष्य धर्मात्मा है, क्योंकि उसने सौ बार नाम का जाप किया है, हजार बार गायत्री जपी है एवं वह नित्य धर्म-पुस्तक का पाठ करता है। कोई मनुष्य सचमुच धर्मात्मा है या नहीं इसका पता इस बात से लगता है कि उसके चारों ओर रहनेवालों पर उसके व्यवहार से कोई सुखदायक प्रभाव पड़ता है या नहीं। अपने चारों ओर की अवस्थाओं में परिवर्तन धर्मात्मारूपी सूर्य की धूप है। बस, यदि हम यह जानना चाहें कि हम धर्मात्मा हैं या नहीं, तो हम इसे अपने जाप और पूजापाठ से नहीं नाप सकते। लैम्प में प्रकाश है या नहीं, इसे हम इस बात से नहीं नाप सकते कि उसमें पूरा तेल भरा है या नहीं। लैम्प के प्रकाश का माप केवल इस बात से हो सकता है कि उसके चारों ओर का अन्धकार दूर हुआ है या नहीं। सूर्य बिना तेल-बत्ती के प्रकाशमान है एवं बुझा हुआ दीपक तेल-बत्ती के होते हुए भी प्रकाशहीन है।

इसी प्रकार कई मनुष्य पूजा-पाठ के बिना भी धर्मात्मा हैं, वे सूर्य-वत् हैं और कई मनुष्य पूजा-पाठ करते रहने पर भी धर्महीन हैं वे पाखण्डी हैं। परन्तु साधारण मनुष्यों में लैम्प के समान प्रकाश उत्पन्न करने के लिए पूजा-पाठ रूपी तेल-बत्ती की आवश्यकता रहती है। जो मनुष्य साधारण होते हुए भी पूजा-पाठ तथा सत्संग से हीन है उसका दीया भी बुझा रहता है। यह बात दूसरी है कि उनके दीए बुझने का कारण पाखण्ड का धुंआं नहीं, अभिमान की आंधी है। दीया धुंये से बुझे चाहे आंधी से—इससे उनके प्रकाशहीन होने में कुछ अन्तर नहीं आता। जिस मुहल्ले में तुम रहते हो, यदि उसकी नालियां दुर्गन्धयुक्त हैं और चारों ओर कीचड़ सड़ रहा है, मच्छरों की बस्तियां बस रही हैं, लोग मैले-कुचैले अनपढ़, रोगों के मारे और निर्धनता के सताये हैं और तुम इन अवस्थाओं में परिवर्तन करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हो तो मत समझो तुम धर्मात्मा हो। चाहे तुम कितनी लम्बी समाधि भी लगाते हो, कितना भजन-कीर्तन करते हो, कितने घण्टे-घड़ियाल बजाते हो और कितनी सामग्री फूंक देते हो, तो भी धर्मात्मा नहीं हो। यदि तुम्हारे मन्दिर की आरती ने, तुम्हारी लम्बी संध्याओं ने और तुम्हारी पांच नमाजों ने तुम्हारी आंखों को गरीबों का दुःख देखने के लिए, तुम्हारे कानों को उनकी दर्दभरी आहें सुनने के लिए और तुम्हारे हाथों को उनके कष्ट-निवारण के लिए विवश नहीं किया तो तुम आंख रखते भी अन्धे हो, कान रखते भी बहरे हो, हाथ रखते भी लूले हो। संसार में आज तक जितने भी महात्मा धर्म का प्रचार करने आये, वह इस ही संवेदना की भावना का प्रकाश तुम्हारे दीए-बत्ती में जलाने आये थे। पादरी लोग जब कहते हैं कि मसीह ने अन्धों को आंखें दीं, बहरों को कान दिये, लूले-लंगड़ों को हाथ-पैर दिये, तो वह उस महात्मा के कारनामों को ठीक-रूप में पेश नहीं करते। संसार के सभी महात्माओं ने अन्धों को आंख दी, बहरों को कान दिये, लूले-लंगड़ों को हाथ-पैर दिये। पर इस अभागे संसार ने काम, क्रोध, मोह, लोभ, आलस्य, प्रमाद आदि के घोर विष से अपने आपको अन्धा, बहरा, लूला-लंगड़ा बना डाला।

जिस समय महात्मा पुरुषों की प्रेरणा से जागृत हुई संवेदना की भावना हमें अपने चारों ओर फैली हुई बिगड़ी अवस्था का परिवर्तन करके इस धरती को साफ-सुथरी व आनंदभरी बनाने के लिए कटिबद्ध करती है उस समय हमारी खोई हुई आंखें वापिस मिल जाती हैं, हमारे बहरे कान सुनने लगते हैं और हमारे कटे हाथ-पैर फिर हरे हो जाते हैं। बस, जहां यह अपने चारों ओर की अवस्था को सुखमय दिशा में परिवर्तन करने की प्रबल भावना होती है वहीं धर्म है। यही धर्म का स्वरूप है।

(वेदमार्ग से साभार)

शिक्षण संस्थाओं में वेदप्रचार की योजना

विश्व वेद परिवार संघ ने वेदप्रचार की सशक्त एवं विस्तृत योजना के अन्तर्गत जहां देश के ग्रामों, शहरों में वेदप्रचार केन्द्रों की स्थापना कर अनुकरणीय कार्य किया है वहां शिक्षण संस्थाओं में भी वैदिक सिद्धांतों का प्रचार आरम्भ कर दिया है। इसी श्रृंखला में विश्व वेद परिवार संघ के महामन्त्री श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री की प्रेरणा से श्री करुणाकर जी धर्माचार्य एवं श्री आचार्य यशपाल जी ने अपने विद्यालय डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल बृजबिहार, जिला गाजियाबाद में विश्व वेद परिवार संघ की विधिवत् स्थापना की है। स्कूल के अध्यापकवर्ग और विद्यार्थियों में वेद के प्रति जिज्ञासा तथा निष्ठा का उदय हुआ है। परिणामस्वरूप भविष्य में वेदप्रचार सम्बन्धी कार्यक्रम होते रहने का निश्चय किया गया है।

पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री
मन्त्री विश्ववेद परिवार संघ
ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर ब्रजघाट
गाजियाबाद (उ०प्र०)

इसका न एतबार कर

नाज सोनीपती

आके इस संसार में कुछ रास्ता हमवार कर।
हर किसी के काम आ, और हर किसी से प्यार कर॥
गीत गाकर देशभक्ति के तू जाति को जगा।
अपने सोए भाग्य को बेदार कर, बेदार कर॥
राहें तो बेशुमार हैं, रहजन भी हैं अड़े हुए।
मंजिल पे पहुंच पाए तू वह राह अख्त्यार कर॥
भटक रहा है जाबजा, इधर-उधर यहां-वहां।
उस लामकां के दिल के घर में ही सदा दीदार कर॥
न जाने कब मचल उठे, न जाने कब फिसल पड़े।
यह दिल तो बेलगाम है, इसका ना एतबार कर॥
दुनिया में नाम पाएगा, होगा अमर तू बिलयकी।
राहत नसीब हो तुझे वह काम बार-बार कर॥
होता नहीं है वक्त पर नसीब जो भी चाहे तू।
कि वक्त ऐसा वक्त है, बेवक्त इन्तजार कर॥
ऐ 'नाज' तुझ में जोश है, कुछ होश से भी काम ले।
अपने वतन के वास्ते अब जिन्दगी निसार कर॥

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत का चुनाव

संरक्षक—सर्वश्री हंसराज भुटानी, प्रमोद भगत एडवोकेट, प्रधान—खानचन्द मुञ्जाल, कार्यकर्त्ता प्रधान—गोबिन्दराम आर्य, उपप्रधान—सोमराज आर्य, आसानन्द वधवा, मन्त्री—राजकुमार अरोडा, सह-मन्त्री—जीतकुमार डुडेजा, सुरेशकुमार बत्रा, प्रचारमन्त्री—बलबीरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—ब्रह्मदत्त नारंग, सह-कोषाध्यक्ष—सूरजप्रकाश तनेजा।

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द विद्यालय रोहतक का चुनाव

प्रधान सर्वश्री ओमप्रकाश वर्मा, उपप्रधान—चौ० वजीरसिंह गुलिया, मन्त्री—आचार्या सुमित्रा वर्मा, उपमन्त्री—पुष्पादेवी, कोषाध्यक्ष—बलराज शास्त्री, प्रचारमन्त्री—गीता रानी।

शोक समाचार

सभा के पूर्व आशुलिपिक श्री रामपाल प्रभाकर के पिता श्री खुशीराम निवासी डेहरी मोहल्ला, रोहतक का आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक १६ दिसम्बर, ९१ को ५३ वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से होगया। परमपिता परमात्मा शोक संतप्त परिवार को शान्ति एवं दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य

हिन्दी को मातृभाषा का दर्जा मिले : गिरिजा व्यास

जयपुर, १५ दिसम्बर (एजेंसी)। केन्द्रीय सूचना तथा प्रसारण उपमन्त्री गिरिजा व्यास ने हिन्दी को राजभाषा के बजाये मातृभाषा का दर्जा दिये जाने पर जोर दिया है।

सुश्री व्यास ने आज यहां तीसरे अखिल भारतीय बैंक राजभाषा सम्मेलन के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए सवालिया अदाज में कहा कि हिन्दी को हमने राजभाषा का दर्जा दिया, मातृभाषा का दर्जा क्यों नहीं दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी ऐसी द्रौपदी की तरह है जिस पर राजेनाओं, अफसरशाही तथा अन्य सभी ने वार किये हैं। डा० व्यास ने कहा कि आज जरूरत इस बात की है कि हम हिन्दी को राजभाषा के स्थान से उठाकर अपने दिलों में जगह दे और इसे मातृभाषा के रूप में अपनाये।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में आई रुकावटों का विस्तृत ब्यौरा देते हुए केन्द्रीय उपमन्त्री ने जहां तथाकथित बुद्धिजीवियों को आड़े हाथ लिया, वहीं ऐसे सम्मेलनों के आयोजकों को आमजनता के करीब जाने की सलाह भी दी। उन्होंने कहा कि आज हमारे बुद्धिजीवियों को भी अंग्रेजी में सोचने का अन्दाज बदल कर अपनी भाषा में चिंतन करने की आदत डालने की आवश्यकता है। बुद्धिजीवियों के इस रवैये का काफी खामियाजा हमने उठाया है।

उन्होंने राजभाषा हिन्दी के प्रचलन में आगे आने के लिए जहां समूचे बैंकिंग क्षेत्र की सराहना की, वहीं इस बात को ठीक नहीं माना कि ऐसे सम्मेलन पांच सितारा होटलों के बजाये ऐसे सम्मेलन गावों और ढाणियों में लोगों के बीच होंगे तो ज्यादा श्रेयस्कर होंगे।

इस अवसर पर केन्द्रीय कपड़ा राज्यमन्त्री अशोक गहलोत ने आतंकवाद और अलगाववाद जैसी राष्ट्रीय समस्याओं के हल के लिए देश में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने पर जोर दिया है।

श्री गहलोत ने कहा कि मौजूदा हालातों में जबकि देश के अनेक हिस्से में धर्म, जाति और भाषा के नाम पर अलगाववाद, आतंकवाद पैदा करने की कोशिश की जा रही है, सिर्फ हिन्दी ही सारे देश को एक सूत्र में बांधे रख सकती है। श्री गहलोत ने कहा कि हिन्दी का देश के किसी भी हिस्से में कहीं विरोध नहीं है।

केन्द्रीय कपड़ा राज्यमन्त्री ने हिन्दी को जनांदोलन का रूप देने पर जोर देते हुए कहा कि केवल सरकार के बूते ही इसका प्रसार हो पाना सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा कि सभी सरकार तो समन्वित प्रयास कर ही, साथ ही आम जनता को भी उसमें भागीदार बनना चाहिए। इस संदर्भ में श्री गहलोत ने त्रिभाषा फार्मूले को अपनाने पर जोर दिया ताकि क्षेत्रीय असन्तोष कम हो।

साभार : नवभारत टाइम्स

नौसेना में महिलाओं की भर्ती को स्वीकृति

नई दिल्ली (रस) रक्षामन्त्री श्री शरद पवार ने कहा है कि सरकार ने हाल में नौसेना के शिक्षा, भण्डारण और कानून विभागों में अधिकारी स्तर पर महिलाओं की भर्ती के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी है।

सरकार ने वायुसेना के गैरतकनीकी दफ्तरी शाखाओं जैसे प्रशासन, भण्डारण, वित्त, शिक्षा और मौसम विभागों में भी अधिकारी स्तर पर महिलाओं की भर्ती को स्वीकृति दे दी है। राज्य सभा में एक लिखित जवाब में रक्षामन्त्री ने कहा कि थलसेना में भी इसी तरह महिलाओं की भर्ती के प्रस्ताव विचाराधीन हैं।

साभार . दैनिक नवभारत

भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु अपील

आशा है आपको दैनिक समाचार-पत्रों, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा ज्ञात होगया है कि गढ़वाल तथा उत्तरकाशी में आये भयंकर भूकम्प से लाखों नर-नारी बेघर होगये हैं। हजारों नर-नारी मौत के मुंह में चले गये हैं और अब सर्दी के दिनों में आकाश के नीचे अपना संकटपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अनेक प्रकार के रोग फैल रहे हैं। ऐसी भयंकर तथा दयनीय स्थिति में हम सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि अपने नगर तथा ग्राम से इन भूकम्प पीड़ित भाइयों के लिए धन तथा गर्म वस्त्र आदि संग्रह करके अपनी सुविधा के अनुसार सभा के मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक, उप-कार्यालय गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद या महर्षि दयानन्द वैदिकधाम पेहवा मार्ग कुरुक्षेत्र के पते पर भेजकर प्राप्ति की रसीद प्राप्त कर लेवे।

सभा की ओर से संग्रहीत धनराशि तथा वस्त्र आदि यथास्थान हरयाणा की जनता की ओर से सामूहिक रूप में भेजी जावेगी और दानदाताओं के नाम सभा के साप्ताहिक पत्र 'सर्वहितकारी' में प्रकाशित किये जावेंगे।

आशा है हरयाणा के आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षण संस्थाएं उदारतापूर्वक धन तथा वस्त्र आदि संग्रह करके यथाशीघ्र सभा को भेजकर संगठन का परिचय देवेंगे।

निवेदक :—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	सूबेसिंह	रामानन्द
परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

बारात बैरंग लौटी

—नीरद कौशिक

फरीदाबाद, १६ दिसम्बर। पंजाब के फिरोजपुर शहर से आई एक बारात के दुल्हे के नशे में धुत्त होने के कारण बिना दुल्हन लिये ही बैरंग वापिस लौटना पड़ा।

हुआ यह कि गत दिवस सैक्टर-२१ में रहनेवाले चिमनलाल की लड़की का विवाह था। बारात पंजाब के फिरोजपुर शहर से आई थी। पंजाबी परम्परा के अनुसार पहले चुन्नी की रस्म अदा की गई। इस रस्म के बाद बारात दुल्हन के यहां फेरों के लिए चलने लगी तो दुल्हा (जो घोड़ी पर बैठा था) नशे की अधिकता से घोड़ी से नीचे गिर पड़ा। बताया जाता है कि उस वक्त दुल्हे मियां ने अत्यधिक नशा किया हुआ था।

दुल्हे को किसी तरह दुबारा घोड़ी पर बैठाया गया। बारात दुल्हन के घर पहुंची तो नशे में धुत होने से दुल्हा घोड़ी से उतर ही नहीं सकता था। तीन-चार आदमियों ने मिलकर दुल्हे मियां को नीचे उतारा तो दुल्हा लड़खड़ाकर फिर गिर पड़ा। कन्या पक्ष को इस बात का पता चला तो वहां बखेड़ा होगया। लड़की के पिता ने ऐसे नशेड़ी लड़के के साथ अपनी लड़की का विवाह करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया।

लड़की के पिता चिमनलाल ने तुरन्त अपनी पंजाबी बिरादरी की पंचायत इकट्ठी करली। पंचायत ने भी लड़की के पिता का समर्थन किया तो लड़के वाले गिड़गड़ाने लगे कि हमारी तो नाक ही कट जायेगी। बाद में लड़की ने स्वयं भी ऐसे नशेबाज लड़के से शादी करने से इन्कार कर दिया। लड़का स्मैक के नशे का आदी बताया जाता है। इस तरह दुल्हे के नशेड़ीपन ने बारात को बिना शादी किये ही बैरंग लौटा दिया

साभार : जनसन्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।